सहजानंद शास्त्रमाला

लघु कर्मस्थान चर्चा

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

http://sahjanandvarnishastra.org/

लघु कर्मस्थान चर्चा

अध्यात्म योगी
पूज्य गुरुवर श्री मनोहरजी
वर्णी "सहजानन्द" जी महाराज

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

भारतवर्षीय दि० जैन आत्मविज्ञान परीक्षा बोर्ड

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षु० मनोहर जी वर्णी
सहजानन्द महाराज द्वारा विरचित

लघु कर्म स्थान चर्चा

कर्मस्थानचर्चामें वर्णनीय कर्मप्रकृतियोंका संक्षिप्त निर्देशन—

कर्म :—जीवके रागादि विभावोंका निमित्त पाकर कर्मरूपसे परिणत हुए बद्ध कार्माण वर्गणाओंको कर्म कहते हैं।

कर्म मूलमें २ प्रकारके हैं—(१) घातिया कर्म (२) अघातिया कर्म।

(१) **घातिया कर्म** :—जो कर्म आत्माके ज्ञानादि अनुजीवीगुणों के घातनेमें निमित्त हो उन्हे घातिया कर्म कहते हैं।

अनुजीवी गुण :—भावात्मक गुणोंको अनुजीवी गुण कहते हैं। इन गुणोंके अविभाग प्रतिच्छेद होते हैं। ये गुण कम या अधिक नाना प्रकारके स्थानोंमें विकसित हो सकते हैं। जैसे :—ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र, शक्ति।

(२) **अघातिया कर्म** :—जो कर्म जीवके अनुजीवी गुणोंका तो घात न करें और केवल प्रतिजीवी गुणोंका विकास रुकने में निमित्त हों उन्हे अघातिया कर्म कहते हैं।

प्रतिजीवी गुण :—अभावात्मक धर्मोंको प्रतिजीवी गुण कहते हैं। इन गुणोंके अविभाग प्रतिच्छेद नहीं होते। जैसे—अगुरुलघुत्व, सूक्ष्मत्व, अवगाहना, अव्याबाध।

घातिया कर्मके भेद :—घातिया कर्मके चार भेद हैं। (१) ज्ञानावरण (२) दर्शनावरण (३) मोहनीय (४) अन्तराय।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

ज्ञानावरण कर्म :—जो कर्म आत्माके ज्ञान गुणको प्रकट न होने दे अर्थात् ज्ञान गुणके अविकासमें जो निमित्त हो उसे ज्ञानावरण कर्म कहते हैं ज्ञानावरणकर्मके ५ प्रकार है :—(१) मतिज्ञानावरण (२) श्रुतज्ञानावरण (३) अवधिज्ञानावरण (४) मन:पर्ययज्ञानावरण (५) केवलज्ञानावरण ।

मतिज्ञानावरण कर्म :—जिस कर्मके उदयका निमित्त पाकर मतिज्ञान प्रकट न हो उसे मतिज्ञानावरण कर्म कहते हैं।

श्रुतज्ञानावरण कर्म :—जो श्रुतज्ञानको प्रकट न होने दे उसे श्रुतज्ञानावरण कहते हैं।

अवधिज्ञानावरण कर्म :—जो अवधिज्ञानका आवरण करे उस कर्म को अवधिज्ञानावरण कर्म कहते हैं।

मन:पर्ययज्ञानावरण कर्म :—जो कर्म मन:पर्ययज्ञानको प्रकठ न होने दे उसे मन:पर्ययज्ञानावरण कर्म कहते हैं।

केवलज्ञानावरण कर्म :—जो कर्म केवलज्ञानको प्रकट न होने दे उसे केवलज्ञानावरण कर्म कहते हैं।

दर्शनावरण कर्म :—जो आत्माके दर्शन गुणका विकास न होने दें उसे दर्शनावरण कर्म कहते हैं। दर्शनावरणके ९ भेद हैं–(१) चक्षुर्दर्शनावरण (२) अचक्षुर्दशनावरण (३) अवधिदर्शनावरण (४) केवलदर्शनावरण (५) निद्रा (६) निद्रानिद्रा (७) प्रचला (८) प्रचलाप्रचला (९) स्त्यानगृद्धि ।

चक्षुर्दर्शनावरण :—जो कर्म चक्षुदर्शनको न होने दे उसे चक्षुर्दर्शनावरण कम कहते हैं।

अचक्षुर्दर्शनावरण :—जो कर्म अचक्षुदर्शन न होने दे उसे अचक्षुदर्शनावरण कर्म कहते हे ।

अवधिदर्शनावरण :—जो कर्म अवधिदर्शन न होने दे उसे अवधिदर्शनावरण कहते हैं।

केवलदर्शनावरण—जो कर्म केवलदर्शनको प्रकट न होने दे उसे केवलदर्शनावरण कर्म कहते हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

निद्रा दर्शनावरण :–जिस कर्मके उदयसे साधारण नींद आवे जहां दर्शन अथवा स्वसंवेदन न हो सके उस कर्मको निद्रादर्शनावरण कर्म कहते हैं।

निद्रा निद्रा दर्शनावरण :—जिस कर्मके उदयसे गाढ़ निद्रा आवे, बीचमें जगकर भी पुनः सो जावे जिसमें दर्शन अथवा स्वसंवेदन न हो सके उसे निद्रानिद्रा दर्शनावरण कर्म कहते हैं।

प्रचला दर्शनावरण :–जिस कर्मके उदयसे अर्धनिद्रितसा सोवे जिससे दर्शनगुणका उपयोग न हो सके उसे प्रचला दर्शनावरण कर्म कहते हैं।

प्रचलाप्रचला दर्शनावरण :–जिस कर्मके उदयसे ऐसी निद्रा आवे जहां अंग-उपांग चले, दाँत किटकिटाये, मुंहसे लार बहे आदि, जिससे दर्शनोपयोग न हो उसे प्रचलाप्रचला दर्शनावरण कर्म कहते हैं।

स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण :—जिस कर्मके उदयसे ऐसी निद्रा आवे कि निद्रामें ही उठकर कोई बड़ा काम कर आवे और जागनेपर यह मालूम भी न हो उसे स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म कहते हैं।

मोहनीय कर्म :–जिस कर्मके उदयसे अन्य तत्त्वोंमें मोहित हो जाय अपने शुद्ध स्वरूपका भान न कर सके और न स्वरूपमें स्थिर हो सके उसे मोहनीय कर्म कहते हैं। मोहनीय कर्मके मूलमें दो भेद हैं —(१) दर्शन-मोहनीय (२) चारित्रमोहनीय। दर्शनमोहनीयके तीन भेद हैं-(१)मिथ्यात्व (२) सम्यग्मिथ्यात्व (३) सम्यक्प्रकृति।

चारित्रमोहनीयके पच्चीस भेद हैं —१६ कषायवेदक मोहनीय और ९ नोकषायवेदक मोहनीय।

कषायवेदकमोहनीयके १६ भेद इस प्रकार हैं —(१) अनन्तानुबन्धी क्रोधवेदक मोहनीय (२) अनन्तानुबन्धीमाया वेदक मोहनीय (३) अनन्तानुबन्धी मायावेदक मोहनीय (४) अनन्तानुबन्धी लोभ वेदक मोहनीय (५) अप्रत्याख्यानावरण क्रोधवेदक मोहनीय (६) अप्रत्याख्यानावरण मान वेदक मोहनीय (७) अप्रत्याख्यानावरण माया वेदक मोहनीय (८) अप्रत्याख्या-

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

नावरण लोभ वेदक मोहनीय (९) प्रत्याख्यानावरण क्रोधवेदक मोहनीय (१०) प्रत्याख्यानावरण मान वेदक मोहनीय (११)प्रत्याख्यानावरण माया वेदक मोहनीय (१२)प्रत्याख्यानावरण लोभवेदक मोहनीय (१३) संज्वलन क्रोध वेदक मोहनीय (१४) संज्वलन मान वेदक मोहनीय (१५) संज्वलन माया वेदक मोहनीय (१६) संज्वलन लोभवेदक मोहनीय।

नौकषायवेदक मोहनीय कर्मके ९ प्रकार इस तरह हैं—

(१) हास्य वेदक मोहनीय (२)रतिवेदक मोहनीय (३) अरतिवेदक मोहनीय (४) शोकवेदक मोहनीय (५) भयवेदक मोहनीय (६) जुगुप्सा-वेदक मोहनीय (७) पुंवेद मोहनीय (८) स्त्रीवेद मोहनीय (९) नपुंसक वेद मोहनीय।

मिथ्यात्व मोहनीय कर्म—जिस कर्मके उदयको निमित्त पाकर आत्मा यथार्थ श्रद्धान न कर सके उसे मिथ्यात्व मोहनीय कर्म कहते हैं। इस कर्मके उदयसे जीव शुद्ध निज स्वरूपका प्रत्यय नहीं कर सकता व शरीर आदिमें आत्मबुद्धि करता है।

सम्यग्मिथ्यात्व मोहनीय कर्म जिस कर्मके उदयसे जीवके न तो केवल सम्यक्त्वरूप परिणाम हों और न केवल मिथ्यात्वरूप परिणाम हों किन्तु मिले हुए हों उस कर्मको सम्यग्मिथ्यात्व मोहनीय कर्म कहते है।

सम्यक्प्रकृति मोहनीय कर्म:—जिस कर्मके उदयसे आत्माके सम्यग्दर्शन में चल, मलिन, अगाढ़ दोष उत्पन्न हों उसे सम्यक्प्रकृति मोहनीय कर्म कहते हैं। इस कर्मके उदयमें सम्यग्दर्शन का घात नहीं होता। ये चल, मलिन, अगाढ़ दोष भी अत्यन्त सूक्ष्मरूप दोष हैं।

अनन्तानुबन्धी क्रोध वेदक मोहनीय कर्म:—जिस कर्मके उदय से पाषाणरेखा सदृश दीर्घकालतक न मिटनेवाले ऐसे क्रोध का वेदन हो जिससे मिथ्यात्व पुष्ट होता चला जावे उस कर्मको अनन्तानुबन्धी क्रोधवेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

अनन्तानुबन्धी मानवेदक मोहनीय कर्म:—जिस कर्मके उदयसे

Report any errors at vikasnd@gmail.com

पाषाणकी कठोरता सदृश दीर्घकालतक न नमनेवाले मानका वेदन हो जिससे मिथ्यात्व पुष्ट होता रहे उसको अनन्तानुबन्धी मानवेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

अनन्तानुबन्धी मायावेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदय से बाँसकी जड़की तरह अत्यन्त वक्र माया (छल, कपट) का परिणमन हो जिससे मिथ्यात्व पुष्ट होता रहे उसको अनन्तानुबन्धी माया वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

अनन्तानुबन्धी लोभ वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदय से हिरमिजीके रंगकी तरह दीर्घकालतक न छूटने वाली तृष्णाका वेदन हो जिससे मिथ्यात्व पुष्ट होता रहे उसे अनन्तानुबन्धी लोभ वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

अप्रत्याख्यानावरण क्रोध वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे हलरेखा सदृश (पृथ्वीमें हलके चलनेसे होने वाले गड्डे की तरह) कुछ बहुत कालतक न मिटनेवाले क्रोधका वेदन हो जिससे संयमासंयम प्रकट नहीं हो सकता उसको अप्रत्याख्यानावरण क्रोध वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

अप्रत्याख्यानावरण मान वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे हड्डी की तरह कुछ कठिनतासे मुड़नेवाले मानका वेदन हो जिससे संयमासंयम प्रकट नहीं हो सकता उसको अप्रत्याख्यानावरण मान वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

अप्रत्याख्यानावरण माया वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे मेढ़ाके सींगकी कुटिलताकी तरह वक्र मायाका वेदन करे जिससे संयमासंयम प्रकट नहीं हो सकता उसे अप्रत्याख्यानावरण माया वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

अप्रत्याख्यानावरण लोभ वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे चकेके ओंगनके रंगकी रंगाईकी तरह कुछ बहुत काल तक न छूटने

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

वाली तृष्णाका वेदन हो जिससे संयमासंयम प्रकट नहीं हो सकता उसे अप्रत्याख्यानावरण लोभ वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

प्रत्याख्यानावरण क्रोध वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे धूलि रेखा याने गाड़ीके चक्केकी लकीरके सदृश अल्पकालतक ही न मिटनेवाले क्रोधका वेदन हो जिससे सकलसंयम प्रकट नहीं हो सकता उसे प्रत्याख्यानावरण क्रोध वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

प्रत्याख्यानावरण मान वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे लकड़ी याने काष्ठदण्डकी तरह कुछ शीघ्र मुड़ जानेवाले मानका वेदन हो जिससे सकलसयम प्रकट नहीं हो सकता उसे प्रत्याख्यानावरण मान वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

प्रत्याख्यानावरण माया वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे गोमूत्रकी तरह अल्पवक्ररूप मायाका वेदन हो जिससे सकलसयम प्रकट नहीं हो सकता उसे प्रत्याख्यानावरण माया वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

प्रत्याख्यानावरण लोभ वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीर पर लगे हुए मलकी तरह अल्प प्रयत्नसे छूट सकने वाली तृष्णाका वेदन हो जिससे सकलसंयम प्रकट नहीं हो सकता उसे प्रत्याख्यानावरण लोभ वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

संज्वलनक्रोध वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जल रेखा सदृश शीघ्र मिट जानेवाले क्रोधका वेदन हो जिससे यथाख्यात चारित्र प्रकट नहीं हो सकता उसे संज्वलन क्रोध वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

संज्वलन मान वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदय से बेत की पतली छड़ोकी तरह शीघ्र नम सके ऐसे मानका वेदन हो जिससे यथाख्यात चारित्र प्रकट नहीं हो सकता उसे सज्वलन मान वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

संज्वलन माया वेदक मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

चमरी गौके केशोंकी तरह अत्यल्प वक्रता वाले माया कषायका वेदन हो जिससे यथाख्यात चारित्र प्रकट नहीं हो सकता उसे संज्वलन माया वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

संज्वलन लोभ वेदक मोहनीय कर्म :–जिस कर्मके उदयसे हल्दी के रंगकी तरह शीघ्र नष्ट हो जाने वाली तृष्णाका वेदन हो जिससे यथा-ख्यात चारित्र प्रकट नहीं हो सकता उसे संज्वलन लोभ वेदक मोहनीय कर्म कहते हैं।

हास्यवेदनीय मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदय होने पर हास्य जनक राग हो उसे हास्य वेदनीय मोहनीय कर्म कहते हैं।

रतिवेदनीय मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे इष्ट विषयोंमें रमण हो उसे रतिवेदनीय मोहनीय कर्म कहते हैं।

अरतिवेदनीय मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे अनिष्ट विषयोंमें अरुचि हो उसे अरति वेदनीय मोहनीय कर्म कहते हैं।

शोकवेदनीय मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवके विषाद उत्पन्न हो उसे शोकवेदनीय मोहनीय कर्म कहते हैं।

भयवेदनीय मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवके भय उत्पन्न हो उसे भयवेदनीय मोहनीय कर्म कहते हैं।

जुगुप्सा वेदनीय मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवके ग्लानि उत्पन्न हो उसे जुगुप्सा वेदनीय मोहनीय कर्म कहते हैं।

पुंवेद मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे महान् कर्तव्योंमें वृत्ति स्त्रीरमणाभिलाषा आदि पौरुष भाव हो उसे पुंवेद मोहनीय कर्म कहते हैं।

स्त्रीवेद मोहनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे कोमलांगता, नेत्र-विभ्रम, मुख फुलाना, पुरुष-रमणेच्छा आदि स्त्रैण भाव हों उसे स्त्रीवेद मोहनीय कर्म कहते हैं।

नपुंसकवेद मोहनीय कर्म :–जिस कर्मके उदयसे स्त्री-पुरुष दोनों से रमनेकी इच्छा, कामाग्निकी प्रबलता, कायरता आदि क्लैव भाव उत्पन्न

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

हों उसे नपुंसकवेद मोहनीय कर्म कहते हैं।

अन्तराय कर्म :—जो कर्म दोके बीचमें अन्तरको उत्पन्न करने में निमित्त हो उसे अन्तराय कर्म कहते हैं। अन्तराय शब्द का अर्थ यही हैं कि जो अन्तरका आय याने उत्पाद करे सो अन्तराय। अर्थात् जो जीवके दान लाभ आदिमें विघ्न होनेमें निमित्त हो उसे अन्तराय कर्म कहते हैं। अन्तरायकर्मके ५ भेद हैं —(१) दानान्तराय (२) लाभान्तराय (३) भोगान्तराय (४) उपभोगान्तराय (५) वीर्यान्तराय।

दानान्तराय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे दान देते हुए जीवके दानमें विघ्न उपस्थित हो उसे दानान्तराय कर्म कहते हैं।

लाभान्तराय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवके लाभमें विघ्न हो उसे लाभान्तराय कर्म कहते हैं।

भोगान्तराय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवके भोगमें विघ्न उपस्थित हो उसे भोगान्तराय कर्म कहते हैं।

उपभोगान्तराय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवके उपभोगमें विघ्न आवे उसे उपभोगान्तराय कर्म कहते हैं।

वीर्यान्तराय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवके शक्तिके विकास में विघ्न हो उसे वीर्यान्तराय कर्म कहते हैं।

अघातिया कर्म के भेद :—अघातिया कर्मके ४ भेद हैं :—

(१) वेदनीय (२) आयुकर्म (३) नामकर्म (४) गोत्रकर्म।

वेदनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीव इन्द्रिय व मनके विषयों का भोगरूप वेदन करे उसे वेदनीय कर्म कहते हैं। वेदनीय कर्मके २ भेद हैं :—(१) साता वेदनीय (२) असाता वेदनीय।

सातावेदनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीव सुखका वेदन करे उसे सातावेदनीय कर्म कहते हैं।

असातावेदनीय कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीव दुःखका वेदन करे उसे असातावेदनीय कर्म कहते हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

आयु कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवन अवस्था हो और अभावसे मरण अवस्था हो उसे आयुकर्म कहते हैं। आयुकर्मके ४ भेद हैं:—(१) नरकायु (२) तिर्यगायु (३) मनुष्यायु (४) देवायु।

नरकायु कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवका नरकभवमें अवस्थान हो उसे नरकायु कर्म कहते हैं।

तिर्यगायु कर्म :—जिस कर्मके उदयसे आत्माका तिर्यंचभवमें अवस्थान हो उसे तिर्यगायु कहते हैं।

मनुष्यायु कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवका मनुष्यभवमें अवस्थान हो उसे मनुष्यायु कर्म कहते हैं।

देवायु कर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवका देवभवमें अवस्थान हो उसे देवायु कर्म कहते हैं।

नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे नाना प्रकार शरीर सम्बन्धी रचना हो उसे नामकर्म कहते हैं। नामकर्मके ९९ भेद हैं—गतिनामकर्म ४, (नरक तिर्यञ्च, मनुष्य, देव)। जातिनामकर्म ५, (एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय)। शरीर नामकर्म ५, (औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण)। बन्धन नामकर्म ५, (औदारिक, वैक्रियक, आहारक तैजस, कार्माण)। संघात नामकर्म ५, (औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्माण)। अंगोपांग नामकर्म ३ (औदारिक, वैक्रियक, आहारक)। सस्थान ६ (समचतुरस्र, न्यग्रोधपरिमण्डल, स्वाति, वामन, कुब्जक, हुडक)। संहनन ६ (वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलक असम्प्राप्तसृपाटिका संहनन)। वर्ण ५ (कृष्ण, नील, रक्त, पीत, श्वेत)। गन्ध २ (सुरभि, दुरभि)। रस ५ (मधुर, आम्ल, तिक्त, कटुक, कषायिल)। स्पर्श ८ (स्निग्ध, रूक्ष, शीत, उष्ण, गुरु, लघु, मृदु, कठोर,। आनुपूर्व्य ४ (नरकगत्यानुपूर्व्य, तिर्यंचगत्यानुपूर्व्य, मनुष्यगत्यानुपूर्व्या, देवगत्यानुपूर्व्या)। अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, विहायोगति २ (प्रशस्त विहायोगति, अप्रशस्त विहायोगति)। त्रस, बादर, पर्याप्ति, प्रत्येक शरीर,

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यश: कीर्ति, निर्माण, तीर्थंकर, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्ति, साधारण शरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दु:स्वर, अनादेय, अयश कीर्ति ।

नरकगतिनाम कर्म :—जिस नामकर्मके उदयसे नरकभवके योग्य परिणाम हों, जिस भावमें रहने पर नरकमें उदय आने योग्य कर्मोंका उदय होता है उसको नरकगति नामकर्म कहते हैं ।

तिर्यग्गतिनाम कर्म :—जिस नामकर्मके उदयसे तिर्यग्भवके योग्य परिणाम हों जिस भावमें रहने पर तिर्यञ्चमें उदय आने योग्य कर्मोंका उदय होता रहता हैं उसे तिर्यग्गतिनामकर्म कहते हैं ।

मनुष्यगति नामकर्म :—जिस नामकर्मके उदयसे मनुष्यभवके योग्य परिणाम हों जिस भावमें रहने पर मनुष्यमें उदय आने योग्य कर्मोंका उदय होता रहता है उसे मनुष्यगति नामकर्म कहते हैं ।

देवगतिनाम कर्म :—जिस नामकर्मके उदयसे देवभवके योग्य परिणाम हों जिस भावमें रहने पर देवमें उदय आनेके योग्य कर्मोंका उदय होता रहता है उसे देवगति-नामकर्म कहते हैं ।

जातिनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे प्राणियोंके सदृशता उत्पन्न हो उसे जातिनामकर्म कहते हैं ।

एकेन्द्रियजातिनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे केवल स्पर्शनज्ञानेन्द्रय वाला जीवन मिले उसे एकेन्द्रिय जातिनामकर्म कहते हैं ।

द्वीन्द्रियजातिनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे स्पर्शन और रसना और इन दो इन्द्रियवाला जीवन मिले उसे द्वीन्द्रियजातिनामकर्म कहते हैं ।

त्रीन्द्रियजातिनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे स्पर्शन, रसना व घ्राण इन तीन इन्द्रियवाला जीवन मिले उसे त्रीन्द्रियजातिनामकर्म कहते हैं ।

चतुरिन्द्रिजातिनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु इन चार इन्द्रियवाला जीवन मिले उसे चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्म कहते हैं ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

पंचेन्द्रियजातिनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे स्पर्श रसना, घ्राण चक्षु और श्रोत्र इन पाँचों इन्द्रियवाला जीवन मिले उसे पञ्चेन्द्रिय जाति-नामकर्म कहते हैं।

शरीरनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरकी रचना हो उसे शरीरनामकर्म कहते हैं।

औदारिक शरीरनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे औदारिक नामक आहारवर्गणाके पुद्गलस्कन्ध शरीररूप परिणत होते हुये जीवके साथ सम्बद्ध हो उसे औदारिक शरीरनामकर्म कहते हैं।

वैक्रियक शरीरनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे वैक्रियक नामक आहारवर्गणाके पुद्गलस्कन्ध शरीररूप परिणत होते हुये जीवके साथ सम्बद्ध हों उसे वैक्रियक शरीरनामकर्म कहते हैं।

आहारक शरीर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे आहारक नामक आहारवर्गणाके पुद्गलस्कन्ध शरीररूप परिणत होते हुये जीवके साथ सम्बद्ध हों उसे आहारक शरीरनामकर्म कहते हैं।

तैजस शरीर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे तैजसवर्गणाके पुद्गलस्कन्ध शरीररूप परिणत होते हुये जीवके साथ सम्बद्ध हों उसे तैजस शरीरनामकर्म कहते हैं।

कार्माण शरीरनामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे कार्माणवर्गणाके पुद्गलस्कन्ध कर्मरूप परिणत होते हुये जीवके साथ सम्बद्ध हों उसे कार्माण शरीरनामकर्म कहते हैं।

अंगोपाँग नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरके अंग और उपांगोंकी निष्पत्ति होती है उसे अंगापाग नामकर्म कहते हैं।

अंग ८ :—(१) दक्षिणपाद (२) वामपाद (३) दक्षिणहस्त (४) वाम हस्त (५) नितम्ब (६) पीठ (७) हृदय (८) मस्तक।

उपांग अनेक :—कपाल, ललाट, कान, नाक, ओंठ, अंगुलि, ठोड़ी, आदि।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

औदारिक शरीर अंगोपाँग नाम कर्म :—जिस कर्मके उदयसे औदारिक शरीरके अग और उपाँगोंकी रचना हो उसे औदारिक शरीर अंगोपांग नामकर्म कहते हैं।

वैक्रियक शरीर अंगोपाँग नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे वैक्रियक शरीरके अंगोपांगकी रचना हो उसे वैक्रियक शरीर अंगोपाँग नामकर्म कहते हैं।

आहारक शरीर अंगोपाँग नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे आहारक शरीरके अग और उपांगोंकी रचना हो उसे आहारक शरीर अंगोपाँग नामकर्म कहते हैं।

निर्माण नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे अंग उपांगोंकी यथायोग्य ठीक ठीक प्रमाणसे और ठीक ठाक स्थानपर निष्पत्ति हो उसे निर्माण नाम कर्म कहते हैं।

बन्धन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवसम्बद्ध वर्तमान पुद्गल स्कन्धोंके साथ शरीररूप परिणत होने वाले पुद्गल स्कन्धोंका परस्पर बन्धन हो उसे बन्धन नामकर्म कहते हैं।

औदारिक शरीर बन्धन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीव सम्बद्ध वर्तमान पुद्गल स्कन्धोके साथ औदारिक शरीररूप परिणत हुये पुद्गल स्कन्धोंका परस्पर बन्धन हो उसे औदारिक शरीर बन्धन नाम कर्म कहते हैं।

वैक्रियक शरीर बन्धन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीव-सम्बद्ध वर्तमान पुद्गल स्कन्धोंके साथ वैक्रियक शरीररूप परिणत हुए पुद्गल स्कन्धोंका परस्पर बन्धन हो उसे वैक्रियक शरीर बन्धन नामकर्म कहते हैं।

आहारक शरीर बन्धन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे आहारक शरीररूप परिणत हुये पुद्गल स्कन्धोंका जीवसम्बद्ध पुद्गलस्कन्धोंके साथ परस्पर बन्धन हो उसे आहारक शरीर बन्धन नामकर्म कहते हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

तैजस शरीर बन्धन नाम कर्म :—जिस कर्मके उदयसे तैजस-शरीररूप परिणत हुए पुद्गल स्कन्धोंका जीवसम्बद्ध पुद्गल स्कन्धोंके साथ परस्पर बन्धन हो उसे तैजस शरीर बन्धन नाम कर्म कहते हैं।

कार्माण शरीर बन्धन नाम कर्म :—जिस कर्मके उदयसे कार्माण शरीररूप परिणत हुए पुद्गल स्कन्धोंका जीवसम्बद्ध पुद्गल स्कन्धके साथ परस्पर बन्धन हो उसे कार्माण शरीर बन्धन नामकर्म कहते हैं।

संघात नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे बद्ध शरीर स्कन्धोंका परस्पर छिद्ररहित सश्लेष हो उसे संघात नामकर्म कहते हैं।

औदारिक शरीर संघात नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे बद्ध औदारिक शरीर स्कन्धोंका परस्पर छिद्ररहित संश्लेष हो उसे औदारिक शरीर संघात नामकर्म कहते हैं।

वैक्रियक शरीर संघात नाम कर्म :—जिस कर्मके उदयसे बद्ध वैक्रियक शरीर स्कन्धोंका परस्पर छिद्ररहित संश्लेष हो उसे वैक्रियक शरीर संघात नाम कर्म कहते हैं।

आहारक शरीर संघात नाम कर्म :—जिस कर्मके उदयसे बद्ध आहारक शरीर स्कन्धोंका परस्पर छिद्ररहित संश्लेष हो उसे आहारक शरीर संघात नामकर्म कहते हैं।

तैजस शरीर संघात नामकर्म :—जिस कमके उदयसे बद्ध तैजस शरीर स्कन्धोंका परस्पर छिद्ररहित सश्लेष हो उसे तैजस शरीर संघात नामकर्म कहते हैं।

कार्माण शरीर संघात नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे बद्ध कार्माण शरीर स्कन्धोंका परस्पर छिद्र रहित संश्लेष हो उसे कार्माण शरीर संघात नामकर्म कहते हैं।

संस्थान नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरका आकार बनता है उसे संस्थान नाम कर्म कहते हैं।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीर बिल्कुल

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सुडौल बने उसे समचतुरस्र संस्थान नाम कर्म कहते हैं।

न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान नाम कर्म :—जिस कर्मके उदयसे बड़के पेड़के आकारकी तरह शरीरका नीचेका भाग छोटा और ऊपरका भाग बड़ा हो उसे न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान नाम कर्म कहते हैं।

स्वाति संस्थान नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरका आकार स्वाति (वामी) के आकार का बने याने नीचे का भाग छोटा और ऊपर का लम्बा बने उसे स्वाति संस्थान नामकर्म कहते हैं।

वामनसंस्थान नामकर्म :—जिसकर्मके उदयसे शरीरका आकार बौना हो उसे वामन संस्थान नामकर्म कहते है।

कुब्जक संस्थान नामकर्म :—जिसकर्मके उदयसे शरीरका आकार कुबड़ा हो उसे कुब्जक संस्थान नामकर्म कहते हैं।

हुंडक संस्थान नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरका आकार कई प्रकारका या विचित्र अथवा अटपटा हो उसे हुंडक सस्थान नामकर्म कहते हैं।

संहनन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें हड्डियों और हड्डियोंके संधियों याने बन्धन विशेषोंकी रचना होती हैं उसे संहनन नाम कर्म कहते हैं।

वज्रवृषभनाराच संहनन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे वज्रके हाड़, वज्रके वेठन व वज्रकी कीलियाँ हों उसे वज्रवृषभनाराच सहनन नाम कर्म कहते हैं।

वज्रनाराचसंहनन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे वज्रके हाड़ और वज्रकी कीलियाँ हों किन्तु वेठन वज्रके न हों उसे वज्रनाराच सहनन नामकर्म कहते हैं।

नाराच संहनन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे हड्डियाँ कीलियों से कीलित हों उसे नाराचसंहनन नामकर्म कहते हैं।

अर्द्धनाराच संहनन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

हड्डियाँ आधी कीलित हों उसको अर्द्धनाराच संहनन नामकर्म कहते हैं।

कीलक संहनन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें हड्डियाँ कीलियोंसे स्पृष्ट हों उसे कीलक संहनन नामकर्म कहते हैं।

असंप्राप्त सृपाटिका संहनन नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें हड्डियाँ नसाजालसे बन्धी हुई हों उसे असंप्राप्तसृपाटिका संहनन नामकर्म कहते हैं।

स्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत स्पर्शकी निष्पत्ति होती है उसे स्पर्श नामकर्म कहते हैं।

स्निग्ध स्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत स्निग्ध स्पर्शकी निष्पत्ति हो उसे स्निग्ध स्पर्श नामकर्म कहते हैं।

रूक्षस्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत रूक्ष स्पर्शकी निष्पत्ति होती है उसे रूक्षस्पर्श नामकर्म कहते हैं।

शीतस्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत शीत स्पर्शकी निष्पत्ति होती है उसे शीतस्पर्श नामकर्म कहते हैं।

उष्णस्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत उष्ण स्पर्शकी निष्पत्ति होती है उसे उष्णस्पर्श नामकर्म कहते हैं।

गुरुस्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत गुरुस्पर्श की निष्पत्ति होती है उसे गुरुस्पर्श नामकर्म कहते हैं।

लघुस्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत लघुस्पर्श की निष्पत्ति होती है उसे लघुस्पर्श नामकर्म कहते है।

कठोर स्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत कठोर स्पर्शकी निष्पति होती है उसे कठोरस्पर्श नामकर्म कहते है।

मृदुस्पर्श नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें नियत कोमल स्पर्शकी निष्पत्ति होती है उसे मृदुस्पर्श नामकर्म कहते हैं।

रस नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत रसकी निष्पत्ति हो उसे रस नामकर्म कहते हैं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अम्लरस नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत अम्ल (खट्टे) रसकी निष्पत्ति हो उसे अम्लरस नामकर्म कहते हैं।

मधुररस नामकर्म :–जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियतमधुर-रसकी निष्पत्ति हो उसे मधुररस नामकर्म कहते हैं।

कटुरस नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत कड़वे रसकी निष्पत्ति हो उसे कटुरस नामकर्म कहते हैं।

तिक्तरस नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत तीखे रसकी निष्पत्ति हो उसे तिक्तरस नामकर्म कहते हैं।

कषायितरस नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत कषायले रसकी निष्पत्ति हो उसे कषायितरस नामकर्म कहते हैं।

गन्ध नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत गन्धकी निष्पत्ति हो उसे गन्ध नामकर्म कहते हैं।

सुगन्ध नामकर्म :–जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत सुगन्ध की निष्पत्ति हो उसे सुगन्ध नामकर्म कहते हैं।

दुर्गन्ध नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत दुर्गन्ध की निष्पत्ति हो उसे दुर्गन्ध नामकर्म कहते हैं।

वर्ण नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत वर्णकी निष्पत्ति हो उसे वर्ण नामकर्म कहते हैं।

कृष्णवर्ण नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत कृष्णवर्णकी निष्पत्ति हो उसे कृष्णवर्ण नामकर्म कहते हैं।

नीलवर्ण नामकर्म :–जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत नील वर्णकी निष्पत्ति हो उसे नीलवर्ण नामकर्म कहते हैं।

रक्तवर्ण नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत रक्त वर्णकी निष्पत्ति हो उसे रक्तवर्ण नाम कर्म कहते हैं।

पीतवर्ण नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत पीत वर्णकी निष्पत्ति हो उसे पीतवर्ण नामकर्म कहते हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

श्वेतवर्ण नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें प्रतिनियत श्वेतवर्णकी निष्पत्ति हो उसे श्वेतवर्ण नामकर्म कहते हैं।

आनुपूर्व्य नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे विग्रहगतिमें पूर्व शरीर के आकार आत्मप्रदेश हो उसे आनूपूर्व्य नामकर्म कहते हैं।

नरकगत्यानुपूर्व्य नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे तिर्यञ्च या मनुष्य गतिसे मरणकर नरक भव में देह धारणके लिए जाने वाले जीवका आकार पूर्वके देहके आकारमें हो उसे नरकगत्यानुपूर्व्य नामकर्म कहते हैं।

तिर्यग्गत्यानपूर्व्यं नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे किसी गतिसे मरणकर तिर्यग्गतिमें देह धारणके लिए जाने वाले जीवका आकार पूर्वके देहके आकारमें हो उसे तिर्यग्गत्यानुपूर्व्य नामकर्म कहते हैं।

मनुष्यगत्यानुपूर्व्य नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे किसी गतिसे मरण कर मनुष्यगतिमें देहधारणके लिए जाने वाले जीवका आकार पूर्वके देहके आकारमें हो उसे मनुष्यगत्यानुपूर्व्य नामकर्म कहते हैं।

देवगत्यानुपूर्व्य नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे तिर्यञ्च या मनुष्यगतिसे मरण कर देवगतिमें देह धारणके लिए जाने वाले जीवका आकार पूर्व देहके आकारवत् हो उसे देवगत्यानुपूर्व्य नामकर्म कहते हैं।

अगुरुलघु नामकर्म :–जिस कर्मके उदयसे जीवका शरीर यथायोग्य गुरु और लघु हो अर्थात् न तो ऐसा गुरु शरीर हो कि लोहेके गोलेके समान गिर जावे और न ऐसा लघु शरीर हो कि आकके तूलके समान उड़ जावे, उसे अगुरुलघु नामकर्म कहते हैं।

उपघात नामकर्म :–जिस कर्मके उदयसे अपने ही शरीरका अवयव अपना ही घात करने वाला हो उसे उपघात नामकर्म कहते हैं।

परघात नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे परप्राणीका घात करने वाला अवयव देहमें हो उसे परघात नामकर्म कहते हैं।

आतप नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीर मूलमें तो ठण्डा हो और दूरवर्ती पदार्थोंके उष्ण हो जानेमें निमित्त हो तथा तेजोमय हो उसे

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

आतप नामकर्म कहते हैं। इसका उदय सूर्य विमानके पृथ्वीकायिक जीवोंमें पाया जाता है।

उद्योत नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीर मूलमें भी ठण्डा हो और दूरवर्ती पदार्थोंके उष्णताका कारण न हो तथा उद्योतरुप (चमकदार) हो उसे उद्योत नामकर्म कहते हैं।

उच्वछ्वास नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें श्वास और उच्छ्वास प्रकट हो उसे उच्छ्वास नामकर्म कहते हैं।

विहायोगति नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीव गमन करे उसे विहायोगति नामकर्म कहते हैं।

प्रशस्त विहायोगति नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे सुन्दर गमन विधि हो उसे प्रशस्त विहायोगति नामकर्म कहते हैं। जैसे हस, घोड़ा आदिकी गति।

अप्रशस्त विहायोगति नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे असुन्दर गमन विधि हो उसे अप्रशस्त विहायोगति नामकर्म कहते हैं। जैसे :—गधा, कुत्ता आदि की गतिविधी।

प्रत्येक शरीर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे एक शरीरका अधिष्ठाता एक जीव हो उसे प्रत्येक शरीर नामकर्म कहते हैं।

त्रस नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे अग-उपांग सहित काय (शरीर) मिले उसे त्रस नामकर्म कहते हैं। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव त्रस कहलाते हैं।

सुभग नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे प्राणीपर अन्य प्राणियोंको प्रीति उत्पन्न हो उसे सुभग नामकर्म कहते हैं।

सुस्वर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे अच्छा स्वर हो उसे सुस्वर नाम कर्म कहते हैं।

शुभ नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरके शुभ अवयव हों उसे शुभ नामकर्म कहते हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

बादर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे बादर शरीर हो जो दूसरे को रोक सके व दूसरे से रुक सके उसे बादर नामकर्म कहते हैं।

पर्याप्ति नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे ऐसा शरीर मिले जिसकी पर्याप्ति नियमसे पूर्ण हो, शरीरपर्याप्ति पूर्ण हुए बिना मरण न हो उसे पर्याप्ति नामकर्म कहते हैं।

स्थिर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें धातु, उपधातु अपने-अपने ठिकाने अचिलत रहें उसे स्थिर नामकर्म कहते हैं।

आदेय नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें कान्ति प्रकट हो उसे आदेय नामकर्म कहते हैं।

यशःकीर्ति नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे जीवका यश और कीर्ति प्रकट हो उसे यशःकीर्ति नामकर्म कहते हैं।

साधारणशरीर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे एक शरीरके स्वामी अनेक जीव हों उसे साधारणशरीर नामकर्म कहते हैं।

स्थावर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे अंग उपांग रहित शरीर मिले उसे स्थावर नामकर्म कहते हैं।

दुर्भग नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे प्राणीपर अन्य प्राणियोंकी अरुचि उत्पन्न हो उसे दुर्भग नामकर्म कहते है।

दुःस्वर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे बुरा स्वर हो उसे दुःस्वर नामकर्म कहते हैं।

अशुभ नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरमें असुहावने अवयव हों उसे अशुभ नामकर्म कहते हैं।

सूक्ष्म नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीर सूक्ष्म हो जो न किसी को रोक सके, न किसीसे रुक सके उसे सूक्ष्म नामकर्म कहते हैं।

अपर्याप्ति नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे ऐसा शरीर मिले जिस की पर्याप्ति पूर्ण न हो और मरण हो जाय उसे अपर्याप्ति नामकर्म कहते हैं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अस्थिर नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे शरीरके धातु-उप-धातु चलित हो जाया करे उसे अस्थिर नामकर्म कहते हैं।

अनादेय नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे कान्तिरहित शरीर हो उसे अनादेय नामकर्म कहते हैं।

अयशःकीर्ति नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे अपयश और अकीर्ति हो उसे अयशःकीर्ति नामकर्म कहते हैं।

तीर्थंकर प्रकृति नामकर्म :—जिस कर्मके उदयसे तीर्थंकरपना हो सर्वज्ञदेवके सातिशय दिव्यध्वनि,विहार आदिसे लोकोपकार हो उसे तीर्थंकर प्रकृति नामकर्म कहते हैं।

गोत्रकर्म :—गोत्रकर्म उसे कहते हैं जिसके उदयसे उच्च नीच कुल में जन्म हो। गोत्रकर्मके दो भेद हैं :—(१) उच्च गोत्रकर्म (२) नीच गोत्र कर्म। उच्च गोत्रकर्म उसे कहते है जिसके उदयसे लोकमान्य कुलमें जन्म हो। नीच गोत्रकर्म—उसे कहत हैं जिसके उदयसे लोकनिन्द्य कुलमें जन्म हो।

साँकेतिक संख्यासे कर्मप्रकृतियोंका निर्देश :—

अगुरुद्विक—अगुरुलघु, उपघात।
अरतिद्विक—अरति, शोक
अनादेयद्विक—अनादेय, अयशःकीर्ति
आतापद्विक—आताप, (आतप), उद्योत
आहारकद्विक—आहारक शरीर, आहारकाङ्गोपाङ्ग
औदारिकद्विक—औदारिक शरीर, औदारिकाङ्गोपाङ्ग
तिर्यग्द्विक—तिर्यग्गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी
तैजसद्विक—तैजस शरीर, कार्माण शरीर
देवद्विक—(सुरद्विक) देवगति, देवगत्यानुपूर्वी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

नरकद्विक—नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी
प्रत्येकद्विक—प्रत्येक, साधारण
परघातद्विक—परघात उच्छ्वास
भयद्विक—भय जुगुप्सा
मनुष्यद्विक—मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी
विहायोद्विक (गमनद्विक)—प्रशस्त विहायोगति, अप्रशस्त विहायोगति।
वेदद्विक—स्त्रीवेद, नपुंसकवेद
वैक्रियकद्विक—वैक्रियक शरीर, वैक्रियकाङ्गोपाङ्ग
शुभद्विक—शुभ, अशुभ
स्थिरद्विक—स्थिर, अस्थिर
स्वरद्विक—सुस्वर, दुःस्वर
हास्यद्विक—हास्य, रति

त्रिक

तिर्यक्त्रिक—तिर्यग्गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, तिर्यगायु
त्रसत्रिक—त्रस, बादर, पर्याप्ति
तीर्थत्रिक—तीर्थंकर, आहारकद्विक
दुर्भगत्रिक—दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय
देवत्रिक—देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, देवायु
नरकत्रिक—नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, नरकायु
मनुष्यत्रिक—मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, मनुष्यायु
मिथ्यात्रय—मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति
विकलत्रिक—द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय
स्त्यानत्रिक—स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला
सुभगत्रिक—सुभग, सुस्वर, आदेय
सूक्ष्मत्रिक—सूक्ष्म, अपर्याप्ति, साधारण

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

संज्वलनत्रिक—संज्वलन क्रोध मान माया

चतुष्क

अगुरुचतुष्क—अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास

अनचतुष्क—अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ

आहारकचतुष्क-आहारकशरीर, आहारकाङ्गोपाङ्ग, आहारकबन्धन आहारक संघात

जातिचतुष्क-एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

दर्शनचतुष्क-चक्षुर्दर्शनावरण, अचक्षुर्दर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण ।

दुर्भगचतुष्क-दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अयश कीर्ति ।

नारकचतुष्क-नरकगति नरकगत्यानुपूर्वी, वैक्रियकशरीर, वैक्रियकाङ्गोपाङ्ग ।

वर्णचतुष्क-वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श ।

शतारचतुष्क-तिर्यग्गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गायु, उद्योत ।

स्थावरचतुष्क-स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्ति, साधारण ।

सुभगचतुष्क-सुभग, सुस्वर, आदेय, यशःकीर्ति ।

सुरचतुष्क (देवचतुष्क)—देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियकशरीर, वैक्रियकाङ्गपाङ्ग ।

संज्वलनचतुष्क—संज्वलन क्रोध मान माया लोभ ।

संस्थानचतुष्क—न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान, स्वातिसंस्थान, वामनसंस्थान, कुब्जक संस्थान ।

संहननचतुष्क—वज्रनाराच संहनन, नाराचसंहनन, अर्द्धनाराच संहनन, कीलक सहनन ।

पञ्चक आदि

उपघातपञ्चक—उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत ।

तीर्थपञ्चक—तीर्थंकर, आहारकशरीर, आहारकाङ्गोपाङ्ग,

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति ।

निद्रापञ्चक—निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि ।

दर्शनषट्क—केवलदर्शनावरण, निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला, स्त्यानगृद्धि ।

नोकषायषट्क (हास्यषट्क)—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा ।

वैक्रियकषट्क-नरकगति नरकगत्यानुपूर्वी, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियकशरीर, वैक्रियकाङ्गोपाङ्ग ।

मध्यमकषायाष्टक—अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ ।

त्रसनवक-त्रस, बादर, पर्याप्ति, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर आदेय ।

त्रसदशक—त्रस, बादर, पर्याप्ति, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशःकीर्ति ।

स्थावरदशक—स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्ति, साधारण, अस्थिर, अशुभ दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति ।

तिर्यगेकादश—स्थावर, सूक्ष्म, तिर्यग्गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, साधारण ।

कषायद्वादशक—अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ, अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ ।

कर्म–स्थिति

कर्मनाम	जघन्य स्थितिबन्ध	उत्कृष्ट स्थितिबन्ध
ज्ञानावरण	अन्तर्मुहूर्त	३० कोड़ाकोड़ी सागर
दर्शनावरण	अन्तर्मुहूर्त	३० कोड़ाकोड़ी सागर
वेदनीय	१२ मुहूर्त	३० कोड़ाकोड़ी सागर
मोहनीय	अन्तर्मुहूर्त	७० कोड़ाकोड़ी सागर

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

आयु	अन्तर्मुहूर्त	३३ सागर
नाम	८ मुहूर्त	२० कोड़ाकोड़ी सागर
गोत्र	८ मुहूर्त	२० कोड़ाकोड़ी सागर
अन्तराय	अन्तर्मुहूर्त	३० कोड़ाकोड़ी सागर

उत्तर प्रकृतियोंका उत्कृष्टस्थितिबन्ध

प्रकृतिनाम	उत्कृष्ट स्थितिबन्ध
ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण,	३० कोड़ाकोड़ी सागर
असातावेदनीय	,, ,,
सातावेदनीय, स्त्रीवेद, मनुष्यगति,	१५ कोड़ाकोड़ी सागर
मनुष्यगत्यानुपूर्वी	,, ,,
मिथ्यात्व	७० कोड़ाकोड़ी सागर
अनन्तानुबन्धी क्रोधआदि १६ कषाय	४० कोड़ाकोड़ी सागर
अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद,	२० कोड़ाकोड़ी सागर
तैजस शरीर, कार्माण शरीर	,, ,,
हुण्डकसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिका संहनन,	,, ,,
तिर्यंगति, तिर्यंगत्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगत-	,, ,,
यानुपूर्वी, औदारिकशरीर, औदारिकाङ्गोपाङ्ग,	,, ,,
वैक्रियक शरीर, वैक्रियकाङ्गोपाङ्ग, आतप, उद्योत	,, ,,
त्रस, बादर, पर्याप्ति, प्रत्येक, वर्ण, रस, गन्ध,	,, ,,
स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, एके-	,, ,,
न्द्रिय, पचेन्द्रिय, स्थावर, निर्माण, अप्रशस्त	२० कोड़ाकोड़ी सागर
विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर,	,, ,,
अनादेय, अयशःकीर्ति, नीच गोत्र	,, ,,
वामनसंस्थान, नाराचसंहनन, द्वीन्द्रिय,	१८ कोड़ाकोड़ी सागर
त्रीन्द्रिय,चतुरिन्द्रिय,सूक्ष्म,अपर्याप्त,साधारण,	,, ,,

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

कुब्जकसंस्थान, अर्द्धनाराच संहनन	१६ कोड़ाकोड़ी सागर
स्वातिसंस्थान, नाराचसंहनन	१४ कोड़ाकोड़ी सागर
न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान, वज्रनाराचसंहनन	१२ कोड़ाकोड़ी सागर
हास्य, रति, पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान	१० कोड़ाकोड़ी सागर
वज्रवृषभनाराचसंहनन, स्थिर, शुभ, सुभग,	,, ,,
सुस्वर, आदेय, यशःकीर्ति, प्रशस्तविहायोगति,	,, ,,
देवगति, देवगत्यानुपूर्वी	,, ,,
आहारकशरीर, आहारकांगोपांग, तीर्थंकर-प्रकृति	अन्तःकोड़ाकोड़ी सागर
देवायु, नरकायु	३३ सागर
मनुष्यायु, तिर्यंगायु	तीन पल्य

उत्तर प्रकृतियोंका जघन्यस्थितिबन्ध

प्रकृति नाम	जघन्य स्थितिबन्ध
ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, अन्तराय ५,	१ अन्तर्मुहूर्त
संज्वलन लोभ	,, ,,
यशःकीर्ति, उच्च गोत्र	८ मुहूर्त
सातावेदनीय	१२ मुहूर्त
संज्वलन क्रोध	२ माह
संज्वलन मान	१ माह
संज्वलन माया	१५ दिन
पुरुषवेद	८ वर्ष
तीर्थंकर, आहारक शरीर, आहारकांगोपांग	अन्तःकोड़ाकोड़ी सागर
	,, ,,
मनुष्यायु, तिर्यंगायु	अन्तर्मुहूर्त
देवायु, नरकायु	१० हजार वर्ष

बन्ध प्रकृति १२० मेंसे इस नक्शेमें अपनी अपनी उत्कृष्टस्थिति

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

उपरोक्त २९ प्रकृतियोंको छोड़ कर शेष के प्रतिभाग प्रमाण बची हुई ९१ प्रकृतियोंका जघन्य स्थितिबन्ध ।

तिर्यगायु, मनुष्यायु व देवायु इन तीन प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशुद्ध परिणामसे होता है और जघन्य स्थितिबन्ध संक्लेश परिणामसे होता है, किन्तु इन तीनों प्रकृतियोंको छोड़कर बाकी समस्त (१४५) प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध तत्प्रायोग्य संक्लेश परिणामसे होता है और जघन्य स्थितिबन्ध विशुद्धपरिणामसे होता है ।

कर्मानुभाग

फल देनेकी शक्तिको अनुभाग कहते हैं । घातिया कर्मोंमें (ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय व अन्तराय में) फल देनेकी शक्तिके ४ प्रकार हैं (१) लतावत्, (२) काष्ठवत्, (३) अस्थिवत् व (४) पाषाणवत् । जैसे लता, काठ, हड्डी व पत्थरमें क्रमसे अधिक अधिक कठोरपना है वैसे ही जघन्य अनुभागसे लेकर उत्कृष्ट अनुभाग तक अधिकाधिक कठोरता अनुभागमें है ।

अघातिया कर्मोंमें जो शुभ प्रकृतियां हैं उनमें जघन्यसे लेकर उत्कृष्ट अनुभाग तकमें ४ प्रकार हैं—(१) गुड़वत्, (२) शक्करवत्, (३) मिश्रीवत् व (४) अमृतवत् ।

अघातिया कर्मोंमें जो अशुभ प्रकृतियां हैं उनमें जघन्य अनुभागसे लेकर उत्कृष्ट अनुभाग तकम ४ प्रकार हैं—(१) नीमवत्, (२) कांजीरवत्, (३) विषवत्, (४) हालाहलवत् ।

शुभ प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अनुभागबन्ध विशुद्ध परिणामोंसे होता है और जघन्य अनुभागबन्ध संक्लेश परिणामोंसे होता हैं ।

अशुभ प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अनुभागबन्ध संक्लेश परिणामोंसे होता है और जघन्य अनुभागबन्ध विशुद्ध परिणामोंसे होता है ।

कर्मप्रदेश

सामान्यतया अभव्यराशिसे अनन्तगुणे व सिद्धराशिके अनन्तवें भाग

Report any errors at vikasnd@gmail.com

प्रमाण कार्माणवर्गणाके परमाणुसमूहको यह जीव एक समयमें बांधता है। उस समयप्रबद्धकी वर्गणावोंका आठ कर्मोंमें बटवारा इस प्रकार होता है—

सब कर्मोंमें आयुकर्मका हिस्सा थोड़ा है, उससे अधिक नामकर्म और गोत्रकर्मका है, किन्तु इन दोनोंका द्रव्य परस्परमें समान है। नामकर्म और गोत्रकर्मके हिस्सेसे ज्ञानावरण दर्शनावरण व अन्तरायका प्रत्येकका अधिक है किन्तु इन तीनोंका द्रव्य परस्पर समान है। इनसे अधिक मोहनीय कर्म का हिस्सा है। मोहनीयसे भी अधिक वेदनीय कर्मका हिस्सा है।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय इन तीन कर्मोंके अपने अपने द्रव्य में यथायोग्य अनन्तका भाग देनेसे लब्ध एक भाग सर्वघाती प्रकृतियोंका द्रव्य होता है और शेष अनन्त बहुभाग देशघाती प्रकृतियोंका द्रव्य होता है। अन्तरायकर्ममें कोई प्रकृति सर्वघाती नहीं है सो उसका द्रव्य सारा ही देश-घाती है।

जिस बन्धमें कर्मप्रदेश अधिक होते हैं उसमें अनुभाग कम होता है और जिस बन्धमें कर्मप्रदेश कम होते हैं उसमें अनुभाग अधिक होता है।

संसारी जीवके साथ आहारवर्गणा जातिके व कार्माण जातिके सूक्ष्म पुद्गल स्कन्ध प्रकृत्या लगे हुए हैं इन्हें विस्रसोपचय कहते हैं। विस्रसा= स्वभावसे, उपचय=संग्रह। एक जीवके साथ अनन्त विस्रसोपचयरूप आहा रवर्गणायें हैं उनसे अनन्त गुणे शरीररूप परिणत आहारवर्गणायें हैं उनसे अनन्तगुणे विस्तसोपचयरूप कार्माणवर्गणायें हैं उनसे अनन्तगुणे कर्मरूप परिणत कार्माणवर्गणायें हैं। जीवप्रदेशोंसे बाहर अवस्थित अनन्त कार्माण-वर्गणायें भी विस्रसोपचयमें आ जाती है और वे भी कर्मरूप परिणत हो जाती हैं। इनमें से आहारवर्गणा जातिके स्कन्ध तो शरीररूप परिणमते हैं सो शरीररूप परिणम कर दृश्य भी हो जाते हैं,कई शरीर अदृश्य भी रहते हैं, किन्तु कार्माणवर्गणा जातिके स्कन्ध कर्मरूप परिणमते हैं और कर्मरूप परिणमकर भी वे अदृश्य रहते हैं।

कर्मका बन्ध करनेके लिए जीवको बाहरसे कर्म नहीं लाने पड़ते हैं

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

जीवके शुभ व अशुभ परिणामके निमित्तसे जीवके साथ ही विस्रसोपचयरूप से लगी हुई कार्माण वर्गणायें जीवके समस्त प्रदेशोंमें एक क्षेत्रावगाह होकर कर्मरूप परिणतहो जाती हैं। ये कार्माणवर्गणायें एक क्षेत्रावगाही तो पहिले भी थी अब कर्मफलमें निमित्तत्त्व शक्तिसे (अनुभागसे) सम्पन्न होकर विशिष्टरूपसे एक क्षेत्रावगाही होती हैं, यही कहलाता है तप्तलोहपिण्डजल की तरह सर्व ओरसे कर्मोंका आकर्षण।

बन्ध—विशेषता

प्रकृतिबन्ध ४ प्रकार का होता है—(१) सादिबन्ध, (२) अनादि-बन्ध, (३) ध्रुवबन्ध, (४) अध्रुवबन्ध।

जिस कर्मके बन्धका अभाव होकर फिर वही कर्म बंधे उसे सादिबन्ध कहते हैं। जैसे ज्ञानावरणकर्मका बन्ध उपशमश्रेणिमें ग्यारहवें गुणस्थानमें नहीं रहा, फिर दशवेंमें गुणस्थानमें आने पर बन्ध होने लगता है सो ग्यारहवेंके बाद आये हुए दशम गुणस्थानमें ज्ञानावरणका बन्ध सादिबन्ध है।

जिस कर्मके बन्धका कभी अभाव नहीं हुआ है उसका बन्ध अनादि-बन्ध है। जैसे जो श्रेणीपर नहीं चढ़ा उसके ज्ञानावरणका बन्ध अनादिबन्ध है याने दशवें गुणस्थान तक ज्ञानावरण अनादिबन्ध है।

जिस बन्धका आदि तथा अन्त न हो वह ध्रुवबन्ध है। जैसे अभव्य जीवका बन्ध।

जिस बन्धका अन्त आ जावे वह अध्रुवबन्ध है। जैसे भव्य जीवका बन्ध।

मूल कर्मप्रकृतियोंमें बन्धप्रकारोंका विवरण

ज्ञानावरण—	सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुवबन्ध
दर्शनावरण—	सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुवबन्ध
वेदनीय—	× अनादि, ध्रुव, अध्रुवबन्ध
मोहनीय—	सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुवबन्ध
आयुकर्म—	सादि, ×, ×, अध्रुवबन्ध

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

न मकर्म	सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुवबन्ध
गोत्रकर्म	सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुवबन्ध
अन्तराय कर्म	सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुवबन्ध

कर्मकी उत्तर प्रकृतियोंमें बन्धप्रकारोंका विवरण

बन्ध योग्य १२० प्रकृतियोंमेंसे ४७ तो ध्रुवबन्धी प्रकृतियाँ कहलाती है। यहाँ ध्रुवबन्धका तात्पर्य है कि जब तक इन प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति नहीं होती तब तक इनका निरन्तर बन्ध होता रहता है। ७३ प्रकृतियाँ अध्रुवबन्धी प्रकृतियाँ हैं इनका किसी समय बन्ध होता है और किसी समय किसीका बन्ध नहीं भी होता है।

ध्रुवबन्धी ४७ प्रकृतियाँ—ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ९, अन्तराय ५ मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी क्रोध आदि १६ कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस, कार्माण, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण, वर्ण, रस, गन्ध, स्पर्श। इन ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव चारों प्रकारका बन्ध होता है।

अध्रुवबन्धी ७३ प्रकृतियाँ—वेदनीय २, हास्य, रति, अरति, शोक, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, आयु ४, गति ४, जाति ५, औदारिकशरीर, वैक्रियकशरीर, आहारक शरीर, औदारिक अङ्गोपाङ्ग, वैक्रियक अङ्गोपाङ्ग, आहारक अङ्गोपाङ्ग, संस्थान ६, संहनत ६, आनुपूर्व्य ४, परघात, उच्छ्यास, आतप, उद्योत, विहागोगति २, त्रसादि ६, स्थावरादि ६, यशःकीर्ति, अयशःकीर्ति, तीर्थङ्कर उच्चगोत्र, नीच गोत्र। इन ७३ अध्रुवप्रकृतियोंका सादि व अध्रुव दो ही प्रकारका बन्ध होता है।

अध्रुवबन्धी ७३ प्रकृतियाँ—वेदनीय २, हास्य, रति, अरति, शोक, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, आयु ४, गति ४, जाति ५, औदारिकशरीर, वैक्रियकशरीर, आहारक शरीर, औदारिक अङ्गोपाङ्ग, वैक्रियक अङ्गोपाङ्ग, आहारक अङ्गोपाङ्ग, संस्थान ६, संहनन ६, आनुपूर्व्य ४, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, विहायोगति २, त्रसादि, ९ स्थावरादि ६, यशःकीर्ति,

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अयशःकीर्ति, तीर्थङ्कर, उच्चगोत्र, नीचगोत्र। इन ७३ अध्रुव प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव दो ही प्रकारका बन्ध होता है।

अध्रुवबन्धी ७३ प्रकृतियोंमें ११ प्रकृतियाँ तो अप्रतिपक्षी हैं, याने इनकी कोई विरोधी प्रकृति नहीं है सो जिस समय इनका बन्ध होता है वह होता ही है,यदि नहीं होवे तो नहीं होता। वे अप्रतिपक्षी अध्रुव बन्धी ११ प्रकृतियाँ ये हैं—तीर्थङ्कर, आहारकशरीर, आहारकांङ्गोपाङ्ग, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, आयु ४।

अध्रुवबन्धी ७३ प्रकृतियोंमें से अप्रतिपक्षी ११ प्रकृतियोंको छोड़कर शेष ६२ प्रकृतियां सप्रतिपक्षी हैं। इनकी विरोधी प्रकृतिका बन्ध होनेके समय इनका बन्ध नहीं होता। जैसे असातावेदनीयका बन्ध होनेपर साता-वेदनीयका बन्ध नहीं होता, सातावेदनीयका बन्ध होनेपर असातावेदनीयका बन्ध नहीं होता। इसी प्रकार शेष प्रकृतियोंमें यथायोग्य लगा लेना।

कर्म प्रकृतियोंके प्रकार

कर्म प्रकृतियोंके ४ प्रकार हैं–(१) जीवविपाकी, (२) पुद्गलविपाकी, (३) भवविपाकी, (४) क्षेत्रविपाकी।

जीवविपाकी प्रकृति उन्हें कहते हैं जिनका फल जीवमें हो। जीव-विपाकी प्रकृतियाँ ७८ हैं—ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ९, मोहनीय २८, अन्तराय ५, वेदनीय २, गति ४, जाति ५, उच्छ्वास, विहायोगति २, त्रस स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्ति, अपर्याप्ति, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुःस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्ति, अयशःकीर्ति, तीर्थङ्कर, गोत्रकर्म २।

पुद्गलविपाकी प्रकृति उन्हें कहते हैं जिनका फल पुद्गलमें हो। पुद्-गलविपाकी प्रकृतियाँ ६२ हैं—शरीर ५, अंगोपांग ३, बन्धन ५, संघात ५ संस्थान ६, सहनन ६, वर्ण ५, रस ५, गन्ध २, स्पर्श ८, निर्माण, आतप, उद्योत, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, प्रत्येक, साधारण, अगुरुलघु, उपघात परघात।

भवविपाकी प्रकृति उन्हें कहते हैं जिनका फल नारकादिक पर्यायोंके

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

होनेमें हो। भवविपाकी प्रकृतियाँ ४ हैं—(१) नरकायु, (२) तिर्यगायु, (३) मनुष्यायु, (४) देवायु।

क्षेत्रविपाकी प्रकृतियाँ उन्हें कहते हैं जिनका फल परलोक को गमन करते हुए जीवके मार्गमें (विग्रहगतिमें) हो। क्षेत्रविपाकी प्रकृतियां ४ हैं— (१) नरकगत्यानुपूर्वी, (२) तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, (३) मनुष्यगत्यानुपूर्वी, (४) देवगत्यानुपूर्वी।

गुणस्थानानुसार बन्ध व्युच्छित्ति

बन्धवियोगको बन्धव्युच्छित्ति कहते हैं। जिस गुणस्थानमें जिन प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति कही जावे उसका अर्थ यह है कि इन प्रकृतियोंका बन्ध इस गुणस्थान तक होता है आगेके गुणस्थानोंमें नहीं होता। इनका स्मरण रखनेके लिए गोम्मटसार की कुछ गाथायें दी जा रही हैं उन्हें याद करनेसे अध्ययनमें सुगमता रहेगी।

गुणस्थानोंमें बन्धव्युच्छित्तिकी संख्या—

सोलस पणवीस णभं दस चउ छक्केक्कबन्ध वोच्छिण्णा दुग तीस चदुरपुव्वे पण सोलस जोगिणो एक्कं ॥

पहिले गुणस्थानमें १६, दूसरेमें २५, तीसरेमें २०, चौथेमें १०, पांचवेमें ४, छटमें ६, सातवेमें १, आठवेमें ५६, नवमेमें ५, दसवेमें १६, तेरहवेमें १ प्रकृतिकी बन्धव्युच्छित्ति होती है।

प्रथम गुणस्थानमें बन्धव्युच्छिन्न प्रकृतियोंके नाम—

मिच्छ हुंडसंढासंपत्तेयक्खथावरादावं।
सुहुमतियं वियलिंदी णिरयदुणिरयाउगं मिच्छे ॥

मिथ्यात्व, हुडक संस्थान, नपुंसकवेद, असंप्रासृस्टपाटिका संहनन, एकेन्द्रिय, स्थावर, आताप, सूक्ष्म अपर्याप्ति, साधारण, दोइन्द्रिय, तीन-इन्द्रिय. चतुरिन्द्रिय, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, नरकायु इन १६ प्रकृतियों की बन्धव्युच्छिति मिथ्यात्व गुणस्थानमें होती है।

सासादन गुणस्थानमें बन्धव्युच्छिन्न प्रकृतियोंके नाम—

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

विदियगुणे अणथीणतिदुभगतिसंठाणसंहदिचउक्कं ।
दुग्गमणित्थी णीचं तिरियदुगुज्जोवतिरियाऊ ॥

अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ,स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचला-प्रचला, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, बीचके चार संस्थान, बीचके चार संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, स्त्रीवेद, नीचगोत्र, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी,उद्योत, तिर्यगायु इन २५ प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति सासादनसम्यक्त्व गुणस्थानमें होती है ।

चौथे व पांचवे गुणस्थानमें बन्धव्युच्छिन्न प्रकृतियां---

अयदे विदियकसाया वज्जं ओरालमणुदुमणुवाऊ ।
देसे तदियकसाया णियमेणिह बन्धवोच्छिण्णा ॥

अविरतसम्यक्त्व गुणस्थानमें अप्रत्याख्यानावरण ४,वज्रवृषभनाराच-संहनन औदारिकद्विक, मनुष्यद्विक, मनुष्यायु इन १० प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति होती है ।

देशविरत गुणस्थानमें प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ इन चार प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति होती है ।

छटे सातवे गुणस्थानमें बन्धव्युच्छिन्न प्रकृतियाँ—

छट्टे अथिरं असुहं असादमजसं च अरदि सोगं च ।
अपमत्ते देवाऊ णिट्ठवणं चेव अत्थित्ति ॥

प्रमत्तविरत गुणस्थानमें अस्थिर, अशुभ, असातावेदनीय, अयशःकीर्ति अरति, शोक इन ६ प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति होती है । अप्रमत्तविरत गुणस्थानमें देवायुकी बन्धव्युच्छित्ति होती है ।

आठवें गुणस्थानमें बन्धव्युच्छिन्न प्रकृतियां

मरणणम्हि णियट्टीपढमे णिद्दा तहेव पयलाय ।
छट्ठे भागे तित्थं णिमिणं सग्गमण पंचिंदी ॥

तेजदुहारदुसमचउसुरवण्णागुरुचउक्कतसणवयं ।
चरमे हस्सं च रदी भयं जुगुच्छा य बन्धवोच्छिण्णा ॥

अपूर्वकरण गुणस्थानमें निद्रा, प्रचला, तीर्थंकर, निर्माण, प्रशस्तविहा

Report any errors at vikasnd@gmail.com

योगति, पञ्चेन्द्रिय, तैजसद्विक,आहारकद्विक, समचतुरस्रसंस्थान, देवचतुष्क वर्णचतुष्क, अगुरुचतुष्क, त्रसनवक, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा इन ३६ प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति होती है।

नवमें दसवें गुणस्थानमें बन्धव्युच्छिन्न प्रकृतियां—

पुरिस चदुसंजलणं कमेण अणियट्टिपंचभागेसु।
पढमं विग्घं दंसण-चउ जस उच्चं च सुहुमंते॥

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पाँच भागोंमें क्रमसे पुरुषवेद, सज्वलन क्रोध, सज्वलन मान, सज्वलन माया व संज्वलन लोभ की बन्धव्युच्छित्ति होती है।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानमें ज्ञानावरण ५, अन्तराय ५, दर्शनावरण ४, यशःकीर्ति, उच्चगोत्र इन १६ प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति होती है।

तेरहवे गुणस्थानमें सातावेदनीय (जो कि एक समयकी स्थितिका ही है) की बन्धव्युच्छित्ति होती है।

समस्त प्रकृतियाँ १४८ हैं। उनमें से सम्यग्मिथ्यात्व व सम्यक्प्रकृति का तो बन्ध ही नहीं होता। प्रथमोपशम सम्यक्त्वके परिणामसे मिथ्यात्वके ३ भाग हो जाते हैं मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक् प्रकृति। सो यों इन दो की सत्ता हो जाती है और फिर ये उदयमें आ सकते हैं। बन्धयोग्य १४६ में २६ प्रकृतियोंको गर्भित कर देनेसे १२० बन्धयोग्य हैं, उनकी व्युच्छित्तियाँ कही गई हैं। गर्भित होनेका विधान :—बन्धन ५, संघात ५ ये १० प्रकृतियां ५ शरीरनामकर्ममें गर्भित की गई हैं। वर्ण ५, गन्ध २, रस ५, स्पर्श ८ इन बीसको वर्ण गन्ध रस स्पर्श यों सामान्यरूपसे चार कह कर १६ कम किये हैं।

गुणस्थानानुसार उदयव्युच्छित्ति

उदयवियोगको उदयव्युच्छित्ति कहते हैं जिस गुणस्थानमें जिन प्रकृतियो की उदयव्युच्छित्ति कही जावे उन प्रकृतियोंका उदय उसी गुणस्थान तक सम्भव है, आगेके गुणस्थानोंमें नहीं, यह भाव समझना।

http://sahjanandvarnishastra.org/

पहिले, दूसरे, तीसरे गुणस्थानमें उदयव्युच्छित्तिकी संख्या—

पण णव इगि सत्तरसं अड पंच च चउर छक्क छच्चेव ।
इगि दुग सोलस तीसं बारस उदये अजोगंता ॥

पहिले गुणस्थानमें ५, दूसरेमें ६, तीसरे में १, चौथेमें १७, पाँचवेमें ८, छटेमें ५, सातवेंमें ४, आठवेंमें ६, नवमेमें ६, दशवेंमें १, ग्यारहवेंमें २ बारहवेंमें १६ तेरहवेंमें ३० व चौदहवेंमें १२ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है ।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय गुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियाँ—

मिच्छे मिच्छादावं सुहुमतियं सासणे अणेइन्दी ।
थावरवियलं मिस्से मिस्सं च य उदयवोच्छिण्णा ॥

मिथ्यात्व गुणस्थानमें मिथ्यात्व, आताप, सूक्ष्मत्रिक इन ५ प्रकृतियों की उदयव्युच्छित्ति होती है ।

सासादन गुणस्थानमें अनचतुष्क, एकेन्द्रिय,स्थावर, विकलत्रिक इन ९ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है ।

मिश्र गुणस्थानमें सम्यग्मिथ्यात्वकी उदयव्युच्छित्ति होती है ।

चतुर्थ गुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियां—

अयदे विदियकसाया वेगुव्वियछक्क णिरयदेवाऊ ।
मणुयतिरियाणुपुव्वी दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥

चतुर्थगुणस्थानमें अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, वैक्रियक षटक्, नरकायु, देवायु, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय अयशःकीर्ति इन १७ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है ।

पांचवे छटवे गुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियाँ—

देसे तदियकसाया तिरियाउज्जोवणीचतिरियगदी ।
छट्ठे आहारदुगं थीणतियं उदयवोच्छिण्णा ॥

देशविरत गुणस्थानमें प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, तिर्यगायु, उद्योत, नीचगोत्र, तिर्यग्गति इन ८ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

प्रमत्तविरतगुणस्थानमें आहारकद्विक, स्त्यानगृद्धित्रिक, इन पाँच प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

७, ८, ९, १० व ११वें गुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियां—

अपमत्ते सम्मत्तं अंतिमतियसंहदी यऽपुव्वम्हि ।
छच्चेव णोकसाया अणियट्टी भागभागेसु ॥
वेदतिय कोह माणं माया संजलणमेव सुहुमंते ।
सुहुमो लोहो संते वज्ज णाराय णारायं ॥

अप्रमत्तविरत गुणस्थानमें सम्यक्प्रकृति, अन्तिम ३ संहनन, इन ४ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

अपूर्वकरण गुणस्थानमें ६ नोकषायकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

अनिवृत्तिकरणके ६ भागोंमें क्रमशः नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध, संज्वलन मान, संज्वलन माया इन ६ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

सूक्ष्म साम्परायगुणस्थानमें संज्वलन (सूक्ष्म) लोभकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

उपशान्तमोहगुणस्थानमें वज्रनाराच व नाराच संहनन इन दो प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

क्षीणमोह गुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियां—

क्षीणकसायदुचरिये णिद्दा पयला य उदयवोच्छिण्णा ।
णाणंतरायदसयं दंसणचत्तारि चरिमम्हि ॥

क्षीणमोह गुणस्थानके उपान्त्य समयमें निद्रा प्रचला और अन्त्य समयमें ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, अन्तराय ५ कुल १६ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

सयोगकेवली गुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियां—

तदियेक्कवज्जणिमिणं थिरसुहसरगदिउरालतेजदुगं
संठाणं वण्णागुरुचउक्कपत्तेय जोगिम्हि

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सयोगकेवली गुणस्थानमें वेदनीयकी १, वज्रवृषभनाराच संहनन, निर्माण स्थिरद्विक, शुभद्विक, स्वरद्विक, विहायोगतिद्विक, औदारिकद्विक, तैजसद्विक, सस्थान ६, वर्णचतुष्क, अगुरुचतुष्क, प्रत्येक इन ३० प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

अयोगकेवली गुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियां—

तदियेक्कं मणुवगदी पंचिदियसुभगतसतिगादेज्जं
जसतित्थं मणुवाऊ उच्चं च अजोगिचरिमम्हि

अयोगकेवली गुणस्थानमें मनुष्यगति, पञ्चेन्द्रिय, सुभग, त्रसत्रिक, आदेय, यशःकीर्ति, तीर्थङ्कर, मनुष्यायु, उच्चगोत्र इन १२ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

गुणस्थानानुसार सत्त्वव्युच्छित्ति

सत्त्वके विनाशको सत्त्वव्युच्छित्ति कहते हैं। जिस गुणस्थानमें जिन प्रकृतियोंकी सत्त्वव्युच्छित्ति कही है उन प्रकृतियोंका सत्त्व उसी गुणस्थान तक सम्भव है, आगेके गुणस्थानोंमें नहीं, यह भाव समझना। जो पुरुष मोक्षगामी है उसके जन्मतः ही नरकायु तिर्यंगायु देवायुकी सत्ता नहीं है, उसके पहिले गुणस्थानसे ही इनकी सत्ता नहीं है। सम्यक्त्वघातक ७ प्रकृतियोंका चौथे गुणस्थानसे लेकर ७वं गुणस्थान तक यदि क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न हो तो कहीं भी क्षय हो सकता है।

गुणस्थानोंमें सत्त्वव्युच्छित्ति—

सोलठ्ठेक्किगि छक्कं चदुसेक्कं अदो एगं
खीणे सोलसऽजोगे बायत्तरि तेरुवत्तंते

नवमे गुणस्थानमें ३६ (१६+८+१+१+६+१+१+१+१) दशमें गुणस्थानमें १, क्षीणमोह गुणस्थानमें १६, अयोग केवली गुणस्थानमें ८५ (७२+१३) प्रकृतियोंकी सत्त्वव्युच्छित्ति होती है।

नवमें, दसवें, बारहवें गुणस्थानमें सत्त्वव्युच्छिन्न प्रकृतियाँ—

णिरयतिरिक्खदु वियलं थीणतिदुगुज्जोवताव एइंदी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

साहरणसुहुम थावर सोलं मज्झिमकसायठ्ठं
संढित्थि छक्कसाया पुरिसो कोहो य माण मायं च
थूले सुहुमे लोहो उदयंवा होदि खीणम्हि

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें पहिले भागमें नरकद्विक, तिर्यग्द्विक, विकलत्रिक, स्त्यानगृद्धित्रिक, उद्योत, आतप, एकेन्द्रिय, साधारण, सूक्ष्म, स्थावर ये १६ द्वितीय भागमें बीचकी आठ कषाय, तीसरे भागमें नपुंसकवेद, चतुर्थ भागमें स्त्रीवेद, पञ्चम भागमें ६ नोकषाय, छटे भागमें पुरुषवेद, सातवें भागमें सज्वलन क्रोध, आठवें भागमें संज्वलन मान, नवमें भागमें सज्वलन माया यों सब ३६ प्रकृतियाँ उदयव्युच्छिन्न होती है।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानमें संज्वलन लोभकी उदयव्युच्छित्ति होती है

क्षीणमोह गुणस्थानमें क्षीणमोहकी उदयव्युच्छित्तिवाली (निद्रा, प्रचला, ज्ञानावरण ५, अन्तराय ५, दर्शनावरण ४) १२ प्रकृतियोंकी उदयव्युच्छित्ति होती है।

अयोगकेवली गुणस्थानमें सत्त्वव्युच्छिन्न प्रकृतियाँ—

देहादी फासंता थिरसुहसरसुविहायदुगदुभगं
णिमिणाजसणादेज्जं पत्तेयापुण्ण अगुरुचऊ ॥
अणुदयतदियं णीचमजोगिदुचरिमम्हि सत्तवोच्छिण्णा।
उदयगवारणराणू तेरस चरिमम्हि सत्तवोच्छिण्णा ॥

अयोगकेवली गुणस्थानमें उपान्त्य समयमें शरीरसे स्पर्श पर्यन्त ५० प्रकृतियाँ, स्थिरद्विक, शुभद्विक, स्वरद्विक, देवद्विक, विहायोगतिद्विक, दुर्भग, निर्माण, अयशःकीर्ति, अनादेय, प्रत्येक, अपर्याप्ति, अगुरुलघुचतुष्क, अनुदित वेदनीय १, नीचगोत्र, ये ७२ प्रकृतियाँ तथा अन्य समयमें इसी गुण स्थानकी उदयव्युच्छित्ति वाली १२ व मनुष्यगत्यानुपूर्वी ये १३ प्रकृतियाँ सत्त्वव्युच्छिन्न होती हैं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

कर्मप्रकृतियोंकी प्रवाचना

इस प्रवाचनामें नामके ऊपर तीन संकेत हैं कि किस गुणस्थानमें बन्धव्युच्छित्ति, उदयव्युच्छित्ति व सत्त्वव्युच्छित्ति होती है।

ज्ञानावरण ५

१०—१२—१२ मतिज्ञानावरण, १०—१२—१२ श्रुतज्ञानावरण, १०—१२—१२ अवधिज्ञानावरण

१०—१०—१२ मन:पर्ययज्ञानावरण, १०—१२—१२ केवलज्ञानावरण

दर्शनावरण ६

१०—१२—१२ चक्षुर्दर्शनावरण, १०—१२—१२ अचक्षुर्दर्शनावरण १०—१२—१२ अवधिदर्शनावरण

१०—१२—१२ केवलदर्शनावरण, ८—१२—१२ निद्रा, २—६—६ निद्रानिद्रा

८—१२—१२ प्रचला, २—६—६ प्रचलाप्रचला, २—६—६ स्त्यानगृद्धि

वेदनीय २

१३, १३ या १४, १३ या १४ सातावेदनीय ६, १३ या १४, १३ या १४ असातावेदनीय

मोहनीय २८

१—१—४ से ७, मिथ्यात्व ×—३—४ से ७, सम्यग्मिथ्यात्व, ×—४से ७, ४ से ७ सम्यक्प्रकृति

२—२—४ से ७, अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ ४—४—६ अप्रत्याख्यानावरण

५—५—६

क्रोध मान माया लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ

६—६—६ ६—६—६ ६—६—६ ६—१०—१०

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ

८—८—९ ८—८—९ ६—८—९ ६—८—९

हास्य, रति, अरति, शोक

८—८—९ ८—८ ९ ९—९—९ २—९—९ १—९—९

भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुसंकवेद

आयुकर्म ४

१—४—४ १—५—५ ४—१४—१४ ७—४—११

नरकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु

नामकर्म ९३

१—४—९ २—५—९ ४—१४—१४ ८—४—१४

नरकगति, तिर्यग्गति मनुष्यगति देवगति

१—२—९ १—२—९ १—२—९ १—२—९ ८—१४—१४

एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय

४—१३—१४ ८—४—१४ ७—६—१४

औदारिकशरीर वैक्रियकशरीर आहारकशरीर

८—१३—१४ ७—१३—१४

तैजस शरीर, कार्मणशरीर,

४—१३—१४ ८—४—१४ ७—६—१४

औदारिकाङ्गोपाङ्ग, वैक्रियकाङ्गोपाङ्ग, आहारकाङ्गोपाङ्ग

४—१३—१४ ८—४—१४

औदारिकशरीरबन्धन, वैक्रियकशरीरबन्धन

७—६—१४ ८—१३—१४

आहारकशरीरबन्धन, तैजसशरीर बन्धन

८—१३—१४ ४—१३—१४ ८—४—१४

कार्माणशरीरबन्धन, औदारिकशरीरसंघात, वैक्रियकशरीरसंघात

७—६—१४ ८—१३—१४ ८—१३—१४

आहारकशरीरसंघात, तैजसशरीरसंघात, कार्मणशरीरसंघात

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

८–१३–१४	२–१३–१४	२–१३–१४	
समचतुरस्रसंस्थान,	न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान,	स्वातिसंस्थान	
२–१३–१४	२–१३–१४	१–१३–१४	
कुब्जक संस्थान,	वामनसंस्थान,	हुण्डकसंस्थान	
४–१३–१४	२–११–१४	२–११–१४	
वज्रर्षभनाराचसंहनन,	वज्रनाराचसंहनन,	नाराचसंहनन	
२–७–१४	–७–१४	१–७–१४	
अर्द्धनाराचसंहनन,	कीलकसंहनन,	असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन	
८–१३–१४	८–१३–१४	८–१३–१४	८–१३–१४
कृष्णवर्ण,	नीलवर्ण,	रक्तवर्ण,	पीतवर्ण
८–१३–१४	८–१३–१४	८–१३–१४	८–१३–१४
श्वेतवर्ण,	सुरभिगन्ध,	दुरभिगन्ध.	तिक्तरस,
८—१३—१४	८—१३—१४	८—१३—१४	८—१३—१४
कटुकरस,	कषायितरस,	आम्लरस,	मधुररस
८—१३—१४	८—१३—१४	८—१३—१४	८—१३—१४
कर्कशस्पर्श,	मृदुस्पर्श,	गुरुस्पर्श,	लघुस्पर्श
८—१३—१४	८—१३—१४	८—१३—१४	८—१३—१४
शीतस्पर्श,	उष्णस्पर्श,	स्निग्धस्पर्श,	रूक्षस्पर्श
१—४—६	२—४—६	४—४—१४	
नरकगत्यानुपूर्वी,	तिर्यग्गत्यानुपूर्वी,	मनुष्यगत्यानुपूर्वी	
८—४—१४	८—१३—१४	८—१३—१४	८—१३—१४
देवगत्यानुपूर्वी,	अगुरुलघु,	उपघात,	परघात
८—१३—१४	१—१—६	२—५—६	८—१३—१४
उच्छ्वास,	आतप,	उद्योत,	प्रशस्तविहायोगति
२—१—१४	८—१४—१४	८—१४—१४	
अप्रशस्तविहायोगति,	त्रसनामकर्म,	बादर	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

८–१४–१४	८–१३–१४	८–१३–१४	८–१३–१४
पर्याप्ति,	प्रत्येकशरीर,	स्थिर,	शुभ
७–१४–१४	८–१४–१४	९–१४–१४	१०–१४–१४
सुभग,	सुस्वर,	आदेय,	यश:कीर्ति
८–१३–१४	८–१३–१४	१–२–९	१–१–९
निर्माण,	तीर्थंकर,	स्थावर,	सूक्ष्म
१—१—९	१—१—९	६—१३—१४	६—१३—१४
अपर्याप्ति,	साधारण,	अस्थिर,	अशुभ
२—४—१४	२—१३—१४	२—४—१४	६—४—१४
दुर्भग,	दु:स्वर,	अनादेय,	अयश:कीर्ति

गोत्रकर्म २

१०—१४—१४	२—५—१४
उच्चगोत्र,	नीचगोत्र

अन्तरायकर्म ५

१०—१२—१२	१०—१२—१२	१०—१२—१२
दानान्तराय,	लाभान्तराय,	भोगान्तराय,
१०—१२—१२	१०—१२—१२	
उपभोगान्तराय,	वीर्यान्तराय	

बन्ध व्युच्छित्तिकी प्रवाचना

सोलस पणवीस णाभं दस चउ छक्केक्क बन्धवोच्छिण्णा ।
दुग तीस चदुरपुव्वे पण सोलस जोगिणो एक्को ॥
मिच्छत्तहुडसढासपत्तोयक्खथावरादाव ।
सुहुमतिय वियलिंदी णिरयदुणिरयाउगं मिच्छे ॥
विदियगुणे अणथीणतिदुभगतिसंठाणसंहृदिचउक्कं ।
दुग्गमणित्थीणीचं तिरियदुगुज्जोवनिरियाऊ ॥
अयदे विदियकसाया वज्ज ओरालमणुदुमणुवाऊ ।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

देसे तदियकसाया णियमेणिह बन्धवोच्छिण्णा ॥
छट्ठे अथिरं असुहं असादमजसं च अरदिसोगं च ।
अपमत्ते देवाऊ णिट्ठवर्णं चेव अत्थित्ति ॥
मरणूणम्हि णियट्टीपढमे णिद्दा तहेव पयला य ।
छट्ठे भागे तित्थं णिमिणं सग्गमणपंचिंदी ॥
तेजदुहारदु समचउसुरवण्णागुरुचउक्क तसणवय ।
चरमे हस्सं चरदी भयं जुगुच्छा य बन्धवोच्छिण्णा ॥
पुरिसं चदुसंजलणं कमेण अणियट्टिपंचभागेसु ।
पढम विग्घं दंसण चउ जस उच्चं च सुहुमंते ॥
उवसंत खीणमोहे जोगिम्मि य समयिट्ठिदी साद ।
णायव्वो पयडीणं बन्धस्संतो अणंतो य ॥

उदयव्युच्छित्तको प्रवाचना

पण णव इगि सत्तरसं अड पंच च चउर छक्क छच्चेव ।
इगि दुग सोलस तीस बारस उदये अजोगंता ॥
मिच्छे मिच्छादावं सुहुमतियं सासणे अणे इंदी ।
थावर वियलं मिस्से, मिस्स च य उदयवोच्छिण्णा ॥
अयदे विदियकसाया वेगुव्वियछक्कणिरयदेवाऊ ।
मणुयतिरियाणुपुव्वी दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥
देसे तदियकसाया तिरयाउज्जोवणीचतिरियगदी ।
छट्ठे आहारदुगं थीणतिय उदयवोच्छिण्णा ॥
अपमत्ते सम्मत्तं अंतिमतियसंहदी यऽपुव्वम्हि ।
छच्चेव णोकसाया अणियट्टीभागभागेसु ॥
वेदतिय कोहमाणं माया संजलणमेव सुहुमते ।
सुहुमो लोहो संते, वज्जणाराय णारायं ॥
खीणकसायदुचरिमे णिद्दा पयलवि उदयवोच्छिण्णा ।
णाणंतरायदसयं दसणचत्तारि चरिमम्हि ॥

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

तिरियेक्कवज्जणिमिणं थिरसुहसरगदिउरालतेजदुगं ।
संठाणं वण्णागुरुचउक्क पत्तेय जोगिम्हि ॥
तदियेक्कं मणुवगदी पंचिंदियसुभगतसतिगादेज्जं ।
जसतित्थं मणुवाऊ उच्चं च अजोगिचरिमम्हि ॥

सत्त्वव्युच्छित्तिकी प्रथाचना

णिरयतिरिक्खसुराउगसत्ते णहि देससयलखवगा ।
अयदचउक्कं तु अण अणियट्टीकरणचरिमम्हि ॥
जुगवं संजोगित्ता पुणोवि अणियट्टिकरणबहुभागं ।
वोलिय कमसो मिच्छं मिस्सं सम्मं खवेदि कमे ॥
सोलट्ठेक्किगि छक्कं चदुसेक्कं बादरे अदो एक्कं ।
खीणे सोलसऽजोगे बायत्तरि तेरुवत्ताते ॥
णिरयतिरिक्खदु वियलं थीणतिगुज्जोवतावएइंदी ।
साहरणसुहुमथावर सोलं मज्झिमकसायट्ठं ॥
संढित्थि छक्कसाया पुरिसो कोहो य माण मायं च ।
थूले सुहुमे लोहो, उदयं वा होदि खीणम्हि ॥
देहादी फस्संता थिरसुहसरसुरविहायदुग दुभगं ।
णिमिणाजसणादेज्जं पत्तेयापुण्ण अगुरुचऊ ॥
अणुदयतदियं णीचमजोगिदुचरिमम्हि सत्तवोच्छिण्णा ।
उदयगबार णराणू तेरस चरिमम्हि वोच्छिण्णा ॥

मार्गणाओंमें कर्मस्थान घटित करनेके लिये कूछ ज्ञातव्य

१—चतुर्थ गुणस्थानसे लेकर अपूर्वकरण गुणस्थानके छठे भाग तकके मनुष्य ही केवली श्रुतकेवलीके निकट तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध कर सकते हैं। (सम्मेव तित्थबन्धो)

२—अप्रमत्तविरतसे लेकर अपूर्वकरण गुणस्थानके छठे भाग तकके मुनि ही आहारक शरीर व आहारकाङ्गोपाङ्गका बन्ध कर सकते हैं। (आहारदुग पमादरहिदेसु)

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

३—मिश्रगुणस्थानमें निर्वृत्यपर्याप्तकके मिश्रकाययोगमें किसी भी आयुका बन्ध नहीं होता है। (मिस्सूणे आउस्सय)

४—नरकगतिमें एकेन्द्रिय, स्थावर, आतप, सूक्ष्मत्रिक, विकलत्रिक, नरकद्विक, नरकायु, सुरचतुष्क, देवायु, आहारकद्विक ये १९ प्रकृतियाँ बन्ध के अयोग्य हैं। (उवरिम वारस सुरचउसुराउ आहारयमबंधा)

५—पहिले नरकमें पर्याप्त अपर्याप्त दोनों अवस्थाओंमें तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध सम्भव है। (घम्मे तित्थ बधदि)

६—चौथे, पाचवे, छठे, सातवें नरकमें तीर्थङ्कर प्रकृतिका बन्ध कभी भी सम्भव नहीं है, अतः इन नरकोंमें तीर्थङ्कर प्रकृति भी बन्धके अयोग्य है

७—दूसरे तीसरे नरकमें पर्याप्त जीवके ही तीर्थङ्कर प्रकृतिका बन्ध सम्भव है, अपर्याप्तके नहीं। वंसामेघाण पुण्णगोचेव)

८—सातवें नरकमें तिर्यगायुका ही बन्ध होता है, अतः मनुष्यायु भी बन्धके अयोग्य है। (छट्ठोत्तिय मणुवाऊ) तथा

सातवें नरकमें तीसरे चौथे गुणस्थानमें ही उच्चगोत्र व मनुष्यद्विक का बन्ध है, पहिले दूसरे गुणस्थानमें नहीं। (मिच्छा सासणसम्मा मणुवदुगुच्चं ण बधंति)

९—सातवें नरकमें अपर्याप्तमें तीर्थङ्कर,मनुष्यायु उच्चगोत्र, मनुष्यद्विक व तिर्यगायु ये ६ प्रकृतियाँ भी बन्धके अयोग्य हैं।

१०—तिर्यञ्चगतिमें तीर्थङ्कर व आहारकद्विक बन्धके अयोग्य हैं। (तिरिये ओघो तित्थाहारूणो)

११—तिर्यञ्चगतिके निर्वृत्यपर्याप्तमें तीर्थङ्कर, आहारकद्विक, आयु ४, नरकद्विक ये ९ प्रकृतियां बन्धके अयोग्य हैं।

१२—तिर्यञ्चगति व मनुष्यगतिमें तीसरे आदि गुणस्थानमें तिर्यञ्च व मनुष्यगति सम्बन्धित प्रकृतियोंका बन्ध नहीं होता है, इस कारण चौथे गुणस्थानमें कही गई १० बन्धव्युच्छिन्न प्रकृतियोंमें से वज्रवृषभनाराचसंहनन, औदारिकद्विक, मनुष्यद्विक, मनुष्यायु इन ६ प्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्ति

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

दूसरे गुणस्थानमें हो जाती है सो दूसरे गुणस्थानमें २५+६=३१ बन्ध-व्युच्छिन्न हो जाती हैं। (अविरदे छिदी चउरो। उवरिमछण्ह च छिदी सासणसम्मे हवे णियमा)।

१३—लब्धपर्याप्त तिर्यञ्च, मनुष्य, एकेन्द्रिय, दोइन्द्रिय, तीनइन्द्रिय चारइन्द्रिय व पंचेन्द्रियमें तीर्थङ्कर, आहारकद्विक, देवायु, नरकायु, वैक्रियक षट्क ये ११ प्रकृतियां बन्धके अयोग्य हैं। (सुरणिरयाउ अपुण्णे वेगुव्विय-छक्कमवि णत्थि)

१४—निर्वृत्यपर्याप्त सामान्य, पर्याप्त, मानुषीमें आयु ४, नरक-द्विक, आहारकद्विक, ये ८ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं।

१४—देवगतिमें सूक्ष्मत्रिक, विकलत्रिक, नरकद्विक, नरकायु, सुर-चतुष्क, देवायु, आहारकद्विक ये १६ प्रकृतियां बन्धके अयोग्य हैं।

१६—भवनत्रिकमें व कल्पवासिनी देवियोंमें तीर्थङ्कर प्रकृति भी बन्ध के अयोग्य है। (भवणतिये णत्थि तित्थयरं, कप्पित्थिसु ण तित्थं)

१७—निवृत्यपर्याप्त भवनत्रिक व कल्पवासिनी देवियोंमें तिर्यगायु व मनुष्यायु भी बन्धके अयोग्य है।

१८—दूसरे स्वर्गसे ऊपरके देवोंमें स्थावर, एकेन्द्रिय, आतप भी बन्धके अयोग्य है।

१९—१२वें स्वर्गसे ऊपरके देवोंमें शतारचतुष्क भी बन्धके अयोग्य है। (सदरसस्साहरगोत्ति तिरियदुगं तिरियाऊ उज्जोवो)

२०—प्रथमसे १२वें स्वर्ग तक निर्वृत्यपर्याप्तमें तिर्यगायु, मनुष्य यु भी बन्धके अयोग्य हैं।

२१—बारहवें स्वर्गसे ऊपरके निर्वृत्यपर्याप्त देवोंमें मनुष्यायु भी बन्धके अयोग्य है।

२२—अनुदिश व अनुत्तरविमानवासी देवोंमें प्रथमद्वितीयतृतीयगुण-स्थानबन्धव्युच्छिन्न ४१, सुरचतुष्क, देवायु, आहारकद्विक ये ४८ प्रकृतियां बन्धके अयोग्य हैं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

२३—एकेन्द्रिय, दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रियमें तीर्थंकर, आहारक-द्विक, देवायु, नरकायु, वैक्रियकषट्क ये ११ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं। (सुरणिरया उ अपुण्णे वेगुव्वियछक्कमवि णत्थि)

२४—एकेन्द्रिय, दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवोंके निर्वृत्यपर्याप्त अवस्थामें ही दूसरा गुणस्थान पहिलेके संज्ञी पञ्चेन्द्रियके भवकी लगार वाला सम्भव है सो वह भी पर्याप्त होनेसे पहिलेही अपर्याप्तमें समाप्त हो जाता है।

२५—अग्निकाय व वायुकायमें मनुष्यद्विक, मनुष्यायु व उच्चगोत्र ये ४ प्रकृतियाँ भी बन्धके अयोग्य हैं। मणुवदुगमणुवाऊ उच्चं णहि तेउ-वाउम्हि)

२६—औदारिक मिश्रकाययोगमें नरकायु, देवायु, आहारकद्विक व नरकद्विक ये ६ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं।

२७—औदारिक मिश्रकाययोगमें देवचतुष्कका बन्ध पहिले दूसरे गुण स्थानमें न होकर चौथे गुणस्थानमें ही होता है, यही बात तीर्थंकर प्रकृति बन्धकी है जो आम नियमसे सिद्ध है।

२८—वैक्रियकमिश्रकाययोगमें देवगतिकी बन्धायोग्य १६, मनुष्यायु, तिर्यगायु ये १८ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं।

२९—कार्माणकाययोग व अनाहारकमें आयु ४, आहारकद्विक नरक-द्विक ये ८ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं।

३०—अपगतवेदमें ८ गुणस्थान तककी बन्धव्युच्छिन्न ९८ व पुरुषवेद ये ९९ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं।

३१—पुरुषवेदनिर्वृत्यपर्याप्तमें आयु ४, आहारकद्विक, नरकद्विक ये ८ प्रकृतियां बन्धके अयोग्य हैं।

३२—स्त्रीवेद निर्वृत्यपर्याप्तमें आयु ४, आहारकद्विक, तीर्थंकर, वैक्रियकषट्क ये १२ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं।

३३—नपुंसकवेद, निर्वृत्यपर्याप्तमें आयु ४, आहारकद्विक, वैक्रियक-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

षट्क ये १२ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं।

३४—क्षायिक सम्यग्दृष्टि तीर्थङ्करप्रकृतिकबन्धक यदि पूर्वबद्ध आयुवश प्रथम नरकमें जन्म लेता है तो उस नरकमें नपुंसकवेद निर्वृत्यपर्याप्तिमें भी तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध होता रहता है।

३५—कृष्ण, नील लेश्यामें तीर्थंकर, आहारकद्विक ये ३ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं। यदि कृष्ण नील लेश्यामें किसीके तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध सम्भव हो तो उस कृष्ण नील लेश्यामें केवल आहारकद्विक बन्धके अयोग्य हैं वहाँ रचना कपोत लेश्यावत् जानना।

३६—कपोत लेश्यामें आहारकद्विक बन्धके अयोग्य हैं।

३७—पीतलेश्यामें मिथ्यात्व गुणस्थानव्युच्छिन्न अन्तिम ९ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं। (मिच्छस्सतिम णवयं ण)

३८—पद्मलेश्यामें मिथ्यात्वगुणस्थानव्युच्छिन्न अन्तिम १२ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं। (मिच्छस्संतिम वारं ण)

३९—शुक्ललेश्यामें मिथ्यात्वगुणस्थानव्युच्छिन्न अन्तिम १२ प्रकृतियाँ व शतारचतुष्क ये १६ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य है। (सुक्के सदरचउक्कं वामंतिमवारसं च णवि अत्थि)

४०—अभव्यमें तीर्थंकर आहारकद्विक ये तीन प्रकृतियां बन्धके अयोग्य हैं।

४१—उपशमसम्यक्त्वमें प्रथमद्वितीयगुणस्थानव्युच्छिन्न ४१, मनुष्यायु देवायु ये ४३ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य हैं। (सव्बुवणम्मे णरसुर आऊणि णत्थि णियमेण)

४२—आहारकद्विकका उदय छठे गुणस्थानमें ही होता है।

४३—तीर्थंकर प्रकृतिका उदय १३वें,१४वें गुणस्थानमें ही होता है।

४४—सम्यक्प्रकृतिका उदय चौथे गुणस्थानसे लेकर ७वें गुणस्थान तक क्षयोपशमसम्यग्दृष्टिके ही होता है।

४५—सासादन गुणस्थानमें मर कर जीव नरकगतिमें जन्म नहीं

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

लेता, इस कारण दूसरे गुणस्थानमें नरकगत्यानुपूर्वी का उदय नहीं होता।

४६–आतप नामकर्मका उदय वादर पृथ्वीकायिक जीवके ही होता है

४७–उद्योत नामकर्मका उदय अग्नि, वायु व साधारण वनस्पतिको छोड़कर अन्य वादर पर्याप्त तिर्यञ्चके होता है।

४८–नरकगतिमें स्त्यानगृद्धित्रिक, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, स्थावरद्विक, तिर्यग्द्विक, आतपद्विक, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, साधारण, मनुष्यायु, देवायु, तिर्यगायु, मनुष्यद्विक, उच्चगोत्र, देवद्विक, प्रशस्तविहायोगति, तीर्थंकर, अपर्याप्ति, संहनन ६, औदारिकद्विक, आहारकद्विक, आदिके ६ संस्थान, सुभगचतुष्क ये ४६ प्रकृतियां बन्धके अयोग्य हैं।

४९—तिर्यग्गतिमें देवायु, नरकायु, मनुष्यायु, उच्चगोत्र, मनुष्यद्विक आहारकद्विक, वैक्रियकषट्क, तीर्थंकर ये १५ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं। (तिरिये ओघो सुरणरणिरयाऊ उच्च मणदुहारदुगं। वेगुब्ब)

५०—पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चमें स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक तथा तिर्यग्गतिकी उदयायोग्य १५ ये २३ प्रकृतियाँ उदय के अयोग्य हैं। (थावरदुगसाहारणताविगिविगलूण ताणि पंचक्ख)

५१– पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यञ्चमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चकी उदयायोग्य २३ व स्त्रीवेद, अपर्याप्ति ये २५ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (इत्थिअपज्जत्तूणा ते पुण्णे उदयपपडीओ)

५२—योनिमती तिर्यञ्चमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चकी उदयायोग्य २३, पुरुषवेद, नपुंसकवेद व अपर्याप्ति ये २६ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

५३–लब्ध्यपर्याप्ति पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चकी उदयायोग्य २३ व पर्याप्ति, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, स्त्यानत्रिक, परघातद्विक, उद्योत, स्वरद्विक, गमनद्विक, यशःकीर्ति, आदेय, आदिके ५ संस्थान, आदिके ५ सहनन, सुभग, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति ये ५१ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

५४—भोगभूमिज तिर्यञ्चोंमें स्थावर, सूक्ष्म, मनुष्यद्विक, आतप,

Report any errors at vikasnd@gmail.com

एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, साधारण, नरकायु, मनुष्यायु, देवायु, वैक्रियकषट्क दुर्भगचतुष्क, उच्चगोत्र, नपुंसकवेद, स्त्यानत्रिक, अप्रशस्तविहायोगति, तीर्थङ्कर, अपर्याप्ति, अन्तिम ५ संस्थान, अन्तिम ५ संहनन, आहारकद्विक ये ४३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

५५—मनुष्यगतिमें स्थावरद्विक, तिर्यग्द्विक, आतपद्विक, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, साधारण, नरकायु तिर्यगायु, देवायु, वैक्रियकषट्क ये २० प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

५६—पर्याप्त मनुष्यमें मनुष्यगतिकी उदयायोग्य २०, स्त्रीवेद, अपर्याप्ति ये २२ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

५७—मानुषीमें मनुष्यगतिकी उदयायोग्य २०, अपर्याप्ति, तीर्थंकर, आहारकद्विक, पुरुषवेद, नपुंसकवेद ये २६ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

५८—निर्वृत्य पर्याप्त सामान्य मनुष्यमें मनुष्यगतिकी उदयायोग्य २० व सम्यग्मिथ्यात्व, अपर्याप्ति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी ये २३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

५९—लब्धपर्याप्त मनुष्यमें मनुष्यगतिकी उदयायोग्य २०, उच्चगोत्र, आहारकद्विक, तीर्थंकर, पर्याप्ति, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, स्त्यानत्रिक, परघातद्विक स्वरद्विक, गमनद्विक, यशःकीर्ति, आदेय, आदिके ५ संस्थान, आदिके ५ संहनन, सुभग, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति ये ५१ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य है

६०—भोगभूमिज मनुष्यमें मनुष्यगतिकी उदयायोग्य २०, दुर्भगचतुष्क, नीचगोत्र, नपुंसकवेद, स्त्यानत्रिक, अप्रशस्तविहायोगति, तीर्थंकर, अपर्याप्ति, अन्तिम ५ संस्थान, अन्तिम ५ संहनन, आहारकद्विक ये ४४ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

६१—देवगतिमें स्थावरद्विक, तिर्यग्द्विक, आतपद्विक, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, साधारण, नरकायु, मनुष्यायु, तिर्यगायु, मनुष्यद्विक नरकद्विक, दुर्भगचतुष्क, नीचगोत्र, नपुंसकवेद, स्त्यानत्रिक, अप्रशस्तविहायोगति, तीर्थंकर, अपर्याप्ति, संहनन ६, आहारकद्विक, औदारिकद्विक, अन्तके ५

http://sahjanandvarnishastra.org/

संस्थान ये ४५ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं ।

६२–देवमें स्त्रीवेदका उदय नहीं, देवाङ्गनामें पुरुषवेदका उदय नहीं, अतः देवमें या देवीमें अलग अलग लगाया जावे तो ४६ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं ।

६३—अनुदिश और अनुत्तरोंमें देवगति सम्बन्धी उदयायोग्य ४५, स्त्रीवेद, मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी ४, मिश्रप्रकृति ये ५२ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं ।

६४—एकेन्द्रियमें सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नरकायु, मनुष्यायु, देवायु, वैक्रियकषट्क, विकलत्रिक, आहारकद्विक, औदारिकाङ्गोपाङ्ग आदिके ५ संस्थान, संहनन ६, मनुष्यद्विक, विहायोगति-द्विक, त्रस, स्वरद्विक, तीर्थंकर, उच्चगोत्र पचेन्द्रिय, सुभग, आदेय, ये ४२ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं ।

६५—द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रियमें सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नरकायु, मनुष्यायु, देवायु, वैक्रियकषट्क. एकेन्द्रिय, २ विकलजाति (अपनी जाति छोड़ कर बाकी २) आहारकद्विक, आदिके ५ संस्थान, आदिके ५ संहनन, मनुष्यद्विक, प्रशस्तविहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म सुस्वर, तीर्थंकर, उच्चगोत्र, पचेन्द्रिय, साधारण, आतप, सुभग, आदेय ये ४१ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं ।

६६—पंचेन्द्रियमें साधारण, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, आतप, स्थावर, सूक्ष्म ये ८ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं ।

६७—पृथ्वीकायमें एकेन्द्रियकी उदयायोग्य ४२ व साधारण ये ४३ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं ।

६८—जलकायमें एकेन्द्रियकी उदयायोग्य ४२, साधारण व आतप ये ४४ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं ।

६९—अग्निकाय व वायुकायमें एकेन्द्रियकी उदयायोग्य ४२ साधा-रण, आतप, उद्योत ये ४५ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

७०—वनस्पतिकायमें एकेन्द्रियकी उदयायोग्य ४२ व आतप ये ४३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

७१—त्रसकायमें स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, एकेन्द्रिय, आतप ये ५ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं। (ओघं तसे ण थावरदुग साहरणेय ताव)

७२—सत्य असत्य उभय अनुभय मनोयोगमें सत्य असत्य उभय वचन-योगमें आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, स्थावरचतुष्क, आनुपूर्व्यचतुष्क ये १३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (मणवयणसत्तगे ण हि ताविलगविगलं च थावराणुचऊ)

७३—अनुभयवचनयोगमें आतप, एकेन्द्रिय, स्थावरचतुष्क, आनुपूर्व्य चतुष्क ये १० प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (अणुभयवचि वियलजुदा)

७४—औदारिककाययोगमें देवायु, नरकायु, आहारकद्विक, वैक्रियक-षट्क, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यंग्गत्यानुपूर्वी व अपर्याप्त ये १३ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं। (ओघमुराले ण हारदेवाऊ। वेगुव्वछक्कणरतिरियाणु अपज्जत्त णिरयाऊ)

७५—औदारिकमिश्रकाययोगमें देवायु, नरकायु, आहारकद्विक, वैक्रियकषट्क, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यंग्गत्यानुपूर्वी, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्यानत्रिक, स्वरद्विक, गमनद्विक, परघातचतुष्क ये २४ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (तम्मिस्से पुण्णजुदा ण मिस्स थीणतियसरविहायदुग, परघातचओ)

७६—औदारिक मिश्रकाययोगीके चतुर्थ गुणस्थानमें अनादेयद्विक, दुर्भग, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद इनका उदय सम्भव नहीं, अतः ये ५ प्रकृतियां सासादनमें ही उदयव्युच्छिन्न हो जाती हैं। (अयदे, णादेज्जदुदुब्भगं ण षंडित्थी)

७७—वैक्रियक काययोगमें स्थावरद्विक, तिर्यग्द्विक, आतपद्विक, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, साधारण, मनुष्यायु, तिर्यगायु, मनुष्यद्विक, देवगत्यानुपूर्वी, नरकगत्यानुपूर्वी, स्त्यानत्रिक, तीर्थंकर, अपर्याप्ति, सहनन ६, आहारकद्विक, औदारिकद्विक, बीचके ४ सस्थान ये ३६ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य

Version 1

हैं। (देवोघं वा वेगुव्वे, ण सुराणू पक्खिवेज्ज णिरियाऊ, णिरयगदिहुंडषंढे दुग्गदि दुब्भगचओ णीचं)

७८— वैक्रियकमिश्रकाययोगमें वैक्रियकाययोगको उदयायोग्य ३६ व सम्यग्मिथ्यात्व, परघातद्विक, स्वरद्विक, गमनद्विक ये ४३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (वेगुव्वं वा मिस्से, ण मिस्स परघादसरविहायदुगं)

७९—चूंकि सासादन गुणस्थानमें मर कर जीव नरकगतिमें नहीं जाता, अत: वैक्रियकमिश्रकाययोगीके सासादनमें हुण्डक सस्थान, नपुंसकवेद दुर्भग, अनादेय, अयशःकीर्ति, नरकगति, नरकायु, नीचगोत्र इन ८ का भी अनुदय है. असंयतमें फिर इनका उदय हो जाता है। (सासे ण हुडषंढं, दुब्भगणादेज्जअज्जसयं)

८०—आहारक काययोगमें १ से ५ तक गुणस्थानकी उदयव्युच्छिन्न ४०, तीर्थंकर, स्त्यानत्रिक, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, अप्रशस्तविहायोगति, दुःस्वर, संस्थान ६, औदारिकद्विक, अन्तके ५ संस्थान, ये ६१ प्रकृतियाँ उदय के अयोग्य हैं। (छट्ठगुणं वाहारे ण थीणतियषंढथीवेदं दुग्गदिदुस्सरसंहादि ओरालदु चरिमपंचसंठाणं)

८१—आहारकमिश्रकाययोगमें आहारककाययोगकी उदयायोग्य ६१, सुस्वर, परघातद्विक, प्रशस्तविहायोगति ये ६५ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (ते तम्मिस्से सुस्सर परघादुदुसत्थगदिहीणा)

८२—कार्माणकाययोगमें स्वरद्विक, गमनद्विक, प्रत्येकद्विक, आहारक द्विक, औदारिकद्विक, सम्यग्मिथ्यात्व, उपघातपंचक, वैक्रियकद्विक, स्त्यान-त्रिक, सस्थान ६, संहनन ६ ये ३३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (ओघं कम्मे सरगदिपत्तेयाहारुराल दुग मिस्सं। उवघादपणविगुव्वदु थीणति सठाणसंहदी णत्थि)

८३—पुरुषवेदमें स्थावरचतुष्क, नरकद्विक, तीर्थंकर, एकेन्द्रिय, विकल-त्रिक, वेदद्विक, आतप, नरकायु, ये १५ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (मूलोघ पुंवेदे थावरचउणिरयजुगलतित्थयरं। इगिविगलं थीषंढं तावंणि-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

ग्याउगं णत्थि)

८४—स्त्रीवेदमें स्थावरचतुष्क, नरकद्विक तीर्थङ्कर, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, आतप, नरकायु, आहारकद्विक ये १७ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (इत्थीवेदेवि तह्लाहारदुपुरिसूण मित्थिसंजुत्तं)

८५—नपुंसकवेदमें देवद्विक, आहारकद्विक, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, देवायु तीर्थङ्कर ये ८ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (ओघं षढे सुरहारदुथीपुंसुराउतित्थयरं)

८६—अपगतवेदमें ८ गुणस्थानकी उदयव्युच्छिन्न ५५ व तीन वेद ये ५८ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

८७—क्रोधमें तीर्थङ्कर, मान ४, माया ४, लोभ ४, ये १३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

८८—अनन्तानुबन्धी रहित क्रोधी मिथ्यात्वमें एकेन्द्रिय, विकलत्रय, आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्ति, साधारण—२, आनुपूर्वी ४, आहारकद्विक, तीर्थङ्कर, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति, अनन्तानुबन्धी ४, अप्रत्याख्यानावरण ३, प्रत्याख्यानावरण ३, संज्वलन ३ ये ३१ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

८९—अनन्तानुबन्धी क्रोधमें तीर्थङ्कर, आहारकद्विक, मिश्रप्रकृति, सम्यक्प्रकृति, मान ४, माया ४, लोभ ४ ये १७ प्रकृतिया उदयके अयोग्य है।

९०—अनन्तानुबन्धी विसंयोजित क्रोधमें तीर्थङ्कर, अनन्तानुबन्धी ४, अप्रत्याख्यानावरण मान माया लोभ, प्रत्याख्यानावरण मान माया लोभ, सज्वलन मान माया लोभ, आनुपूर्वी ४, आतप, सूक्ष्म अपर्याप्ति, साधारण, एकेन्द्रिय, स्थावर, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, ये २७ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

९१—अनादेयरहित अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें प्रथम द्वितीय गुणस्थानकी उदयव्युच्छिन्न १४, तीर्थङ्कर, आहारकद्विक, अप्रत्याख्यानावरण

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

मान माया लोभ, प्रत्याख्यानावरण मान माया लोभ संज्वलन मान माया लोभ ये २६ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

९२—अन० व अप्रत्या० रहित प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें प्रथम ४, गुणस्थानोंकी उदयव्युच्छिन्न ३२ तीर्थङ्कर, आहारकद्विक, प्रत्याख्यानावरण मान माया लोभ, संज्वलन मान माया लोभ, ये ४१ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

९३—अन० अप्रत्या० प्रत्या० रहित संज्वलन क्रोधमें प्रथम ५ गुणस्थानोंकी उदयव्युच्छिन्न, ४०, तीर्थंकर संज्वलन मान, माया, लोभ ये ४४ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

९४—अकषायमें प्रथम १० गुणस्थानोंकी उदयव्युच्छिन्न ६२ प्रकृतिया उदयके अयोग्य हैं।

९५—कुमतिज्ञान व कुश्रुतज्ञानमें तीर्थंकर, आहारकद्विक, मिश्र व सम्यक्प्रकृति ये ५ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

९६—कुअवधिज्ञानमें सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति,तीर्थंकर, आहारकद्विक, आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, स्थावरचतुष्क, आनुपूर्वी ४ ये १८ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं। (वेभगेवि ण ताविगिविगलिंदी थावराणुचऊ)

९७—मिश्रमति व मिश्रश्रुत ज्ञान व मिश्र अवधिज्ञानमें प्रथमद्वितीयगुणस्थानव्युच्छिन्न १४, आनुपूर्वी ४, तीर्थंकर, आहारकद्विक, सम्यक्प्रकृति ये २२ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

९८—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान व अवधिज्ञानमें प्रथमद्वितीयतृतीयगुणस्थानव्युच्छिन्न १५ व तीर्थंकर ये १६ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

९९—मन:पर्ययज्ञानमें प्रथम ५ गुणस्थानोंकी उदयव्युच्छिन्न ४०, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, तीर्थंकर, आहारकद्विक ये ४५ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (मणपज्जयपरिहारे णवरिण षंढित्थि हारदुगं)

१००—केवलज्ञानमें १२ तकके गुणस्थानोंकी उदयव्युच्छिन्न ८० प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

१०१—सामायिक व छेदोपस्थापनामें ५ गुणस्थानतककी उदयव्युच्छिन्न ४० व तीर्थंकर ये ४१ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

१०२—परिहार विशुद्धिमें ५ गुणस्थान तककी उदयव्युच्छिन्न ४०, आहारकद्विक, तीर्थंकर, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद ये ४५ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

१०३—सूक्ष्म साम्परायमें ९ गुणस्थान तककी उदयव्युच्छिन्न ६१ व तीर्थंकर ये ६२ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

१०४—यथाख्यात चारित्रमें १० गुणस्थान तककी उदयव्युच्छिन्न ६२ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

१०५—चक्षुर्दर्शनमें साधारण, आतप, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म, तीर्थंकर, ये ८ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

१०६—अचक्षुर्दर्शनमें तीर्थंकर प्रकृति १ उदयके अयोग्य है।

१०७—अवधिदर्शनमें प्रथमद्वितीयतृतीयगुणस्थान व्युच्छिन्न १५ व तीर्थंकर प्रकृति ये १६ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

१०८—कृष्ण व नीललेश्यामें तीर्थंकर, आहारकद्विक ये ३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

१०९—कृष्ण व नील लेश्यामें मिथ्यात्व गुणस्थानमें नरकगत्यानुपूर्वीकी भी उदयव्युच्छित्ति हो जाती है एवं सासादनगुणस्थानमें देवायु, देवद्विक, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी इन ४ प्रकृतियोंकी भी उदयव्युच्छित्ति हो जाती है।

११०—कपोतलेश्यामें तीर्थंकर आहारकद्विक ये ३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

१११—पीत व पद्मलेश्यामें आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, स्थावरचतुष्क, नरकद्विक, नरकायु, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, तीर्थंकर ये १४ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं।

११२—शुक्ललेश्यामें आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, स्थावरचतुष्क,

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

नरकद्विक, नरकायु, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी ये १३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (णादाविगिविगलथावरचउक्क । णिरयदुतदाउ तिरियाणुगण)

११३—शुक्ललेश्यामें मनुष्यगत्यानुपूर्वीका प्रथम द्वितीय गुणस्थानमें अनुदय है, असंयत गुणस्थानमें उदय हो जाता है। (मिश्र गुणस्थानमें तो आनुपूर्वीका उदय होता ही नहीं)

११४—अभव्यमें तीर्थंकर पञ्चक उदयके अयोग्य हैं।

११५—उपशमसम्यक्त्वमें प्रथमद्वितीयतृतीय गुणस्थानकी उदयव्युच्छिन्न १५, तीर्थंकर, आहारकद्विक, सम्यक्प्रकृति, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी ये २२ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

११६—क्षायोपशमिकसम्यक्त्वमें तीन गुणस्थानकी उदय-व्युच्छिन्न १५, तीर्थंकर प्रकृति ये १६ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

११७—क्षायिकसम्यक्त्वमे ३ गुणस्थानकी उदयव्युच्छिन्न १५ व सम्यक्प्रकृति ये १६ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं।

११८—क्षायिकसम्यक्त्वके असंयत गुणस्थानमें तिर्यगायु, उद्योत व तिर्यग्गति इन ३ की भी उदयव्युच्छित्ति हो जाती है, क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च भोगभूमिज ही हो सकता है, जिसने कि पूर्व कर्मभूमिज मनुष्यभवमें क्षायिकसम्यक्त्व उत्पन्न करनेसे पहिले तिर्यगायु का बन्ध कर लिया था और किसी भी भोगभूमिज जीवके देशविरत गुणस्थान होता नहीं है।

११९—संज्ञीमें आतप, साधारण, स्थावर, सूक्ष्म, एकेन्द्रिय, विकलत्रिक, तीर्थंकर ये ९ प्रकृतियां उदयके अयोग्य हैं। (सण्णिस्स वि णत्थि ताव साहरणं। थावरसुहुमिगिविगलं)

१२०—असंज्ञीमें मनुष्यद्विक, उच्चगोत्र, वैक्रियकषट्क, आदिके ५ संस्थान, आदिके ५ संहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभगत्रिक, नरकायु, देवायु मनुष्यायु, तीर्थपञ्चक ये ३१ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (असण्णिणोवि य ण मणुदुच्च । वेगुव्वछ पणसंहदिसंठाण सुगमणसुभगआउतियं)

Report any errors at vikasnd@gmail.com

१२१—आहारकमें आनुपूर्वी ४ उदयके अयोग्य हैं। (आहारे सगुणोघ णवरि ण सव्वाणुपुव्वीओ)

१२२—अनाहारकमें कार्माणकाययोगवत् ३३ प्रकृतियाँ उदयके अयोग्य हैं। (कम्मेव अणहारे)

१२३—तीर्थङ्कर प्रकृतिकी सत्तावाले जीवके सासादन व मिश्रगुणस्थान नहीं हो सकता है।

१२४—आहारकद्विककी सत्तावाले जीवके सासादन गुणस्थान नहीं हो सकता।

१२५—देवायु छोड़कर अन्य किसी भी आयुका बन्ध हो गया हो तो वह जीव अणुव्रत व महाव्रत धारण नहीं कर सकता। (अणुवदमहव्वदाइं ण लहइ देवाउगं मोत्तु)

१२६—अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति इन सात सात सम्यक्त्वघातक प्रकृतियों का चौथे, पाँचवे, छटवें, सातवे गुणस्थानमें किसीमें भी उपशम व क्षय हो सकता है, उपशम श्रेणि वालोंके लिए दोनों सम्भव है, क्षपक श्रेणी वालोंके लिये क्षय ही है।

१२७—नरकायुका सत्त्व होनेपर देशव्रत, नरकायु, तिर्यंगायुका सत्त्व होने पर महाव्रत तथा नरकायु तिर्यंगायु देवायुका सत्त्व होने पर क्षपक श्रेणी नहीं होती। (णिरयतिरिक्ख सुराउगसत्ते ण हि देससयलवदखवगा)

१२८—नरकगतिमें देवायु सत्त्वके अयोग्य है। (णेरइये ण सुराऊ)

१२९—तीसरे नरकतक ही तीर्थंकर प्रकृतिका सत्त्व सम्भव है सो चौथे पांचवें छठे नरकमें देवायु तीर्थंकर ये २ प्रकृतियाँ सत्त्वके अयोग्य हैं। (तित्थमत्थि तदियोंत्ति)

१३०—छठे नरकतक ही मनुष्यायुका सत्त्व (बन्ध) सम्भव है सो सातवें नरकमें देवायु, तीर्थंकर, मनुष्यायु ये तीन प्रकृतियाँ सत्त्वके अयोग्य हैं। (छट्ठित्ति मणुस्साऊ)

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

१३१—तिर्यंग्गतिमें तीर्थंकर प्रकृतिका सत्त्व असम्भव है। (तिरिये ण तित्थ सत्तं)

१३२—लब्धपर्याप्ति तिर्यञ्च व मनुष्योंमें नरकायु, देवायु व तीर्थंकर ये तीन प्रकृतियाँ सत्त्वके अयोग्य हैं। (पुण्णिदरे णत्थि णिरयदेवाऊ)

१३३—देवगतिमें नरकायु सत्त्वके अयोग्य है। (देवे णहि णिरयाऊ)

१३४—बारहवें स्वर्गमें ऊपरके देवोंमें नरकायु, तिर्यञ्चायु ये दोनों सत्त्वके अयोग्य हैं। (मारोत्ति होदि तिरियाऊ)

१३५—भवनत्रिकमें तथा कल्पवासिनी देवियोंमें नरकायु, तीर्थंकर ये २ प्रकृतियां सत्त्वके अयोग्य हैं। (भवणतियकप्पवासिय इत्थीसु ण तित्थ-यरसत्तं)

१३६—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पृथ्वीकाय, जलकाय, वनस्पतिकायमें नरकायु, देवायु, तीर्थंकर ये ३ प्रकृतियां सत्त्वके अयोग्य हैं

१३७—अग्निकाय व वायुकायमें नरकायु, देवायु, मनुष्यायु व तीर्थं-कर ये ४ प्रकृतियां सत्त्वके अयोग्य हैं।

१३८—चारों गतिके संक्लिष्ट मिथ्यादृष्टि स्वस्थानी जो कि उद्वेलना करेंगे उनमें तीर्थंकर, नरकायु, देवायु ये तीन प्रकृतियाँ सत्त्वके अयोग्य हैं और ये आहारकद्विक, सम्यक्प्रकृति मिश्रप्रकृतिकी उद्वेलना कर सकेंगे।

१३९—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पृथ्वीकाय, जलकाय वनस्पतिकाय उत्पन्नस्थानी मिथ्यादृष्टिमें तीर्थंकर, नरकायु, देवायु ये तीन प्रकृतियाँ सत्त्वके अयोग्य हैं और ये जीव आहारकद्विक,सम्यक्प्रकृति, मिश्र-प्रकृति, देवद्विक,नारकचतुष्ककी उद्वेलना करेंगे। तथा ये ही सब स्वस्थानी उच्चगोत्र व मनुष्यद्विककी भी उद्वेलना करेंगे।

१४०—अग्निकाय, वायुकाय, उत्पन्नस्थानी मिथ्यादृष्टिमें तीर्थंकर, नर-कायु, मनुष्यायु, देवायु ये ४ प्रकृतियाँ सत्त्वके अयोग्य हैं और ये आहारक-द्विक, सम्यक्प्रकृति, मिश्रप्रकृति, देवद्विक, नारकचतुष्ककी उद्वेलना करेंगे। तथा ये ही स्वस्थानी उच्चगोत्र व मनुष्यद्विककी भी उद्वेलना करेंगे।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

१४१—आहारकद्विक, सम्यक्प्रकृति, मिश्रप्रकृति, देवद्विक, नारकचतुष्क उच्चगोत्र, मनुष्यद्विक ये १३ उद्वेलन प्रकृतियां हैं अर्थात् ये जैसे बन्धी थी वैसे ही उकलकर अन्यरूप परिणाम कर दूर हो जाती हैं।

१४२—पूर्वपर्यायमें बिना उद्वेलनाके जिनका सत्त्व था उन सहित उत्तर पर्यायमें उत्पन्न होनेपर उत्तर पर्यायमें उस सत्त्वको उत्पन्नस्थानसत्त्व कहते हैं।

१४३—विवक्षित पर्यायमें बिना उद्वेलना किये व उद्वेलनासे जो सत्त्व हो उसे स्थानसत्त्व कहते हैं।

१४४—औदारिकमिश्रकाययोगमें देवायु व नरकायु सत्त्वके अयोग्य हैं। (ओरालमिस्स जोगे ओघ सुरणिरय अउगं णत्थि)

१४५—वैक्रियक मिश्रकाययोगमें मनुष्यायु व तिर्यञ्चायु सत्त्वके अयोग्य हैं। (वेगुव्वियमिस्से विय णवरि माणुसतिरिक्खाऊ)

१४६—आहारककाययोग व आहारकमिश्रकाययोगमें नरकायु व तिर्यञ्चायु सत्त्वके अयोग्य हैं।

१४७—नपुंसकवेदी, स्त्रीवेदी क्षपकश्रेणी वालेके तीर्थंकर प्रकृतिका भी सत्त्व नहीं हैं। (षढथीखवगे ण तित्थयरसत्तं)

१४८—अनन्तानुबन्धी रहित मिथ्यादृष्टिमें तीर्थंकर, अनन्तानुबन्धी ४ ये ५ प्रकृतियाँ सत्त्वके अयोग्य हैं।

१४९—कृष्णलेश्या व नीललेश्यामें मिथ्यादृष्टिके तीर्थंकर प्रकृतिका सत्त्व नहीं हैं। (किण्हदुगे ण तित्थयरसत्त)

१५०—पीत, पद्म शुक्ललेश्यामें मिथ्यादृष्टिके तीर्थंकर प्रकृतिका सत्त्व नहीं हैं। (सुहतिलेस्सिय वामेवि ण तित्थयर सत्तं)

१५१—अभव्यमें तीर्थंकर, सम्यक्प्रकृति, सम्यग्मिथ्यात्व, आहारक-चतुष्क, ये ७ प्रकृतियाँ सत्त्वके अयोग्य हैं। (अभव्वसिद्धे णत्थि हु सत्तं तित्थयरसम्ममिस्साणं, आहारचउक्कस्सवि)

१५२—असंज्ञी जीवमें तीर्थंकर प्रकृति सत्त्वके अयोग्य है। (असण्णिजीवे ण तित्थयरं)

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

गुणस्थान व मार्गणाओं में

कर्म प्रकृतियोंके

बन्ध, उदय व (सत्त्व) के

विवरण में

उपयोगी नक्शे

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

(१) सामान्य बन्धत्रिभंगी, बन्धयोग १२०

गुण.	बन्ध.	नि. बं.	अबन्ध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	❀	३क	१६	क-तीर्थंकर, आहारकद्विक
२	१०१	१६	३	२५	ख-तीर्थंकर, आहारकद्विक मनुष्यायु, देवायु
३	७४	४१	५ख	०	ग-आहारकद्विक
४	७७	४१	२ग	१०	घ-आहारकद्विक सम्मिलित
५	६७	५१	२	४	
६	६३	५५	२	६	
७	५९घ	६१	०	१	
८	५८	६२	०	३६	
९	२२	९८	०	५	
१०	१७	१०३	०	१६	
११	१	११९	०	०	
१२	१	११९	०	०	
१३	१	११९	०	१	
१४	०	१२०	०	×	

(२) सामान्य नरकगति व घम्मा वंशा मेघा पर्याप्तमें बन्ध योग्य १०१ (नियम ४)

गुण.	बन्ध	नि.बं.	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	१००	❀	१क	४ख	क-तीर्थंकर
२	९६	४	१	२५	ख-मिथ्यात्वव्युच्छिन्नआदिम
३	७०	२९	२ग	०	ग-तीर्थंकर, मनुष्यायु
४	७२घ	२९	०	❀(१०)	घ-तीर्थं, मनुष्यायु सम्मिलित

(३) घम्मा पृथ्वी (प्रथम नरक) में अपर्याप्तमें बन्ध योग्य ९९ (नि ३ व ४) क

गुण.	बन्ध	निबंध	अबन्ध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	९८	❀	१ख	२४ग	क-मनु तिर्यञ्चायु भी बंधायोग्य
४	७१	२८	०	❀(९)	ख-तीर्थंकर ग-(४+२४+०)

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(४) दूसरे नरकसे छठे नरक तकके अपर्याप्तमें बन्ध योग्य ९८ (नियम ३, ४, ६)

गुण.	बन्ध	नि बं.	अबन्ध	बधव्यु
१	९८	❀	०	❀

(५) अज्जना, अरिष्टा, मघवी (चौथेसे छटे नरक तक)में बन्धयोग्य १०० (नियम ४ व ६)

गुण.	बन्ध	नि. बं.	अबन्ध	बधव्यु	विशेष विवरण
१	१००	❀	०	क४	क-मिथ्यात्वव्युच्छिन्न आदिम ४
२	९६	४	०	२५	
३	७०	२९	१ख	०	ख—मनुष्यायु
४	७१	२९	०	❀ १०)	

(६) माघवी (सातवें नरक) में बन्धयोग्य ९९ (नियम ४, ६, ८)

गुण.	बन्ध	नि ब.	अबन्ध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	९६	❀	३क	५ख	क-मनुष्यद्विक, उच्चगोत्र
२	९१	५	३	२४ग	ख-आदिम ४ व तिर्यगायु
३	७०	२९	०	०	ग-तिर्यगायुकी मिथ्यात्वमें
४	७०	२९	०	❀(९)	बन्धव्युच्छित्ति हो गई

(७) माघवी अपर्याप्तमें बन्धयोग्य ९५ (नियम ४, ६, ८, ९)

गुण.	बन्ध	नि.बं	अबन्ध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	९५	❀	०	❀	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(८) तिर्यञ्चगतिमें अथवा सामान्य, पञ्चेन्द्रिय, पर्याप्त, योनिमती तिर्यञ्चमें बन्धयोग्य ११७ (नियम १०)

गुण.	बन्ध	नि ब.	अबंध	बन्धव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	*	०	१६	क-सासनव्यु. २५, असंयतव्यु-
२	१०१	१६	०	३१क	च्छिन्न अन्तिम ६ (नियम १२)
३	६९	४७	१ख	०	ख-देवायु
४	७०ग	४७	०	४घ	ग-देवायु सहित
५	६६	५१	०	*(४)	घ-अप्रत्याख्यान वरण ४

(९) सामान्य, पंचेन्द्रिय, पर्याप्त, योनिमती तिर्यंच निर्वृत्यपर्याप्तमें बन्धयोग्य १११ (नियम ११)

गुण.	बन्ध	नि.बु.	अबंध	बंधव्यु	विशेष विवरण
१	१०७	*	४क	१३ख	क-देवचतुष्क
२	९४	१३	४	२९ग	ख-नरकद्विक नरकायुबंधायोग्य
४	६९	४२	०	* ४)	ग-तिर्यगायु मनुष्यायुबंध योग्य

(१०) लब्ध्यपर्याप्त तिर्यञ्चमें बन्धयोग्य १०९ (नियम १३)

गुण	बन्ध	नि ब	अबध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०९	*	०	*	

(१२) निर्वृत्यपर्याप्त-सामान्य, पर्याप्त, मानुषी मनुष्यमें बन्धयोग्य ११२ (नियम १४)

गुण.	बन्ध	नि ब	अबन्ध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०७	*	५क	१३ख	क-देवचतुष्क, तीर्थङ्कर।
२	९४	१३	५	२९ग	ख-नरकद्विक,नरकायुबंधायोग्य
४	७०	४२	०	८घ	ग-नरतिर्यगायु बंधायोग्य।
६	६२	५०	०	६१च	घ अप्र. प्र.। च. ६+०+३४
१३	१	१११	०	(१)	+५+१६=६१

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(११) मनुष्यगतिमें बन्धयोग्य १२०

गुण.	बन्ध	नि.ब.	अबन्ध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	❋	३क	१६	क-तीर्थङ्कर, आहारकद्विक।
२	१०१	१६	३	३१घ	
३	६९	४७	४ग	०	ख-सासनव्युच्छिन्न २५ व अयत
४	७१	४२	२	४घ	व्युच्छिन्न अन्तिम ६।
५	६७	५१	२	४	ग-तीर्थङ्कर, आहारकद्विक,
६	६३	५५	२	६	देवायु।
७	५९च	६१	०	१	घ-अप्रत्याख्यानावरण ४
८	५८	६२	०	३६	च-आहारकद्विक सम्मिलित
९	२२	९८	०	५	
१०	१७	१०३	०	१६	
११	१	११९	०	०	
१२	१	११९	०	०	
१३	१	११९	०	१	
१४	०	१२०	०	❋	

(१३) लब्धयपर्याप्त मनुष्यमें बन्धयोग्य १०९ (नियम १३)

गुण.	बन्ध	नि बं.	अबन्ध	बंधव्यु
१	१०९	❋	०	❋

(१४) भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी देव देवियों में व कल्पवासिनी देवियोंमें बन्धयोग्य १०३ (नियम १५ १६)

गुण	बन्ध	निव्.	अबंध	बंधव्यु	विशेष विवरण
१	१०३	❋	०	७क	क-आदिम ७, शेष बंधायोग्य।
२	९६	७	०	२५	
३	७०	३२	१ख	०	ख-मनुष्यायु
४	७१	३२	०	❋(१०)	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१५) देवगति सामान्य व सौधर्म ऐशान स्वर्गके देवोंमें बन्धयोग्य १०४ (नियम १५)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबंध	बधव्यु	विशेष विवरण
१	१०३	❋	१क	७ख	क–तीर्थङ्कर
२	९६	७	१	२५	ख-आदिम ७
३	७०	३२	२ग	०	ग–तीर्थङ्कर, मनुष्यायु।
४	७२	३२	०	❋(१०)	

(१६) निवृ`त्यपर्याप्त भवनत्रिकोंमें व कल्पवासिनी देवियोंमें बन्धयोग्य १०१ (नियम १५, १६, १७)

गुण.	बन्ध.	निवृ.	अबध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०१	❋	०	७क	क-आदिम ७
२	९४	७	०	२४ख	ख-तिर्यगायु बन्धायोग्य।

(१७) निर्वृत्यपर्याप्त सौधर्म ऐशान स्वर्गके देवोंमें बन्धयोग्य १०२ (नियम १५, २०)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबंध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०१	❋	१क	१७ख	क तीर्थङ्कर बन्धयोग्य
२	९४	४७	१	२४ग	ख-आदिम ७।
४	७१	३१	०	❋(९)	ग-तिर्यगायु बन्धायोग्य

(१८) सानत्कुमारसे सहस्रार (३ से १२ स्वर्ग) तकके देवोंमें बन्धयोग्य १०१ (नियम १५, १८)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	१००	❋	१क	४ख	क-ग-तीर्थंकर। ख-आदिम ४
२	९६	४	१	२५	ग-तीर्थंकर, मनुष्यायु।
३	७०	२९	२ग	०	
४	७२	२९	०	❋(१०)	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१६) सानत्कुमारसे सहस्रार स्वर्ग तकके निर्वृत्यपर्याप्त देवोंमें बन्ध योग्य ६६ (नियम १५, १८, २०)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबंध	बंधव्यु	विशेष विवरण
१	६८	❋	१क	४ख	क-तीर्थंकर
२	६४	४	१	२४ग	ख-आदिम ४।
४	७१	२८	०	❋ ६)	ग-तिर्यगायु बंधायोग्य

(२०) अन्तिम ४ स्वर्गके व नवग्रैवेयक देवोंमें बन्ध योग्य ६७ (नि० १५, १८, १६)

गुण	बन्ध	निवृ	अबन्ध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	६६	❋	१क	४	क-तीर्थंकर
२	६२	४	१	१ख	ख-शतारचतुष्क बन्धायोग्य।
३	७०	२५	२ग	०	ग-तीर्थंकर मनुष्यायु।
४	७२	२५	०	❋(१०)	

(२१) निर्वृत्यपर्याप्त आनतादि ४ स्वर्ग व नवग्रैवेयकमें बन्धयोग ६६ (नियम १५, १८, १६, २१)

गुण.	बन्ध.	निवृ	अबंध	बधव्यु	विशेष विवरण
१	६५	❋	१क	४ख	क-तीर्थंकर
२	६१	४	१	२१ग	ख-आदिम ४
४	७१	२५	०	❋(६)	ग-शतारचतुष्क बन्धयोग्य

(२२) अनुदिश व अनुत्तर विमानवासी देवोंमें बन्धयोग्य ७२ (नियम २०)

गुण.	बन्ध	निवृ	अबन्ध	बधव्यु.
४	७२	❋	०	❋(१०)

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

(२३) अनुदिश अनुत्तर निर्वृत्यपर्याप्तमें बन्धयोग्य ७१ (नियम २१)

गुण.	बन्ध	निवृ	अबन्ध	बंधव्यु
४	७१	❋	०	❋

(२४) एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रियमें बन्धयोग्य १०६ (नियम २३)

गुण.	बन्ध	निवृ	अबन्ध	बंधव्यु	विशेष विवरण
१	१०६	❋	०	१५क	क-नरकद्विक, नरकायु बंधयोग्य होने से १३ रहे व मनुष्यायु व तिर्यंचायु यहीं व्युच्छिन्न होनेसे २ बढ़ी। ख-दूसरा गुणस्थान निर्वृत्यपर्याप्तमें ही संभव है।
२ख	६४	१५	०	❋(२६)	

(२५) पञ्चेन्द्रियमें सामान्य बन्धत्रिभंगीके समान रचना (देखिये नक्शा नं० १)

(२६) एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय निवृत्यपर्याप्तमें बन्धयोग्य १०७ (नियम ३)

गुण	बन्ध	निवृ.	अबंध	बंधव्यु	विशेष विवरण
१	१०७	❋	०	१३क	क-नरकद्विक नरकायुबंधायोग्य
२	६४	१३	०	❋(२६) ख	ख-नरतिर्यंगायु बंधायोग्य।

(२७) पञ्चेन्द्रिय निवृत्यपर्याप्तमें बन्ध योग्य ११२ क

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबंध	बंधव्यु.	
१	१०७	❋	५ख	१३ग	क-आयु४, आहारकद्विक, नरकद्विक बंधयोग्य ख-देवचतुष्कतीर्थंकर ग-नरकद्विक नरकायु बंधायोग्य घ-तिर्यगायु बंध योग्य च-मनुष्यायु बंधायोग्य अत: ९+४=१३ छ-६+०+२४+१५+१६=६१
२	६४	१३	५	२४घ	
४	७५	३७	०	१३च	
६	६२	५०	०	६१च	
१३	१	१११	०	१	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(२८) एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पञ्चेन्द्रिय लब्ध-पर्याप्तमें बन्धयोग्य १०९ गुणस्थान १ (नियम १३)

(२९) पृथ्वी, जल, वनस्पति कायमें एकेन्द्रियकी तरह बन्ध रचना (देखिये नक्शा नं० २४)

(३०) अग्निकाय, वायुकायमें बन्धयोग्य (नियम २३, २५) गुण-स्थान १

(३१) त्रसकायमें सामान्य बन्धत्रिभंगी की तरह रचना।

(३२) निवृत्यपर्याप्त त्रसकायमें निवृत्यपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय की तरह बन्ध रचना (देखिये नक्शा नं० २७)

(३३) सत्य अनुभय मनोयोग व सत्य अनुभय वचनयोगमें सामान्य बन्धत्रिभंगी तरह बन्ध रचना, गुणस्थान १ से १३ तक

(३४) असत्य उभय मनोयोग व असत्य उभय वचन योगमें सामान्य बन्धत्रिभंगीवत् रचना गुणस्थान १ से १२ तक

(३५) औदारिक काययोगमें मनुष्यगतिवत् बन्धरचना गुणस्थान १ से १३

(३६) औदारिक मिश्रकाययोगमें बन्धयोग्य ११४ (नियम ९६)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबन्ध	बव्यु	विशेष विवरण
१	१०९	*	५क	१५ख	क-देवचतुष्क, ती.१ ख-नरकद्विक,
२	९४	१५	५	२९ग	नरकायुबधायोग्य,नरतिर्यगायुबद्धी
४	७०	४४	०	६९घ	ग-नरतिर्यगायु मि व्यु. घ ४+४
१३	१	११३	०	*(१)	+६+०+३४+५+१६=६९

(३७) वैक्रियककाययोगमें देवगति सामान्यकी तरह बन्ध रचना (देखिये नक्शा नं० १५)

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

(३८) वैक्रियकमिश्रकाययोगमें बन्धयोग्य १०२ (नियम २८)

गुण	बन्ध	निवृ.	अबंध	बंधव्यु	विशेष विवरण
१	१०१	❋	१क	७ख	क-तीर्थङ्कर
२	९४	७	१	२४ग	ख-मिथ्यात्वव्युच्छिन्न आदिम ७
४	७१	३१	०	❋(९)	ग-तिर्यगायु बधायोग्य ।

(३९) आहारककाययोगमें बन्धयोग्य ६३

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबध	बधव्यु	विशेष विवरण
६	६३क	❋	०	❋(६)	क—प्रमत्तगुणस्थानवत्

(४०) आहारकमिश्रकाययोगमें बन्धयोग्य ६२ क

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबन्ध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
६	६२	❋	०	❋	क-देवायु भी बन्धके अयोग्य

(४१) कार्माणकाययोगमें बन्धयोग्य ११२ (नियम २९)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबन्ध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०७	❋	५क	१३ख	क-देवचतुष्क, तीर्थंकर
२	९४	१३	५	२४ग	ख-नरकद्विक नरकायुबंधायोग्य
४	७५	३७	०	७४घ	ग-तिर्यगायुबंधायोग्य
१३	१	१११	०	❋(१)	घ-९+४+६+०+३४+५+१६=७४

(४२) पुरुषवेदमें बन्धयोग्य १२०

गुण	बन्ध	निवृ.	अबन्ध	बधव्यु	विशेष विवरण
१	११७	❋	३क	१६	क-तीर्थंकर आहारकद्विक
२	१०१	१६	३	२५	ख-तीर्थंकर आहारकद्विक मनुष्यायु, देवायु ।
३	७४	४१	५ख	०	
४	७७	४१	२ग	१०	ग-आहारकद्विक

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

५	६७	५१	२	४	घ ९वें गुणस्थानके प्रथमभागका
६	६३	५५	२	६	द्विचरम समय
७	५९	६१	०	१	च-९वें गुणस्थानके प्रथमभाग
८	५८	६२	०	३६	का चरम समय
९/१घ	२२	९८	०	०	छ-पुरुषवेद
९/१च	२२	९८	०	छ✻(१)	

(४३) स्त्रीवेद व नपुसकवेदमें बन्धयोग्य १२०

गुण.	बंध	निवृ.	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	✻	३क	१६	क-तीर्थ. आहारकद्विक
२	१०१	१६	३	२५	ख-तीर्थ आहारकद्विक मनुष्-
३	७४	४१	५ख	०	यायु देवायु
४	७७	४१	२ग	१०	ग-आहारकद्विक
५	६७	५१	२	४	घ-प्रथमभागका द्विचरम समय
६	६३	५५	२	६	च-प्रथमभागका चरम समय
७	५९	६१	०	१	छ-पुरुषवेद
८	५८	६२	०	३६	
९/१घ	२२	९८	०	१छ	
९/१च	२१	९९	०	✻(०)	

(४४) अपगतवेदमें बंधयोग्य २१ (नियम ३०) क

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबध	बंधव्यु	विशेष विवरण
९/१	२१	✻	०	१ख	क-पहिले गुणस्थानसे ९वें गुण-
९/२	२०	१	०	१ग	स्थानके प्रथम (सवेद) भाग तक
९/३	१९	२	०	१घ	बंधव्युच्छिन्न ९९ प्रकृतियां बन्ध
९/४	१८	३	०	१च	के अयोग्य
९/५					
१०	१७	४	०	१६	१६+२५+०+१०+४+
११	१	२०	०	०	६+१+३६+१=९९
१२	१	२०	०	०	ख-संज्वलन क्रोध ग-संज्वलन
१३	१	२०	०	१	मान घ-संज्वलन माया
१४	०	२१	०	✻	च-संज्वलन लोभ

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(४५) पुरुषवेद निवृत्यपर्याप्तमें बन्धयोग्य ११२ (नियम ३१)

गुण.	बन्ध.	निवृ०	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०७	❋	५क	१३ख	क-तीर्थंकर, देवचतुष्क।
२	९४	१३	५	२४ग	ख-नरकद्विकनरकायुबंधायोग्य
४	७५	३७	०	❋(९)	ग-तिर्यगायुबन्धयोग्य

(४६) स्त्रीवेद निवृत्यपर्याप्तमे बन्धयोग्य १०७ (नियम ३२)

गुण.	बन्ध	निवृ०	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०७	०	०	१३क	क-नरकद्विक, नरकायु बन्धके
२	९४	१३	०	❋(२४)	अयोग्य

(४७) नपुंसकवेद निवृत्यपर्याप्तमे बन्धयोग्य १०८ (नियम ३३)

गुण.	बन्ध.	निवृ०	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०७	❋	१क	१३ख	क-तीर्थंकर
२	९४	१३	१	२४ग	ख-नरकत्रिकबंधायोग्य
४	७१	३७	०	❋ (९)घ	ग-तिर्यगायुबंधायोग्य
					घ-मनुष्यायुबंधयोग्य

(४८) अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभमें बन्धयोग्य ११७ क

गुण	बन्ध.	निवृ०	अबंध	बंधव्यु	
					क-इसमें १ला, २रा ही गुणस्थान
१	११७	❋	०	१६	होनेसे तीर्थंकर प्रकृति व आहार
२	१०१	१६	०	❋(२५)	कद्विकबंधके अयोग्य हैं।

(४९) अन०रहित अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभमें बंधयोग्य ७७ (पूर्वव्यु० ४१ व आहारकद्विक नहीं)

गुण.	बंध	निवृ०	अबंध	बंधव्यु	विशेष विवरण
३	७४	❋	३क	०	क-तीर्थंकर, देवायु, मनुष्यायु
४	७७	०	०	❋(१०)	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(५०) अन० व अप्रत्याख्यानावरण रहित प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभमें बन्धयोग्य ६७ क

गुण.	बन्ध.	निवृ०	अबंध	बंधव्यु,	विशेष विवरण
५	६७	❋	०	❋ ४)	क-पूर्व (१६+२५+०+१०) कु०५१व आहारकदिक बंधायोग्य

(५१) अन० अप्र० प्रत्या० रहित संज्वलन कषायमें बंधयोग्य ६५क

गुण	बन्ध.	नि.बं.	अबन्ध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
६	६३	❋	२ख	६	क-पूर्वव्यु. (१६+२५+०+१०+४) ५५
७	५९	६	०	१	
८	५८	७	०	३६	
९	२२	४३	०	१ग	ख-आहारकद्विक
	२१	४४	०	१घ	ग-पुरुषवेद
	२०	४५	०	१च	घ-संज्वलन क्रोध
	१९	४६	०	१छ	च-संज्वलन मान
	१८	४७	०	१ज	छ-संज्वलन माया
१०	१७	४८	०	❋ १६)	ज-संज्वलन लोभ

(५२) हास्यषट्कमें बंधयोग्य १२०

गुण.	बन्ध.	निवृ०	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	❋	३क	१६	क-तीर्थंकर, आहारकद्विक
२	१०१	१६	३	२५	ख-तीर्थङ्कर, आहारकद्विक, मनुष्यायु, देवायु
३	७४	४१	५ख	०	ग-आहारकद्विक
४	७७	४१	२ग	१०	
५	६७	५१	२	४	
६	६३	५५	२	६	
७	५९	६१	०	१	
८	५८	६२	०	❋(३६)	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(५३) अकषायमें बन्धायोग्य १ (सातावेदनीय) क

गुण	बन्ध	निवृ	अबध	बधव्यु	विशेष विवरण
११	१	*	०	०	क पहिले गुणस्थानसे १०वें गुण स्थान तककी बन्धव्युच्छिन्न ११९ प्रकृतिबन्धके अयोग्य हैं।
१२	१	०	०	०	
१३	१	०	०	१	
१४	०	१	०	०	

(५४) मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञानमें बन्धयोग्य ७९ क

गुण	बन्ध	निवृ	अबध	बंधव्यु	विशेष विवरण
४	७७	*	२ख	१०	क-पहिले से तृतीय गुण० तककी व्युच्छिन्न ४१ प्रकृतियाँ बन्धायोग्य हैं।
५	६७	१०	२	४	ख-आहारकद्विक
६	६३	१४	२	६	ग-आहारकद्विक सम्मिलित
७	५९ग	२०	०	१	
८	५८	२१	०	३६	
९	२२	५७	०	५	
१०	१७	६२	०	१६	
११	१	७८	०	०	
१२	१	७८	०	०	

(५५) मनःपर्ययज्ञानमें बधायोग्य ६५क

गुण.	बन्ध	निवृ	अबन्ध	बंधव्यु	विशेष विवरण
६	६३	*	२ख	६	क-१ से ५ गुणस्थान तककी व्यु० ५५ प्रकृतियां बन्धायोग्य हैं।
७	५९ग	६	०	१	ख-आहारकद्विक
८	५८	७	०	३६	ग-आदि० सम्मिलित
९	२२	४३	०	५	
१०	१७	४८	०	१६	
११	१	६४	०	०	
१२	१	५४	०	०	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(५६) केवलज्ञानमें बन्धयोग्य १ (सातावेदनीय)

गुण.	बंध	निवृ०	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१३	१	*	०	१	
१४	०	१	०	०	

(५७) कुमति, कुश्रुत, कुअवधिज्ञानमें बन्धयोग्य ११७क

गुण.	बन्ध.	निवृ.	अबंध	बंधव्यु	विशेष विवरण
१	११७	*	०	१६	क-ती० आद्वि० बन्धयोग्य
२	१०१	१६	०	२५	

(५८) मिश्र मति श्रुत अवधिज्ञानमें बंधयोग्य ७४क

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबन्ध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
३	७४	*	०	०	क-प्रथम द्वितीय गुणव्यु ४१ तीर्थङ्कर, आहारद्विक नरदेवायु बन्धायोग्य ।

(५९) सामायिक, छेदोपस्थापनामें बन्धायोग्य ६५क

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबंध	बंधव्यु	विशेष विवरण
५	६३	*	२	६	क-पूर्वव्युच्छिन्न
७	५९	६	०	१	(१६+२५+०+१०+४)
८	५८	७	०	३६	५५ प्रकृतियाँ बंधके अयोग्य
९	२२	४३	०	*(५)	

(६०) परिहार विशुद्धिमें बन्धयोग्य ६५ क

गुण	बन्ध	निवृ.	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
६	६३	*	२ख	६	क-पूर्वव्यु० ५५ प्र० बंधायोग्य
७	५९ग	६	०	*(१)	ख-आहारकद्विक
					ग-आहारकद्विक सम्मिलित

Report any errors at vikashd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

(६१) सूक्ष्म साम्परायमें बधयोग्य १७ गुणस्थान दसवाँ

(६२) यथाख्यातसयममें बन्धयोग्य १ (सातावेदनीय)

गुण.	बन्ध	निवृ	अबन्ध	बधव्यु	विशेष विवरण
११	१	*	०	०	
१२	१	०	०	०	
१३	१	०	०	१	
१४	०	१	०	०	

(६३) असंयममें बन्धयोग्य ११८ (आहारकद्विक नहीं)

गुण	बन्ध	निवृ	अबन्ध	बधव्यु	विशेष विवरण
१	११७	*	१क	१६	क-तीर्थंकर
२	१०१	१६	१	२५	ख-तीर्थंकर, मनुष्यायु, देवायु
३	७४	४१	३ख	०	
४	७७	४१	०	*(१०)	

(६४) चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शनमें बन्ध रचना सामान्यबन्ध त्रिभंगीवत्, गुणस्थान १ से १२ तक

(६५) अवधिदर्शनमें बन्धायोग्य ७९ रचना अवधिज्ञानवत् (नक्शा नं० ५४)

(६६) केवल दर्शनमें केवलज्ञानवत् रचना बन्ध योग्य १ नक्शा नं० ५६)

(६७) कृष्णनील लेश्यामें बन्धयोग्य ११७ (नि० ३५)

यदि कृष्ण नील-लेश्यामें जिसके तीर्थङ्कर प्रकृतिका बन्ध सम्भव हो तो उसे कृष्णनील लेश्यामें कपोत लेश्यावत् रचना जानना।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबंध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	✻	०	१६	क-मनुष्यायु ।
२	१०१	१६	०	२५	देवायु ।
३	७४	४१	२क	०	
४	७६	४१	०	✻(१०)	

(६८) कापोतलेश्यामें बन्धयोग्य ११८ (नियम ३६)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबंध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	✻	१क	१६	क–तीर्थङ्कर
२	१०१	१६	१	२५	ख-तीर्थंकर, मनुष्यायु देवायु
३	७४	४१	३ख	०	
४	७७	४१	०	✻(१०)	

(६९) पीत लेश्यामें बन्धयोग्य १११ (नियम ३७)

गुण.	बन्ध	निवृ०	अबध	बंधव्यु	विशेष विवरण
१	१०८	✻	३क	७ख	क-ग-तीर्थंकर आहारकद्विक
२	१०१	७	३	२५	ख-मिथ्याव्युच्छिन्न आदिम ७
३	७४	३२	५ग	०	ग-तीर्थंकर, आहारकद्विक मनुष्यायु, देवायु
४	७७	३२	२घ	१०	घ-आहारकद्विक
५	६७	४२	२	४	
६	६३	४६	२	६	
७	५९	५२	०	✻(१)	

(७०) पद्मलेश्यामें बन्धायोग्य १०८ (नियम ३८)

गुण.	बन्ध.	निवृ०	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०५	✻	३क	४ख	क-तीर्थंकर, आहारकद्विक
२	१०१	४	३	२५	ख-मिथ्यात्वयु आदिम ७
३	७४	२९	५ग	०	ग-तीर्थङ्कर, आहारकद्विक, मनुष्यायु, देवायु
४	७७	२९	२घ	१०	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

५	६७	३९	२	४	घ-आहारकद्विक।
६	६३	४३	२	६	
७	५९	४९	०	*(१)	

(७१) शुक्ललेश्यामें बन्धयोग्य १०४ (नियम ३९)

गुण.	बन्ध	नि.ब.	अबन्ध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०१	*	३क	४ख	क-तीर्थङ्कर, आहारकद्विक।
२	९७	४	३	२१ग	ख-मिथ्यात्व गुणस्थानव्युच्छिन्न आदिम ७
३	७४	२५	५घ	०	ग-शल्यचतुष्क बन्धके अयोग्य
४	७७	२५	२च	१०	घ-तीर्थंकर, आहारकद्विक मनुष्यायु, देवायु।
५	६७	३५	२	४	च-आहारकद्विक
६	६३	३९	२	६	
७	५९	४५	०	१	
८	५८	४६	०	३६	
९	२२	८२	०	५	
१०	१७	८७	०	१६	
११	१	१०३	०	०	
१२	१	१०३	०	०	
१३	१	१०३	०	*(१)	

(७२) अलेश्यमें बन्धरहित, गुणस्थान १४वाँ

(७३) भव्यमें सामान्यत्रिभंगीवत् बन्ध रचना

(७४) अभव्यमें बन्धयोग्य ११७ गुणस्थान पहिला (नियम ४०)

(७५) उपशमसम्यक्त्वमें बन्धयोग्य ७७ (नियम ४१)

गुण.	बन्ध	निबं.	अबंध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
४	७५	*	२क	२ख	क-आहारकद्विक
५	६६	९	२	४	ख-मनुष्यायु बन्ध के अयोग्य
६	६२	१३	२	६	ग-देवायु बन्ध के अयोग्य

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

७	५८	१६	०	०ग	नोट–प्रथमोपशम सम्यक्तवमें ४ से ७वें गुणस्थान होते हैं व द्वितीयोपशमसम्यक्तवमें ४से ११ गुणस्थान होते हैं।
८	५८	१६	०	३६	
९	२२	५५	०	५	
१०	१७	६०	०	१६	
११	१	७६	०	०	

(७६) क्षायोपशमिक सम्यक्तवमें बन्ध योग्य ७९क

गुण.	बन्ध.	निवृ.	अबध	बधव्यु	विशेष विवरण
४	७७	❋	२ख	१०	क-प्रथम द्वितीय तृतीय गुणस्थान व्युच्छिन्न ४१वें बन्धके अयोग्य
५	६७	१०	२	४	
६	६३	१४	२	६	
७	५९	१८	०	❋(१)	ख-आहारकद्विक

(७७) क्षायिक सम्यक्तवमें बन्धायोग्य ७९क

गुण.	बध	निवृ	अबध	बंधव्यु	विशेष विवरण
४	७७	❋	२ख	१०	क-प्रथमद्वितीयतृतीय गुणस्थान व्युच्छिन्न ४१ प्रकृतियाँ बन्धके अयोग्य
५	६७	१०	२	४	
६	६३	१४	२	६	
७	५९ग	२०	०	१	ख-आहारकद्विक
८	५८	२१	०	३६	ग-आहारकद्विक सम्मिलित
९	२२	५७	०	५	
१०	१७	६२	०	१६	
११	१	७८	०	०	
१२	१	७८	०	०	
१३	१	७८	०	१	
१४	०	७९	०	०	

(७८) मिथ्यात्वव्युमें बन्धायोग्य ११७, गुणस्थान पहिला

(७९) सासादनमें बन्धयोग्य १०१, गुणस्थान दूसरा

(८०) मिश्रसम्यक्तवमें बन्धयोग्य ७४, गुणस्थान तीसरा

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(८१) संज्ञीमें बन्धयोग्य १२० सामान्यबन्ध त्रिभंगीवत् रचना गुणस्थान १ से १२ तक

(८२) असंज्ञीमें बन्धयोग्य ११७ क

गुण	बन्ध.	निवृ०	अबध	बंधव्यु.	
१	११७	*	०	१९ख	क-तीर्थत्रिक बन्धायोग्य ख-तिर्यगायु, मनुष्यायु देवायु मिलाकर
२	९८	१९	०	*(२९)	

(८३) अनुभय (न संज्ञी न असज्ञी) में बन्धयोग्य १

गुण.	बन्ध	निवृ०	अबध	बंधव्यु.	विशेष विवरण
१३	१	*	०	१क	क-सातावेदनीय
१४	०	१	०	०	

(८४) आहारकमें सामान्यबधत्रिभंगीवत् रचना गुणस्थान १ से १३ तक

(८५) अनहारकमें बन्धयोग्य ११२ (नियम २९)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबन्ध	बधव्यु.	
१	१०७	*	५क	१३ख	क-तीर्थंकर, देवचतुष्क ख-नरकद्विक बंध के अयोग्य । ग-तिर्यगायुबंधयोग्य घ-९+४+६+०+३४+५+१६=७४ च-सातावेदनीय
२	९४	१३	५	२४ग	
४	७५	३७	०	७४घ	
१३	१च	१११	०	१	
१४	०	११२	०	०	

(८६) सामान्य उदयत्रिभङ्गी उदयायोग्य १२२

गुण.	बन्ध	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	*	५क	५	क-तीर्थंकर, आहारकद्विक सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्प्रकृति ख-तीर्थपञ्चक व नरकगत्यानुपूर्वी ग-तीर्थ०, आहारकद्विक, सम्य-
२	१११	५	६ख	९	
३	१०४	१४	८ग	१	
४	८७	१५	३घ	१७	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

५	८७	३२	३	८	सम्यक्प्रकृति, आनुपूर्वी ४।
६	८७ब	४०	१	५	घ-तीर्थंकर, आहारकद्विक (आनु
७	७६	४५	१	४	४ व सम्यक्प्रकृति उदयमें)
८	७२	४६	१	६	च-आहारकद्विक सम्मि०
९	६६	५५	१	६	छ-तीर्थंकर सम्मिलित
१०	६०	६१	१	१	
११	५९	६२	१	२	
१२	५७	८४	१	१६	
१३	४२छ	८०	०	३०	
१४	१२	११०	०	३२	

(८७) नरकगति व प्रथमनरकमें उदययोग्य ७६ (नियम ४८)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	७४	❋	१क	१	क-मिश्र, सम्यक्प्रकृति
२	७२	१	३ख	४	ख-मिश्र, सम्य०. नरकगत्यानु
३	६९	५	२ग	१	ग-सम्य०, नरकगत्यानु
४	७०	६	०	❋	

(८८) दुसरे नरकसे सातवें नरकतक उदययोग्य ७६ (नियम ४८)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	७४	❋	२क	२ख	क-मिश्र, सम्य.।
२	७२	१	२	४	ख-मिथ्यात्व, नरकगत्यानुपूर्वी
३	६९	६	१ग	१	ग-सम्यक्प्रकृति
४	६९	७	०	❋	

(८९) तिर्यग्गति व सामान्यतिर्यञ्चमें उदययोग्य १०७ (नियम ४९)

गुण.	उदय	निवृ	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	१०५	❋	२क	५	क-मिश्र, सम्यक्प्रकृति
२	१००	५	२	९	ख-सम्यक्प्रकृति तिर्यंगत्यानुपूर्वी
३	९१	१४	२ख	१	ग-अप्र० ४, तिर्यगानुदुर्भग

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

४	६२	१५	०	८ग	अन देय अयश ।
५	८४	२३	०	❋	

(९० पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चमे उदययोग्य ९९ (५०)

गुण.	उदय	निवृ	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	९७	❋	२क	२ख	क-मिश्र, सम्यक् ।
२	९५	२	२	४ग	ख-मिथ्यात्व, अपर्याप्त
३	९१	६	२घ	१	ग-अनन्तानु० ४
४	९२	७	०	८	घ-सम्य० तिर्यग्गत्यानु०
५	८४	१५	०	❋(८)	

(९१) पञ्चेन्द्रय पर्याप्ततिर्यञ्चमें उदययोग्य ९७ (नियम ५१)

गुण	उदय	निवृ	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	९५	❋	२क	१ख	क-मिश्र, सम्यक् ।
२	९४	१	२	४ग	ख-मिथ्यात्व
३	९०	५	२घ	१	ग-अनतानु ४
४	९१	६	०	८	घ-सम्यक् तिर्यंग्गत्यानुपूर्वी
५	८३	१४	०	❋(८)	

(९२) योनिमती तिर्यञ्चमे उदययोग्य ९६ (नियम ५२)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु,	विशेष विवरण
१	९४	❋	२क	१ख	क-मिश्र० सम्यक्
२	९३	१	२	५ग	ख-मिथ्यात्व
३	८९	६	१घ	१	ग-अनन्तानु ४, तिर्यंग्गत्यानु
४	८९	७	०	७च	घ-सम्यक्
५	८२	१४	०	❋ ८)	च-तिर्यग्गत्यानु की स्थानमें व्यु०

(९३) लब्ध्यपर्याप्तपञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चमें उदययोग्य ७१ (नि० ५३)

गुणस्थान सिर्फ पहिला

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(९४) भोगभूमिज तिर्यञ्चोंमें उदययोग्य ७९ (नियम ५४)

गुण.	उदय	निवृ	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	७७	❀	२क	१	क-मिश्र, सम्यक्
२	७६	१४	२	४ख	ख-अनता ४
३	७२	५	२ग	१	ग-सम्यक्, तिर्यंग्गानु
४	७३	६	०	❀(५)	

(९५) मनुष्यगति व मनुष्य सामान्यमें उदययोग्य १०२ (नि० ५५)

गुण	उदय	नि. वृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	९७	❀	५क	२ख	क तीर्थंकर, आहारकद्विक मिश्र सम्यक्
२	९५	२	५	४ग	ख-मिथ्यात्व, अपर्याप्ति
३	९१	६	५घ	१	ग-अनंतानु ४
४	९२	७	३च	८	घ-तीर्थंकर, आहारकद्विक
५	८४	१५	३	५	सम्यक् मनुष्यगत्यानुपूर्वी ।
६	८१	२०	१	५	च-आहारकद्विक तीर्थंकर
७	७६	२५	१	४	
८	७२	२९	१	६	
९	६६	३५	१	६	
१०	६०	४१	१	१	
११	५९	४२	१	२	
१२	५७	४४	१	१६	
१३	४२	६०	०	३६	
१४	१२	९०	०	१२	

(९६) पर्याप्त मनुष्यमें उदययोग्य १०० (नियम ५६)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	९५	❀	५क	१ख	क-तीर्थपञ्चक ख-मिथ्यात्व
२	९४	१	५	४ग	ग-अनन्तानु. ४ घ-तीर्थंकर,
३	९०	५	५घ	१	आहारकद्विक, सम्यक्, मनुष्य-
४	९१	५	३	८	गत्यानु । च-तिर्यायु, उद्योत,

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

५	८३	१४	३	५च	तिर्यग्गतिउदयायोग्य
६	८०	१६	१	५	छ-स्त्रीवेद उदयायोग्य।
७	७५	२४	१	४	
८	७१	२८	१	६	
९	६५	३४	१	५छ	
१०	६०	३९	१	१	
११	५९	४०	१	२	
१२	५७	४२	१	१६	
१३	४२	५८	०	३०	
१४	१२	८८	०	१२	

(९७) मानुषी मनुष्यमें उदययोग्य ९६ (नियम ५७)

गुण.	उद०	नि.वृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	९४	❋	२क	१ख	क-मिश्र, सम्यक् ख-मिथ्यात्व
२	९३	१	२	५ग	ग-अनंतानु४, मनुष्यगत्यानुपूर्वी
३	८९	६	१घ	१	घ-सम्यक्प्रकृति च-अप्रत्या. ४
४	८९	७	०	७च	दुर्भग, अनादेय, अयश:कीर्ति
५	८२	१४	०	५छ	छ प्रत्या० ४, नीचगोत्र
६	७७	१९	०	७ज	ज-सस्त्यानत्रिक झ-स्त्रीवेद,
७	७४	२२	०	४	सज्वलन क्रोध मान माया
८	७०	२६	०	६	
९	६४	३२	०	४फ	
१०	६०	३६	०	१	
११	५९	३७	०	२	
१२	५७	३९	०	१६	
१३	४१	५५	०	३०	
१४	११	८५	०	११	

(९८) निवृ त्यपर्याप्त सामान्यमनुष्यमें उदययोग्य ९९ (नियम ५८)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	९५	❋	४	१	क-(८+५=१३)
२	९४	१	४	४	ख-छठा गुण० आहारकद्विक,

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

४	६१	५	३	क१४	मिश्रकाययोगकी अपेक्षा।
६ख	८०	१८	१	ग४०	ग-(५+४+६+६+१+२
१३	४१	५८	०	*(०)	+१६=४०

(९९) लब्धपर्याप्त मनुष्यमें उदययोग्य ७१ (नियम ५९) गुणस्थान पहिला

(१००) भोगभूमिज मनुष्यमें उदययोग्य ७८ (नियम ६०)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	७६	*	२क	१	क-मिश्र, सम्यक्।
२	७५	१	२	४	ख-सम्यक् मनुष्यगत्यानुपूर्व्य
३	७१	५	२ख	१	
४	७२	६	०	*५)	

(१०१) देवगतिमें उदययोग्य ७७ (नियम ६१) किन्तु देवोंमें ७६ व देवियोंमें ७६ (नियम ६२)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	७५	*	२क	१	क-मिश्र, सम्यक्
२	७४	१	२	४	ख-सम्यक्प्रकृति देवगत्यानुपूर्वी
३	७०	५	२ख	१	
४	७१	६	०	*(९)	

(१०२) भवनत्रिक देवोंमें उदययोग्य ७६ (नियम ६१, ६२)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	७४	*	२	१क	क-मिथ्यात्व ख-अनन्तानुबन्धी
२	७३	१	२	५ख	४ व देवगत्यानुपूर्वी
३	६९	६	१ग	१	ग-सम्यक्प्रकृति
४	६९	७	०	*(८)	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१०३) भवनत्रिक देवों व कल्पवासिनी देवीमें उदययोग्य ७६ (नि० ६१, ६२)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	७४	❋	२	१क	क-मिथ्यात्व ख-अनन्तानुबन्धी
२	७३	१	२	५ख	४ व देवगत्यानुपूर्वी
३	६९	६	१ग	१	ग-सम्यक्प्रकृति
४	६९	७	०	❋(८)	

(१०४) सौधर्म स्वर्गसे नवग्रैवेयकतक के देवोंमें उदययोग्य ७६

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबंध	बव्यु.	विशेष विवरण
१	७४	❋	२क	१	क-मिश्र, सम्यक्प्रकृति
२	७३	१	२	४	ख-सम्यक्० व देवगत्यानुपूर्वी
३	६९	५	२ख	१	
४	७०	६	०	❋(९)	

(१०५) नवअनुदिश व पाँच अनुत्तरोंमें उदययोग्य ७० (नि० ६३)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
४	७०	❋	०	❋(६)	

(१०६) एकेन्द्रियमें उदययोग्यय ८० (नियम ६४)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	८०	❋	०	१६क	क-मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्मत्रिक, सस्त्यानत्रिक, परघात, उद्योत, उच्छ्वास
२	६९	११	०	❋(६)	

(१०७) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रियमें उदययोग्य ८१ (नि०६५)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	८१	❋	०	१०क	क-मि. अप., सस्त्यात्रिक, परघात,
२	७१	१०	०	❋(६)	उच्छ्वास, उद्योत, अप्रश०, दुःस्वर

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१०८) पञ्चेन्द्रियमें उदययोग्य ११४ (नियम ६६)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	१०६	*	५क	२ख	क-तीर्थपञ्चक
२	१०६	२	६ग	४	ख-मिथ्यात्व उद्योत।
३	१००	६	८घ	१	ग-तीर्थङ्कर आहारकमिश्र
४	१०४	७	३च	१७	सम्यक्द्विकप्रकृति नरक-
५	८७	२४	३	८	गत्यानुपूर्वी।
६	८१	३२	१	५	घ-तीर्थङ्कर आहारकद्विक,
७	७६	३७	१	४	सम्यक् आनु० ४
८	७२	४१	१	६	च-तीर्थङ्कर, आहारकद्विक
९	६६	४७	१	६	
१०	६०	५३	१	१	
११	५९	५४	१	२	
१२	५७	५६	१	१६	
१३	४२	७२	०	३०	
१४	१२	१०२	०	१२	

(१०९) पृथ्वीकायमें उदययोग्य ७९ (नियम ६०)

गुण	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	७९	*	०	१०	क-मि आ सू. अप स्त्यात्रिक
२	६९	१०	०	*(६)	उच्छ्वास, पर० उद्योत

(११०) जलकायमें उदययोग्य ७८ (नियम ६८)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	७८	*	०	९क	क-मि० सू० अप० स्त्यात्रिक,
२	६९	९	०	*(६)	पर० उद्योत, उच्छ्वास

(१११) अग्निकाय व वायुकायमें उदययोग्य ७७ (नियम ६९) गुण-स्थान पहिला

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(११२) वनस्पतिकायमें उदययोग्य ७९ (नियम ७०)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	७९	*	०	१०क	क-मि०सू अ०सा० स्त्यानत्रिक
२	६९	१०	०	*(६)	पर० उच्छ्वास उद्योत

(११३) त्रसकायामें उदययोग्य ११७ (नियम ७१)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	११२	*	५क	२ख	क-तीर्थपञ्चक
२	१०९	२	६ग	७अ	ख-मिथ्यात्व अपर्याप्ति
३	१००	९	८च	१	ग-तीर्थंकर आहारकद्विक, मिश्र
४	१०४	१०	३छ	१७	सम्यक् नरकगत्यानुपूर्वी
५	८७	२७	३	८	घ-स्थावर, एकेन्द्रिय उदया-
६	८१ज	३५	१	५	योग्य ।
७	७६	४०	१	४	च-तीर्थंकर आहारकद्विक
८	७२	४४	१	६	सम्यक्, आनुपूर्वी ४
९	६६	५०	१	६	छ-तीर्थंकर, आहारकद्विक
१०	६०	५६	१	१	ज-आहारकद्विक सम्मि०
११	५९	५७	१	२	
१२	५७	५९	१	१६	
१३	४२	७५	०	३०	
१४	१०	१०५	०	१२	

(११४) सत्य मनोयोग व अनुभय मनोयोग व सत्यवचनमनोयोगमें उदययोग्य १०९ (नियम ७२)

गुण.	बन्ध	निवृ	अबन्ध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	१०४	*	५क	१ख	क-तीर्थपञ्चक ख-मिथ्यात्व
२	१०३	१	५	४ग	ग-अनन्तानु० ४ घ-तीर्थंकर
३	१००	५	४घ	१	आहारकद्विक, सम्यक्प्रकृति
४	१००	६	३च	१३छ	च-तीर्थङ्कर आहारकद्विक
५	८७	१९	३	८	छ-अनुपूर्वी ४ उदययोग्य

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

६	८१ज	२७	१	५	
७	७६	३२	१	४	ज-आद्वि० सम्मिलित
८	७२	३६	१	६	
९	६६	४२	१	६	
१०	६०	४८	१	१	
११	५९	४९	१	२	
१२	५७	५१	०	१६	
१३	४२	६७	०	३०	
				१२	

(११५) असत्य, उभय मनोयोगमें व असत्य, उभयवचनयोगमें उदय योग्य १०९ (नियम ७२)

गुणस्थान १ से १२ सत्यमनोयोगवत् उदयरचना।

(११६) अनुभयवचनयोगमें उदययोग्य ११२ नियम ७३)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	१०७	*	५	१क	क-मिथ्यात्व
२	१०६	१	५	७ख	ख-अनन्तानु० ४, विकलत्रिक
३	१००	८	४	१	ग-आनुपूर्वी उदययोग्य
४	१०१	९	३	१३ग	
५	८७	२२	३	८	
६	८१	३०	२घ	१	
७	७६	३५	१	८	
८	७२	३९	१	६	
९	६६	४५	१	१	
१०	६०	५१	१	१	
११	५९	५२	१	२	
१२	५७	५४	१	१६	
१३	४२	७०	०	३०	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(११७) औदारिककाययोगमें उदययोग्य १०९ (नियम ७४)

गुण	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	१०६	❀	३क	४ख	क तीर्थंकर, मिश्र सम्यक्प्रकृति
२	१०२	४	३	९	ख-अपर्याप्तिउदययोग्य
३	९४	१३	२ग	१	ग-तीर्थंकर, सम्यक्प्रकृति ।
४	९४	१४	१घ	७च	घ- तीर्थंकर
५	८७	२१	१	८	च-अप्रत्या० ४, दुर्भग, दुःस्वर
६	७९	२९	१	३छ	अनादेय (शेष उदययोग्य)
७	७२	३२	१	४	छ-आहारकद्विक उदययोग्य
८	७६	३६	१	६	
९	६६	४२	१	६	
१०	६०	४८	१	१	
११	५९	४९	१	२	
१२	५७	५१	१	१६	
१३	४२	६७	०	३०	

(११८) औदारिक मिश्रकाययोगमें उदययोग्य ९८ (नि० ७५)

गुण.	उदय	निवृ	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	९६	❀	२क	४ख	क-मिश्र, सम्यक्
२	९२	४	२	१४ग	ख-आतप उदययोग्य
४	७९	१८	१घ	४४च	ग-(नि० ७६)
१३	३६छ	६२	०	❀(३०)	घ-तीर्थंकर
					च-४+७+०+४+६+१+२+१६=४४
					छ-स्वरद्विक, गमनद्विक, परघात, उच्छ्वाससे ६ उदययोग्य होनेसे कम है

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(११९) वैक्रियककाययोगमें उदययोग्य ८६ (नियम ७७)

गुण.	उदय	निवृ	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	८४	*	२क	१ख	क-मिश्र, सम्यक् ख-मिथ्यात्व
२	८३	१	२	४ग	ग-अनन्तानु०४ घ-सम्यक्प्रकृति
३	८०	५	१ग	१	
४	८०	६	०	*(१३)	

(१२०) वैक्रियक मिश्रकाययोगमें उदययोग्य ७९ (नि० ७८)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	७८	*	१क	१ख	क-सम्यक् ख-मिश्र ग-(नि०७९)
२	६९	१	९ग	५घ	चग-अनन्तानु० ४ व स्त्रीवेद
४	७३च	५	०	*(१३)	च-(नि० ७९)

(१२१) आहारककाययोगमें उदययोग्य ६१ (नियम ८०) गुणस्थान सिर्फ छटवाँ

(१२२) आहारकमिश्रकाययोगमें उदययोग्य ५७ (नियम ८१) गुणस्थान सिर्फ छटवाँ

(१२३) कार्माणकाययोगमें उदययोग्य ८९ (नियम ८२)

गुण.	बन्ध	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	८७	*	२क	३ख	कतीर्थङ्कर, सम्यक्। ख-आतप साधारण उदययोग्य ग-तीर्थं०, सम्यक्० नरकत्रिक च-स्त्रीवेद मिलाकर। च-तीर्थंकर छ-१५ +७+०+६+५+१+ ०+१६ छ-१७ उदयायोग्य
२	८१	३	५ग	१०ध	
४	७५	१३	१च	५१छ	
१३	२५ज	६४	०	*	

(१२४) अयोगमें उदययोग्य १२ गुणस्थान १४वाँ व सिद्ध

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१२५) पुरुषवेदमें उदययोग्य १०७ (नियम ८३)

गुण	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	१०३	❋	४क	१	क-तीर्थंकर उदयायोग्य अत: आहारकद्विक मिश्र सम्यक्,
२	१०२	१	४	४ख	ख-अनन्तानु० ४
३	९६	५	६ग	१	ग-आहारकद्विक सम्यक् देवतिर्यगानुपूर्वी ।
४	९९	६	२घ	१४च	घ-आहारकद्विक
५	८५	२०	२	८	च-नरकद्विक नरकायु उदयायोग्य
६	७९	२८	०	५	
७	७४	३३	०	४	
८	७०	३७	०	६	
९	६४	५३	०	❋	

(१२६) स्त्रीवेदमें उदययोग्य १०५ (नियम ८४)

गुण.	उद०	नि.वृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	१०३	❋	२क	१ख	क-मिश्र, सम्यक् ख-मिथ्यात्व
२	१०२	१	२	४७ग	ग-अनंतानु० ४, देवमनुष्यतिर्यगानुपूर्वी घ-सम्यक् च-नरकत्रिक
३	९६	८	१घ	१	उदयायोग्य व देवमनुष्यतिर्यगानु की सासादनमें व्यु० सो
४	९६	९	०	११च	शेष ११
५	८५	२०	०	८	छ-स्त्यानत्रिक
६	७७	२८	०	३छ	
७	७४	३१	०	४	
८	७०	३५	०	६	
९	६४	४१	०	❋	

(१२७) नपुसकवेदमें उदयायोग्य ११४ (नियम ८५)

गुण	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	११२	❋	२क	५	क-मिश्र, सम्यक्
२	१०६	५	३ख	११ग	ख-मिश्र, स०नरकगत्यानु
३	९६	१६	२घ	१	ग-अनं० ४, एकेन्द्रिय, स्थावर,

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

४	९७	१७	०	१२च	
५	८५	२९	०	८	विकलत्रिक, मनुष्यतिर्यगानुपूर्वी
६	७७	३७	०	३छ	घ-स० नरकानु० । च-देवात्रक
७	७४	४०	०	४	उदयायोग्य व सानमें नरतिर्य-
८	७०	४४	०	६	गानु व्यु० सो शेष १२ ।
९	६४	५०	०	❋	छ-आहारकद्विक उदयायोग्य

(१२८) अगतवेदमें उदययोग्य ६४ (नियम ८६)

गुण	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
९	६३	❋	१क	३ख	क-तीर्थंकर,
१०	६०	३	१	१	ख-संज्वलन क्रोध मान माया
११	५९	४	१	२	
१२	५७	६	१	१६	
१३	४२	२२	०	३०	
१४	१२	५२	०	१२	

(१२९) क्रोधमें उदययोग्य १०९ (नियम ८७)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	१०५	❋	४क	५	क-मिश्र, सम्य० आहारकद्विक
२	९९	५	५ख	६ग	ख-नरकानुका भी अनु०
३	९१	११	७घ	१	ग-अनन्तानु मान माया लोभ
४	९५	१२	२च	१४छ	उदयायोग्य
५	८१	२६	२	५ज	घ-सम्य० अनु० ४ आ० २
६	७८	३१	०	५	च-आहारकद्विक
७	७३	३६	०	४	छ-अप्र०मान माया लोभ
८	६९	४०	०	६	उदयायोग्य
९	६३	४६	०	❋(४)	ज प्रत्या० मान माया लोभ उदयायोग्य

(१३०-१३२) क्रोधवत् मान माया लोभमें जानना, सिर्फ विधि व निषेधमें कषायोंके नाम बदलना तथा लोभमें १०वाँ गुणस्थान भी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

लगाना तीन वेद नवम गुणस्थानमें उदयव्युच्छिन्न होनेसे ६०
४६—०—+१(१) जानना ।

(१३३) अनरहित क्रोध मिथ्यात्वमें उदययोग्य ९१ (नियम ८९)

(१३४) अनन्तानुबन्धी क्रोधमें उदययोग्य १०५ (नियम ८९)

गुण	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	१०५	❋	०	६क	क-नरकगत्यानुपूर्वी मिलाकर
२	९९	६	०	❋	

(१३५–१३७) अनन्तानुबन्धी क्रोधवत् अनन्तानुबन्धी मान माया लोभमें भी जानना, सिर्फ विधि निषेधमें कषायोंके नाम बदलना ।

(१३८) अनन्तानुबन्धी विसंयोजित क्रोधमें उदययोग्य ९५ (नि०९०)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	९१	❋	२क	१ख	क-आहारकद्विक, मिश्र. सम्य०
२	९०	१	४	०ग	ख-मिथ्यात्व ग-नवों उदययोग्य
३	९१	१	३घ	१	घ-आ० २, सम्यक्,
४	९१	२	२च	१०छ	च-आहारकद्विक
५	८१	१२	२	५ज	छ-शेष उदयायोग्य
६	७८ठ	१७	०	५	ज-प्रत्या० ३ उदयायोग्य
७	७३	२२	०	४	झ-संज्वलन मान माया
८	६९	२६	०	६	उदयायोग्य
९	६३	३२	०	४झ	ट-संज्वलन लोभ उदयायोग्य
१०	५९	३६	०	०ट	ठ-कृतकृत्यवेदमेंआहारकद्विक
११	५९	३६	०	❋	

(१३९-१४१) अनविसंयोजित क्रोधवत् अनविसंयोजित मान माया लोभमें जानना, सिर्फ विधि निषेधमें कषायोंमें नाम बदलना ।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१४२) अनोदयरहित अप्रत्याख्यानावरण क्रोधके उदययोग्य ९६ (नियम ९१)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
३	९१	❋	५क	१	क-सम्यक्प्रकृति अनुपूर्व्य ४
४	९५	१	०	❋	

(१४३–१४५) अनोदय रहित अप्रत्या० क्रोधवत् अनोदयरहित अप्र० मान माया लोभ की रचना, सिर्फ विधि निषेधमें कषायके नाम बदलना ।

(१४६) अनं० अप्र० उदय रहित प्रत्या० क्रोधमें उदययोग्य ८१ (नियम ९२) गुणस्थान सिर्फ पांचवां ।

(१४७–१४९) अन० अप्र० उदय रहित प्रत्या० क्रोधवत् अन० अप्र० उदय रहित प्रत्या०मान माया लोभ की रचना सिर्फ विधि निषेधमें कषायों के नाम बदलना ।

(१५०) अन० अप्र० प्रत्या०उदयरहित क्रोधमें उदययोग्य ७८ (नि० ९३)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
६	७८	❋	०	५	
७	७३	५	०	४	
८	६९	९	०	६	
९	६३	१५	०	❋(६)	

(१५१–१५३) अन० अप्र० प्रत्या० उदयरहित संज्वलन क्रोधवत् अप्र० प्रत्या० उदयरहित सज्वलन मान माया लोभ की रचना, सिर्फ विधि निषेधमें कषायोंके नाम बदलना तथा लोभमें दसवां गुणस्थान भी लगाना ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१५४) अकषायमेंउदययोग्य ६० (नि० ६४)

गुण.	उदय.	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
११	५९	※	१	२	
१२	५७	२	१	१६	
१३	४२	१८	०	३०	
१४	१२	४८	०	१२	

(१५५ हास्य रतिमें उदययोग्य ११९

गुण.	उद०	निवृ.	अनु.	उदव्यु	विशेष विवरण
१	११५	०	४	५	
२	१०९	५	५	९	
३	९८	१४	७	१	
४	१०२	१५	२	१७	
५	८५	३२	२	८	
६	७९	४०	०	५	
७	७४	४५	०	४	
८	७०	४९	०	—	

(१५६) अरति शोकमें उदययोग्य ११९

गुण.	बन्ध	निवृ.	अबन्ध	बधव्यु.	विशेष विवरण
१	११५	०	४	५	
२	१०९	५	५	९	
३	९४	१४	७	१	
४	१०२	१५	२	१७	
५	८५	३२	२	८	
६	७९	४०	०	५	
७	७४	४५	०	४	
८	४९	४९	०	—	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१५७) भय जुगुप्सामें उदययोग्य १२१

गुण.	उदय	निवृ	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	०	४	५	
२	१११	५	५	९	
३	१००	१४	७	१	
४	१०४	१५	२	१७	
५	८७	३२	२	८	
६	८१	४०	०	५	
७	७६	४५	०	४	
८	४२	४९	०	–	

(१५८) कुमति व कुश्रुत ज्ञानमें उदययोग्य ११७ (नि० ९५)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	*	०	६क	क-नरकगत्यानुपूर्वी मिलाकर
२	१११	६	०	*(९)	

(१५९) कुअवधिज्ञानमें उदययोग्य १०४ (नियम ९६)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	१०४	*	०	१क	क-मिथ्यात्व, शेष ४ उदययोग्य
२	१०३	१	०	*(४)	

(१६०) मिश्रमति, मिश्रश्रुत अवधिज्ञानउदययोग्य १०० (नि० ९७) गुणस्थान सिर्फ तीसरा

(१६१) मति. श्रुत, अवधिज्ञानमें उदययोग्य १०६ (नियम ९८)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
४	१०४	*	२क	१७	क-आहारकद्विक
५	८७	१७	२	८	
६	८१	२५	०	५	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

७	७६	३०	०	४	
८	७२	३४	०	६	
९	६६	४०	०	६	
१०	६०	४६	०	१	
११	५९	४७	०	२	
१२	५७	४९	०	*(१६)	

(१६२) मनःपर्ययज्ञानमें उदययोग्य ७७ (नियम ९९)

गुण.	बन्ध	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
६	७७	*	०	३क	क-आहारकद्विक उदयायोग्य होने से स्त्यानत्रिक ही
७	७४	३	०	४	ख-स्त्रीवेद नपुंसकवेद उदयायोग्य होनेसे शेष ४ पुरुषवेद,
८	७०	७	०	६	सज्वलन क्रोध मान माया
९	६४	१३	०	४ख	
१०	६०	१७	०	१	
११	५९	१८	०	२	
१२	५७	२०	०	*(१६)	

(१६३) केवलज्ञानमें उदययोग्य ४२ (नियम १००)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१३	४२	*	०	३०	
१४	१२	३०	०	१२	

(१६४) सामायिक, छेदोपस्थापनामें उदयायोग्य ८१ (नियम १०१)

गुण.	बन्ध	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
६	८१	*	०	५	
७	७६	५	०	४	
८	७२	९	०	६	
९	६६	१५	०	*(६)	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१६५) परिहार विशुद्धिमेंउदययोग्य ७७ (नियम १०२)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
६	७७	*	०	३क	क-स्त्यानत्रिक (आहारकद्विक
७	७४	३	०	*(६)	उदयायोग्य)

(११६) सूक्ष्मसाम्पराय संयममें उदययोग्य ६० (नियम १०३)

गुणस्थान सिर्फ दसवां

(१६७) यथाख्यात संयममें उदययोग्य ६० (नियम १०४)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
११	५६	*	१क	२	क-तीर्थङ्कर
१२	५७	२	१	१६	
१३	४२	१८	०	३०	
१४	१२	४८	०	१२	

(१६८) असयममेंउदययोग्य ११६ क

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	*	२ख	५	क-ती० आ २ उदयायोग्य।
२	१११	५	३ग	६	ख-मिश्र, सम्यक्।
३	१००	१४	५घ	१	ग-मि० स० नरकानु०
४	१०४	१५	०	*(१७)	घ-सम्यक्प्रकृति आनुपूर्वी ४।

(१६६) सयमासयममें उदययोग्य ८७ गुण० पाँचवाँ

(१७०) चक्षुर्दर्शनमें उदययोग्य ११४ (नि० १०५)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	११०	*	४क	२ख	क-आहारकद्विक, मिश्र, सम्यक्-
२	१०७	२	५ग	४घ	प्रकृति ख-मिथ्यात्व अपर्याप्ति।
३	१००	७	७च	१	ग-नरकानुपूर्वी मिलाकर।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

४	१००	८	२छ	१७	घ-अनन्तानु० ४ व चतुरिन्द्रियजाति च-आनु० ४ आहारकद्विक व सम्यक्प्रकृति।
५	८७	२५	२	८	छ-आहारकद्विक
६	८१	३३	०	५	
७	७६	३८	०	४	
८	७२	४२	०	६	
९	६६	४८	०	६	
१०	६०	५४	०	१	
११	५९	५५	०	२	
१२	५७	५७	०	*(१६)	

(१७१) अचक्षुदर्शनमें उदययोग्य १२१ (नियम १०६)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	११७	*	४क	५	क-आहारकद्विक मिश्र सम्यक्
२	१११	५	५ख	९	ख-आहारकद्विक, मिश्र सम्यक्, नरकगत्यानुपूर्वी
३	१००	१४	७ग	१	ग-आहारकद्विक सम्यक्,
४	१०४	१५	२घ	१७	आनु० ४
५	८७	३२	२	८	घ-आहारकद्विक
६	८१	४०	०	५	
७	७६	४५	०	४	
८	७२	४९	०	६	
९	६६	५५	०	६	
१०	६०	६१	०	१	
११	५९	६२	०	२	
१२	५७	६४	०	*(१६)	

(१७२) अवधिदर्शनमें उदययोग्य १०६ (नियम १०७)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	बंधव्यु.	विशेष विवरण
४	१०४	*	२क	१७	क-आहारकद्विक।
५	८७	१७	२	८	
६	८१	२५	०	५	
७	७६	३०	०	४	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

८	७१	३४	०	६	
९	६६	४०	०	६	
१०	६०	४६	०	१	
११	५९	४७	०	२	
१२	५७	४९	०	*(१६)	

(१७३) केवल दर्शनमें केवल ज्ञानवत् रचना उदययोग्य ४२

(१७४) कृष्ण व नील लेश्यामें उदययोग्य ११९ (नि० १०८)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	*	२क	६ख	क-मिश्र, सम्यक्।
२	१११	६	२ग	१३ग	ख—नरकगत्यानु मिलाकर (नि० १०९)
३	९८	१९	२	१	ग-देवत्रिक तिर्यग्गत्यानु पूर्वी मिलाकर (नियम १०९)
४	९९	२०	०	*(१२)	घ-मनुष्यानु० सम्यक्०

(१७५) कपोतलेश्यामें उदययोग्य ११९ (नियम ११०)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	११७	*	२क	५	क-मिश्र, सम्यक्
२	१११	५	३ख	१२ग	ख-नरकगत्यानु० मिश्र, सम्यक्।
३	९८	१७	४घ	१	ग-देवत्रिक मिलाकर।
४	१०१	१८	०	*(१४)	घ-नरनारकतिर्यग्गत्यानुपूर्वी, सम्यक्

(१७६) पीत व पद्मलेश्यामें उदययोग्य १०८ (नियम १११)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	१०३	*	५क	१ख	क-आहारकद्विक मिश्र, सम्यक्, मनुष्यानु०
२	१०२	१	५	४ग	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

३	६८	५	५च	१	ख-मिथ्यात्व (शेष उदयायोग्य। ग-अन ४ घ-आ० २, मनुष्य-देवगत्यानु च-आ। २ छ-नरक-त्रिकतिर्यगानु उदयायोग्य
४	१००	६	२च	१३छ	
५	८७	१६	२	८	
६	८१	२७	०	५	
७	७६	३२	०	४	

(१७७) शुक्ललेश्यामें उदययोग्य १०६ (नियम ११२)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	१०३	*	६क	१ख	क-तीर्थंपञ्चक व मनुष्यगत्या-नुपूर्वी ख-मिथ्यात्व ग-अन ४ घआहारकद्विक, सम्यक्, तीर्थ० मनुष्यदेवगत्यानुपूर्वी च-तीर्थङ्कर छ-तीर्थङ्कर
२	१०२	१	६	४ग	
३	६८	५	६घ	१	
४	१००	६	३च	१३छ	
५	८७	१६	३	८	
६	८१	२७	१ज	५	
७	७६	३२	१	४	
८	७२	३६	१	६	
६	६६	४२	१	६	
१०	६०	४८	१	१	
११	५६	४६	१	२	
१२	५७	५१	१	१६	
१३	४२	६७	०	*(३०)	

(१७८) अलेश्यामें उदययोग्य १२ गुणस्थान म४वाँ

(१७६) भव्यत्वमें ओघवत् उदय रचना

(१८०) अभव्यत्वमें उदययोग्य ११७ (नियम ११४) गुणस्थान पहिला।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१८१) उपशमसम्यक्त्वमें द्वितीयोपशम सम्यक्त्वमें उदययोग्य ७८ (नियम ९३)

गुण.	उद०	निवृ०	अनु	उदव्यु	विशेष विवरण
४	१००	*	०	१४क	क-नरकतिर्यग्मनुष्यगत्यानुपूर्वी उदयायोग्य
५	८६	१४	०	८	ख-आहारकद्विक उदयायोग्य
६	७८	२२	०	३ख	ग-घ-सम्यक्प्रकृति उदय योग्य होने से शेष ३
७	७५	२५	०	३ग	
८	७२	२८	०	६	
९	६६	३४	०	६	
१०	६०	४०	०	१	
११	५९	४१	०	*(२)	

(१८२) प्रथमोपशम सम्यक्त्वमें उदययोग्य ९९ क

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
४	९९	०	०	१३	क देवगत्यानुपूर्वी भी उदयके अयोग्य है
५	८६	१३	०	८	
६	७८	२१	०	३	
७	७५	२४	०	*(३	

(१८३) क्षायोपशमिक सम्यक्त्वमें उदययोग्य १०६ (नियम ११६)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
४	१०४	*	२क	१७	क-आहारकद्विक
५	८७	१७	२	८	
६	८१	२५	०	५	
७	७६	३०	०	*(४)	

(१८४) क्षायिक सम्यक्त्वमें उदययोग्य १०६ (नियम ११७)

गुण.	उद०	निवृ०	अनु०	उद०व्यु	विशेष विवरण
४	१०३	*	३क	२०ख	क-आहारकद्विक, तीर्थंकर

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

५	८३	२०	३	५ग	ख-तिर्यग्गति उद्योत तिर्यंगति मिलाकर ।
६	८०	२५	१	४	ग-तिर्यग् यु उद्योत तिर्यग्गतिकी व्युच्छित्ति ४ के गुणस्थानमें होने से ३ कम की गई ।
७	७५	३०	१	३घ	घ-सम्यक्प्रकृति क्षय हो चुकी थी सो उदययोग्य होनेसे कम हुई
८	७२	३३	१	६	
९	६६	३९	१	५	
१०	६०	४५	१	१	
११	५९	४६	१	२	
१२	५७	४८	१	१६	
१३	४२	६४	०	३०	
१४	१२	९४	०	१२	

(१८५) मिथ्यात्वमें उदययोग्य ११७ गुणस्थान पहिला

(१८६) सासादनमें उदययोग्य १११ गुणस्थान दूसरा

(१८७) मिश्र, सम्यक्त्वमें उदययोग्य १०० गुणस्थान तीसरा

१८८) संज्ञीमें उदययोग्य ११३ (नियम ११९)

गुण	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	१०९	*	४क	२ख	क-आहारकद्विक मिश्र सम्यक्-प्रकृति
२	१०७	२	५ग	४	ख-मिथ्यात्व
३	१००	६	७घ	१	ग-आहारकद्विक मिश्र, सम्यक् प्रकृति, नरकगत्यानुपूर्वी
४	१०४	७	२	१७	घ-आहारकद्विक, सम्यक्प्रकृति आनुपूर्वी ४
५	८७	२४	२	८	
६	८६	३२	०	५	
७	७६	३७	०	४	
८	७२	४१	०	६	
९	६६	४७	०	१	
१०	६०	५३	०	६	
११	५९	५४	०	२	
१२	५७	५६	०	*(६१)	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१८६) असंज्ञीमें उदययोग्य ६१ (नियम १२०)

गुण.	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१	६१	❋	०	१३	क-स्थानत्रिक,परघात,उद्योत, उच्छ्वास,दुःस्वरग्र गा० मिथ्याकर
२	७८	१३	०	❋(६)	

(१९०) अनुभय (न संज्ञी न असंज्ञी) में उदययोग्य ४२

गुण	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु	विशेष विवरण
१३	४२	❋	०	३०	
१४	१२	३०	०	१२	

(१९१) आहारकमें ददययोग्य ११८ (नियम १२१)

गुण	उदय	निवृ.	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	११३	❋	५क	५	क-तीर्थपञ्चक ख-तीर्थंकर,
२	१०८	५	५	६	आहारकद्विक सम्यक्प्रकृति
३	१००	१४	४ख	१	ग-तीर्थंकर, आहारकद्विक
४	१००	१५	३ग	१३घ	घ-आनुपूर्वी ४ उदाययोग्य
५	८७	२८	३	८	होने से १७ में ४ कम हुए
६	८१	३६	१च	५	च-तीर्थङ्कर
७	७६	४१	१	४	
८	७२	४५	१	६	
९	६६	५१	१	६	
१०	६०	५७	१	१	
११	५९	५८	१	२	
१२	५७	६०	१	१६	
१३	४२	७६	०	❋(३०)	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

(१६२) अनाहारकमें उदययोग्य ८६ (नियम १२२)

गुण.	उदय	निवृ०	अनु०	उदव्यु.	विशेष विवरण
१	८७	❋	२क	३ख	क-ती० ख-मिथ्या० सू० अप० ग-ती०स नरकत्रिक घ-स्त्रीवेद मिलाकर च-ती० । छ-१५+७+०+१+६+५+१+०+६१=५१ ज-वज्र,स्वाद्विक गमद्विक, स० ६, उप ३, प्रश० उदययोग्य ।
२	८१	३	५ग	१ घ	
४	७५	१३	१च	५१छ	
१३	२५	६४	०	१३ज	
१४	१२	७७	०	१२	

(१६३) सामान्य (ओघ) सत्त्वत्रिभङ्गी सत्त्वयोग्य १४८

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असत्त्व	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४८	❋	०	०	क-सी अ २ ख-ती० ग-नरकायु घ-तिर्यगायु । च-अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ,मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति का क्षय भी सम्भव (नि० १२६) छ-क्षपक श्रेणी जो चढ़ेगा उस के जन्मसे ही नरक, तिर्यंच देव उदयकी सत्ता नहीं रहती न कीजा सकती उन तीनमें दो की सत्त्व कुच्छित्ति ४के ५वें गुणस्थानमें कहीं शेष देवायु व सम्यक्तव घ तक ७ प्रकृतियाँ यों ८ है । ज-नरकतिर्यग्देवायु व सम्यक्तव घातक ७ प्रकृतियाँ यों १० झ-विरियतिरिक्खदु आदि ट-अप्रत्या० प्रत्या० ८ ठ-नपुसकवेद ड-स्त्रीवेद ढ-नोकषाय ६ त-पुरुषवेद
२	१४५	०	३क	०	
३	१४७	०	१ख	०	
४	१४८	०	०	१ग	
५	१४७	१	०	१घ	
६	१४६	२	०	०	
७स्व.	१४६	२	०	०च,७	
८उ	१४६	२	०	०	
	१४२	६	०	०	
	१३९	९	०	०	
९उ.	१४६	२	०	०	
	१४२	६	०	०	
	१३९	९	०	०	
१०उ.	१४६	२	०	०	
	१४२	६	०	०	
	१३९	९	०	०	
११	१४६	२	०	०	
	१४२	६	०	०	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

	१३९	९	०	०	थ-संज्वलन क्रोध
७सा.	१४६	२	०	८छ	द-सज्वलन मान
८क्ष	१३८	१०	०	०	घ-सज्वलन माया
९/१क्ष.	१३८	१०ज	०	१६झ	न-सज्वलन लोभ
९/२क्ष.	१२२	२६	०	८ट	
९/३क्ष.	११४	३४	०	१ठ	
९/४क्ष.	११३	३५	०	१ड	
९/५क्ष.	११२	३६	०	६ढ	
९/६क्ष.	१०६	४२	०	१त	
९/७क्ष	१०५	४३	०	१थ	
९/८क्ष.	१०४	४४	०	१द	
९/९क्ष.	१०३	४५	०	१घ	
१०क्ष	१०२	४६	०	१न	
१२	१०१	४७	०	१६	
१३	८५	६३	०	०	
१४/१	८५	६३	०	७२	
१४/२	१३	१३५	०	१३	

(१९४) प्रथम द्वितीय तृतीय नरकमें सत्त्वयोग्य १४७ (नि० १२८)

गुण.	सत्त्व	निवृ.	असत्त्व०	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४७	❋	०	०	क-आहारकद्विक तीर्थंकर
२	१४४	०	३क	०	ख-आहारकद्विक
३	१४६	०	१ख	०	
४	१४७	०	०	०	

(१९५) चौथे पाँचवे नरकमें सत्त्वयोग्य १४६ (नियम १२९)

गुण.	सत्त्व	नि वृ.	असत्त्व०	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४६	❋	०	०	क-आहारकद्विक ।
२	१४४	०	२क	०	
३	१४६	०	०	०	
४	१४६	०	०	०	

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१९६) सातवें नरकमें सत्त्वयोग्य १४५ (नियम १३०)

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असo	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४५	❋	०	०	क-आहारकद्विक
२	१४३	०	२क	०	
३	१४५	०	०	०	
४	१४५	०	०	०	

(१९७) सामान्य, पञ्चेन्द्रिय, पर्याप्त योनिमती तिर्यञ्चमें सत्त्व-योग्य १४७ (नियम १३१)

गुण.	सत्त्व	निवृ.	असo	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४७	❋	०	०	क-आहारकद्विक
२	१४५	०	२क	०	ख-नरक मनुष्य आयु
३	१४७	०	०	०	(तिर्यञ्चके मनुष्यायु भी बंध
४	१४७	०	०	२ख	जाय तो पांचवां गुणस्थान
५	१४५	२	०	❋	नहीं होता)

(१९८) लब्ध्यपर्याप्त तिर्यञ्चमें सत्त्वयोग्य १४५ (नियम १३२) गुणस्थान पहिला

(१९९) सामान्य पर्याप्त, मनुष्यमें सत्त्वयोग्य १४८ रचना ओघवत् गुणस्थान १ से १४ तक

(२००) भावस्त्रीवेदी क्षपकश्रेणिवाले मनुष्योंमें सत्त्वयोग्य १३७ क

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असo	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
८	१३७	❋	०	०	क-अनन्तानुबन्धी ४, दर्शनमोह
९/१	१३७	०	०	१६	३ नरकायु देवायु, तिर्यगायु व
९/२	१२१	१६	०	८	तीर्थङ्कर प्रकृति सत्त्वके अयोग्य
९/३	११३	२४	०	१	है।
९/४	११२	२५	०	१	
९/५	१११	२६	०	६	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

६/६	१०५	३२	०	१	
६/७	१०४	३३	०	१	
६/८	१०३	३४	०	१	
६/९	१०२	३५	०	१	
१०	१०१	३६	०	१	
१२	१००	३७	०	१६	
१३	८४	५३	०	०	
१४/१	८४	५३	०	७२	
१४/२	१२	१२५	०	१२	

(२०१) लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्यमें सत्त्वयोग्य १४५ (नियम १३२) गुणस्थान पहिला

(२०२) भवनत्रिकोंमें व कल्पवासिनी देवियोंमें सत्त्वयोग्य १४६ (नियम १३५)

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असo	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४६	❋	०	०	क-आहारकद्विक,
२	१४४	०	२क	०	
३	१४६	०	०	०	
४	१४६	०	०	०	

(२०३) प्रथम स्वर्गसे बारहवें स्वर्ग तकके देवोंमें सत्त्वयोग्य १४७ (नियम १३३)

गुण	सत्त्व	निवृ.	असo	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४६	❋	१क	०	क-तीर्थंकर
२	१४४	०	३ख	०	ख-तीर्थंकर, आहारकद्विक,
३	१४६	०	१	०	
४	१४७	०	०	०	

(२०४) १३वें स्वर्गसे नवग्रैवेयक तकके देवोंमें सत्त्वयोग्य १४६

Report any errors at vikasnd@gmail.com

 http://www.jainkosh.org

(नियम १३४)

गुण	सत्त्व	निवृ	असο	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४५	*	१क	०	क-तीर्थंकर
२	१४३	२	३ख	०	ख-तीर्थंकर आहारकद्विक २
३	१४५	०	१ग	०	ग-तीर्थंकर
४	१४६	०	०	०	

(२०५) नव अनुदिश व पंच अनुत्तरके देवोंमें सत्त्वयोग्य १४६ (नियम १३४)

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असο	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
४	१४६	*	०	०	

(२०६) एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रियमें सत्त्वयोग्य १४५ (नियम १३६)

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असο	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४५	*	०	०	क-आहारकद्विक
२	१४३	०	२क	०	

(२०७) पञ्चेन्द्रियमें सत्त्वयोग्य १४८ रचना ओघवत् गुणस्थान सब

(२०८) पृथ्वीकाय, जलकाय, वनस्पतिकायमें सत्त्वयोग्य १४५ (नि० १३६)

गुण.	सत्त्व	निवृ.	असο	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४५	*	०	०	क-आहारकद्विक
२	१४३	०	२क	०	

(२०९) अग्निकाय, वायुकायमें सत्त्वयोग्य १४४ (नि० १३७) गुणस्थान पहिला

(२१०) त्रसकायमें सत्त्वयोग्य १४८ रचना ओघवत् गुणस्थान सब

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(२११) उद्वेलनावाले नरक तिर्यञ्च मनुष्य देव संक्लिष्ट दृष्टिमें सत्त्व १४५ (नियम १३८)

	सत्त्व	उद्वेलना	विशेष विवरण
←—स्वस्थानी—→	१४५	२क	क-आहारकद्विक ख-सम्यक्प्रकृति
	१४३	१ख	ग-मिश्रसम्यक्त्व
	१४२	१ग	
	१४१	०	

(२१२) उद्वेलनावाले एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पृथ्वीकाय, जलकाय. वनस्पतिकाय, मिथ्यादृष्टिमें सत्त्व १४५ (नियम १३०)

	सत्त्व	उद्वेलना	विशेष विवरण
उत्पन्नस्थानी मिथ्यादृष्टि	१४५	२क	क-अनाहारकद्विक, ख-सम्यक्प्रकृति
	१४३	१ख	ग-मिश्र सम्यक्त्व घ-स्वस्थानीके देवद्विक
	१४२	१ग	की उद्वे० च-स्वस्थानीके नरकचतुष्क
	१४१	२ग	छ-उच्चगोत्र ज-मनुष्यायुका सत्त्व न होनेसे
			झ-मनुष्यद्विक
स्वस्थानी मिथ्यादृष्टि	१३९	४च	
	१३५	१छ	
	१३३ज	२झ	
	१३१	०	

(२१३) उद्वेलनावाले अग्निकाय व वायुकाय मिथ्यादृष्टिमें सत्त्व १४४ (नियम १४०)

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

	सत्त्व	उद्वेलना	विशेष विवरण
उत्पन्नस्थानी मिथ्यादृष्टि	१४४	२क	क-आहारकद्विक ख-सम्यक् प्रकृति ग-मिश्र सम्यक्त्व घ-स्वस्थानी के देवद्विक च-स्वस्थानी के नरकचतुष्क छ उच्चगोत्र स्वस्थानी के लिये उद्वे० ज-मनुष्यद्विक
	१४२	१ख	
	१४१	१ग	
	१४०	२घ	
	१३८	४च	
	१३४	१छ	
	१३३	२ज	
	१३१	०	
स्वस्थानी मिथ्यादृष्टि			

(२१४) सत्य मनोयोग, अनुभय मनोयोग व सत्य वचनयोग, अनुभय वचनयोग व औदारिक काययोगमें सत्त्वयोग्य १४८ रचना ओघवत्, गुणस्थान १ से १२ तक।

(२१५) असत्य मनोयोग, उभय, मनोयोग, असत्य वचनयोग, उभय वचनयोगमें सत्त्वयोग्य १४८ रचना ओघवत् गुणस्थान १ से १२ तक।

(२१६) औदारिक मिश्र काययोग १४६ (नियम १४४)

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असं०	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४५	*	१क	०	क-तीर्थं। ख-ती० आ० २। ग-नरकायु व देवायु सत्त्वके अयोग्य, शेष चौथे से बारहवे गुणस्थान तकको सत्त्वव्यु० ६१
२	१४३	०	३ख	०	
४	१४६	०	०	६१ग	
१३	८५	६१	०	*	

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(२१७) वैक्रियक काययोगमें सत्त्वयोग्य १४८

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असं०	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४८	❋	०	०	क-ती० आहारक
२	१४५	०	३क	०	ख-तीर्थंकर
३	१४७	०	१ख	०	
४	१४८	०	०	❋	

(२१८) वैक्रियक मिश्रकाययोगमें सत्त्वयोग्य १४६ (नियम १४५)

गुण.	सत्त्व	निवृ.	असं०	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४६	❋	०	०	क-तीर्थंकर, अनहारकद्विक
२	१४३	०	३क	०	
३	१४६	०	०	०	

(२१९) आहारक काययोग व आहारक मिश्रकाययोगमें सत्त्वयोग्य १४६ (नियम १४६) गुणस्थान सिर्फ छटवाँ

(२२०) काम विकायमें सत्त्वयोग्य १४८

गुण.	सत्त्व	निवृ.	असं०	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४८	❋	०	०	क-ती० आहा० २, नरकायु
२	१४४	०	४क	०	ख-चौथे गुणस्थानसे बारहवें गुण
४	१४८	०	०	६३ख	स्थान तककी व्युच्छिन्न ६३
१३	८५	६३	०	❋	

(२२१) अयोगमें सत्त्वयोग्य ८५

गुण.	सत्त्व	निवृ०	असं०	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१४/१	८५	❋	०	७२	
१४/२	१३	७२	०	१३	

(२२२) पुरुषवेदमें सत्त्वयोग्य १४८ रचना ओघवत् गुणस्थान ९/६ तक, संज्ञामात्रसे गुणस्थान १४। पुरुषवेदका ९वें गुणस्थानमें क्षय होने पर

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

पुरुषवेदी के संज्ञा मात्रसे १४ गुणस्थान कहे रचना ओघवत् ।

(२२३) स्त्रीवेद व नपुसंकवेदमें १४८, सत्त्वयोग्य रचना ओघवत्, गुणस्थान क्रमशः ९/३ व ९/४ तक । संज्ञामात्र से गुणस्थान सब । वेदका ९वें गुणस्थानमें क्षय होने पर भी स्त्रीवेदी नपुसंकवेदी के संज्ञामात्रसे १४ गुणस्थान कहे । इस रचना में क्षपकश्रेणीमें तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता नहीं, अतः क्षपकमें अपूर्वकरण से ही सत्त्व एक एक और कम करते जाना (नि० १४७) ।

(२२४) अपगतवेद उपशमश्रेणिमें उपशम सम्यत्त्वमें सत्त्वयोग्य १४१ गुणस्थान ९ से ११ तक ।

(२२५) अपगतवेद उपशमश्रेणिमें क्षायिक सम्यक्तवमें सत्त्वयोग्य १३९ गुणस्थान ९ से ११ तक ।

(२२६) अपगतवेद क्षपक श्रेणिमें सत्त्वयोग्य १०५ क

गुण	सत्त्व	निवृ.	असं०	स०व्यु.	विशेष विवरण
९/७	१०५	❀	०	१ख	क-तिर्यगायु + देवायु + नरकायु + सम्यक्त्वघातक ७ + १६ + ८ + १ + १ + ६ + पुरुषवेद = ४३ सत्त्वके अयोग्य ।
९/८	१०४	१	०	१ग	
९/९	१०३	२	०	१घ	
१०	१०२	३	०	१च	
१२	१०१	४	०	१६	ख-संज्वलन क्रोध
१३	८५	२०	०	०	ग-संज्वलन मान
१४/१	८५	२०	०	७२	घ-संज्वलन माया
१४/२	१३	९२	०	१३	च-संज्वलन लोभ

(२२७) क्रोध, मान, माया, कषायमें सत्त्वयोग्य १४८ रचना ओघवत्, गुणस्थान १ से ९ तक क्रमशः ९/७, ९/८ ९/९ तक ।

(२२८) लोभ कषायमें सत्त्वयोग्य १४८, रचना ओघवत् गुणस्थान १ से १० तक ।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(२२९) अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया लोभमें सत्त्वयोग्य १४८

गुण.	सत्त्व	निवृ.	असo	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
१	१४८	❋	०	०	क-तीर्थंकर, आहारकद्विक
२	१४५	०	३क	०	

(२३०) अनन्तानुबन्धी रहित मिथ्यात्वमें सत्त्वयोग्य १४३ (नियम १४८) गुणस्थान पहिला।

(२३१) अनन्तानुबन्धीके उदयरहित अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभमें सत्त्वयोग्य १४८

गुण.	सत्त्व	निवृ.	असo	सत्त्वव्यु	विशेष विवरण
२	१४५	❋	३क	०	क-तीर्थङ्कर आहारकद्विक
३	१४८	०	०	❋	

(२३२) अनन्तानुबन्धी व अप्रत्याख्यानावरणके उदयरहित प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभमें सत्त्वयोग्य १४७ (नरकायु सत्त्वके अयोग्य) गुणस्थान सिर्फ पांचवा।

(२३३) अनन्तानुबन्धी अप्रत्याख्यानावरणके प्रत्याख्यानावरणके उदय रहित संज्वलन क्रोध, मान, मायामें सत्त्वयोग्य १४६ (नरकायु तिर्यगायु सत्त्वके अयोग्य) रचना ओघवत् गुणस्थान छठे से ९वें तक (क्रमश: ९/७, ९/८, ९/९ तक)।

(२३४) अनन्तानुबन्धी अप्रत्याख्यानावरण प्रत्याख्यानावरणके उदय रहित सज्वलन लोभमें सत्त्वयोग्य १४६ (नरकायु तिर्यगायु सत्त्वके अयोग्य) रचना ओघवत् गुणस्थान छठे से १० वें तक।

(२३५) हास्यादिषट्क के उदयवाले में सत्त्वयोग्य १४८ रचना ओघ वत् गुणस्थान १ से ८ तक।

Report any errors at vikasnd@gmail.com